विज्ञापन



आर्यावर्त अर्थात् सारे हिन्दुस्तान में सर्ववैद्य महाशय लोग बहुधा इसी मदनपालविरचित निघण्टु को अपने छोटे-छोटे प्रिय बालकों व अन्य बालकों को पढ़ाते हैं, परन्तु इसकी टीकाएँ मूल से भी अधिकतर कठिन देख पड़ती हैं, क्योंकि समस्त औषधों के नाम व गुण संस्कृत के पदों में रचे गये हैं। यद्यपि भाषाकारों ने जो भाषा भी बनाई हैं, वे देवभाषा के पदों से गुम्फित हैं, इसमें पढ़ने व पढ़ानेवालों का समय व्यर्थ बीत जाता है, परन्तु औषधों का यथार्थ बोध नहीं देख पड़ता है। इसलिए मैंने कठिन परिश्रम से अमरकोष, मेदिनी, अनेकार्थमञ्जरी, भावप्रकाश और राजनिघण्टु आदि अनेक ग्रन्थों का आशय लेकर इस मदनपालनिघण्टु को हिन्दी पदों से ही निर्माण किया है। आशा है कि सर्व महाशय लोग अवश्य ही इस पुस्तक को स्वीकार करेंगे।

अहो सर्वमहाशय, वैद्यलोगो! विलम्ब न करिये अवश्य ही मदनपाल-निघण्टु को खरीदकर अलभ्य लाभ उठाइये। इस नवीन भाषा से बिना गुरु के भी बालकों, विद्यारसिकों व केवल भाषाविदों को भी सहायता मिल सकती है और सज्जन विद्वज्जन महाशयों के निकट निवेदन यह है कि जहाँ कहीं अशुद्ध देखें वहाँ कृपा कर शोध लेवें, क्योंकि जो लिखता-पढ़ता है उसी को मोह होता है। इसका श्रम गुणज्ञाता लोग ही जानेंगे और दया कर अङ्गीकार करेंगे। अग्रे किमधिकं बहुज्ञेष्विति शिवम्—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

इति विज्ञापयामि—

श्रीसुकुल शक्तिधरशर्मा.
प्रधान संशोधक
नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ.

भूमिका



मृत्युलोक में जीवन को सुखी बनाने के लिए सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक जितनी भी विद्याओं का आविष्कार हुआ है, उनमें आयुर्वेद का स्थान निस्सन्देह सबसे ऊँचा है। शरीर की परिभाषा लिखते हुए कहा गया है कि—"शरीरं व्याधिमन्दिरम्", शरीर बीमारियों का घर है। शरीर की बनावट, नाड़ियों की गति, रुधिर का वेग इत्यादि सब बातें राजा हो या रंक, विद्वान हो या अपढ़, काला हो या गोरा, मोटा हो या दुबला, सबमें एक-सी हो होती हैं। जो बीमारी ग़रीब से ग़रीब को दबाकर चूस डालती है, वही समय पर बड़े-बड़े राजाओं को क्षण भर के भीतर ही खा जाती है। मालूम नहीं शरीर के किस भाग में किस समय कौन सा रोग पैदा होकर जीवन को भार-रूप बना दे।

शरीर तो एक मशीन है। इसमें हज़ारों छोटे-बड़े पुर्जे काम कर रहे हैं, यदि एक भी पुर्जा जरा भी बिगड़ गया तो कुल मशीन बेकार हो जाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि कुछ ऐसी वस्तुएँ खोजकर निकाली जायँ, जिनके प्रयोग से शरीर का प्रत्येक बिगड़ा हुआ पुर्जा जल्दी से जल्दी अपनी जगह पर ठीक काम करने लगे।

आयुर्वेद उस शास्त्र का नाम है, जिसमें संसार के समस्त रोगों के नाम, उत्पत्ति, निदान के साथ-साथ उन सब प्राकृतिक पदार्थों के नाम, गुण, सेवनविधि इत्यादि का विवेचन किया गया हो, जिनके यथावत् प्रयोग से शरीर नीरोग तथा सुखी रह सकता है। आयुर्वेद में हज़ारों प्रकार की बूटियों तथा फल-फूलों का वर्णन है। बहुत सी ऐसी ओषधियाँ हैं, जिनका जल्दी पता-ठिकाना ही नहीं लगता। बात यह है कि बहुधा एक-एक वस्तु के अनेक नाम होते हैं, और जिस वस्तु का जो नाम जिस स्थान पर प्रचलित होता है वह उसी नाम से वहाँ पर मिल सकती है।

निघण्टु शास्त्र आयुर्वेद का बड़ा महत्त्वपूर्ण अंग है। इसमें प्रत्येक जड़ी, बूटी, फल, फूल आदि के देशकाल के अनुसार गुण, पहिचान तथा उपयोग का विस्तार से वर्णन होता है। प्राचीन समय में जब आयुर्वेद-

विद्या का पूर्ण प्रचार था, उस समय चिकित्सक बनने के इच्छुक विद्यार्थी वर्षों तक ऋषि-मुनियों के साथ वनों में रहकर प्रत्येक औषधि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करते थे। आजकल तो बहुत से लोग आयुर्वेद-शास्त्र के किसी अंग का ज्ञान किये बिना ही आयुर्वेद-विद्या-वारिधि, वैद्यकुलपंचानन, आयुर्वेद-मार्तण्ड जैसी भीमकाय उपाधियों को अपने नाम के इधर-उधर जोड़कर चिकित्सा का कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। ऐसी दशा में यदि आयुर्वेद-विद्या धीरे-धीरे क्षीण होकर लुप्त हो जाय तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं।

निघण्टु का अध्ययन किये बिना आयुर्वेद-विद्या का ज्ञान कभी पूर्ण हो ही नहीं सकता। जिस पुरुष को यह नहीं मालूम कि धात्रीफल क्या होता है, कहाँ मिल सकता है, उससे यह कहना कि 'धात्रीफल के सेवन से [illegible]यु बढ़ती है, शरीर पुष्ट होता है तथा रक्तपित्त के विकार नष्ट हो जाते हैं' केवल भैंस के सामने बीन बजाने के सदृश होगा। इसलिए आवश्यक है कि वैद्य पहले निघण्टु शास्त्र द्वारा यह जान ले कि धात्रीफल आँवले को कहते हैं। निघण्टु शास्त्र कई प्रकार के प्रचलित हैं; परन्तु उन सबमें महाराज मदनपालविरचित यह निघण्टु बड़ा उपयोगी तथा सर्वांगपूर्ण है। अनेक प्रकार के निघण्टु रहते हुए भी महाराज मदनपाल ने यह ग्रंथ क्यों लिखा, इसके विषय में वे स्वयं कहते हैं—

केचित्सन्ति निघण्टवोऽतिलघवः केचिन्महान्तः परे
केचिद्दुर्गमनामकाः कतिपये भावाः स्वभावोच्छ्रिताः।
तस्मान्नातिलघुर्न चातिविपुलः ख्यातादिनामा मतां
प्रीत्यै द्रव्यगुणान्वितोऽयमधुना ग्रन्थो मया बध्यते॥

"अर्थात् कोई निघण्टु बहुत ही छोटे हैं, कोई अति विशाल हैं, कोई अत्यन्त कठिन हैं, कोई समझ में नहीं आते। इसलिए आवश्यकतानुसार न बड़ा, न छोटा तथा द्रव्यगुणों से सम्पन्न इस ग्रन्थ को मैं बनाता हूँ।" महाराज मदनपाल का निघण्टु संस्कृतश्लोकों में है, इसलिए जो सज्जन संस्कृत नहीं जानते, वे इस अमूल्य ग्रन्थ के रत्नों से सर्वदा वंचित ही रहते हैं। अतएव सर्वसाधारण के लाभार्थ श्रीनवलकिशोर-प्रेस के मालिक ने निघण्टु का सरल भाषानुवाद पं॰ शक्तिधरजी सुकुल से

करवा कर प्रकाशित किया था। इस पुस्तक में केवल प्रचलित सरल हिन्दी में ही वस्तुओं के नाम, गुण, पहचान तथा उपयोग आदि का वर्णन है। मूल श्लोक नहीं दिये गये, क्योंकि उनके लिखने से केवल हिंदी-भाषा जाननेवालों को कठिनता होती। इसमें संदेह नहीं कि प्रेस के मालिक ने हज़ारों रुपये के व्यय से इस अमूल्य ग्रन्थ का भाषानुवाद प्रकाशित कर जनता का बड़ा भारी उपकार किया है। इस प्रेस में अनेक प्राचीन उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है, और वे सब ग्रन्थ प्रेस के जन्मदाता श्रीमुंशी नवलकिशोरजी के धवल यश की चारु चंद्रिका को चतुर्दिक् प्रसारित कर रहे हैं।

मदनपालकृत निघण्टु का भाषानुवाद कई जगह प्रकाशित हो चुका है परन्तु इस संस्करण में प्रेस के वर्तमान अध्यक्ष श्रीविष्णुनारायण भार्गव की आज्ञा के अनुसार परम उपयोगी अनेक परिवर्तन कर दिये गये हैं। प्रारम्भ में ओषधियों की अकारादि क्रम से सूची लगा दी गई है। पुस्तक में प्रत्येक जड़ी-बूटी का वर्णन पृथक्-पृथक् कर दिया है। दो या अधिक अर्थवाले शब्द भी क्रम से लगा दिये हैं। कठिन तथा अप्रचलित आयुर्वेदिक शब्दों का एक छोटा सा कोष सरल भाषा में विस्तार से दे दिया है। इससे पाठकों को बड़ी सुविधा होगी। पुस्तक की उपयोगिता भी बढ़ गई है। पुस्तक की भाषा तथा भाव में जहाँ त्रुटि रह गई थी, वहाँ शुद्ध सरल हिन्दी में स्पष्ट कर दिया है। आशा है, जनसमुदाय इस ग्रन्थ को पहले से भी अधिक अपनावेगा।

निवेदक

मैनेजर—(राजा) रामकुमार, बुकडिपो,

हज़रतगंज, लखनऊ

मदनपालनिघण्टु की

विषयानुक्रमणिका

इति

शब्दार्थ-कोष

या

शब्दार्थ-ज्ञान

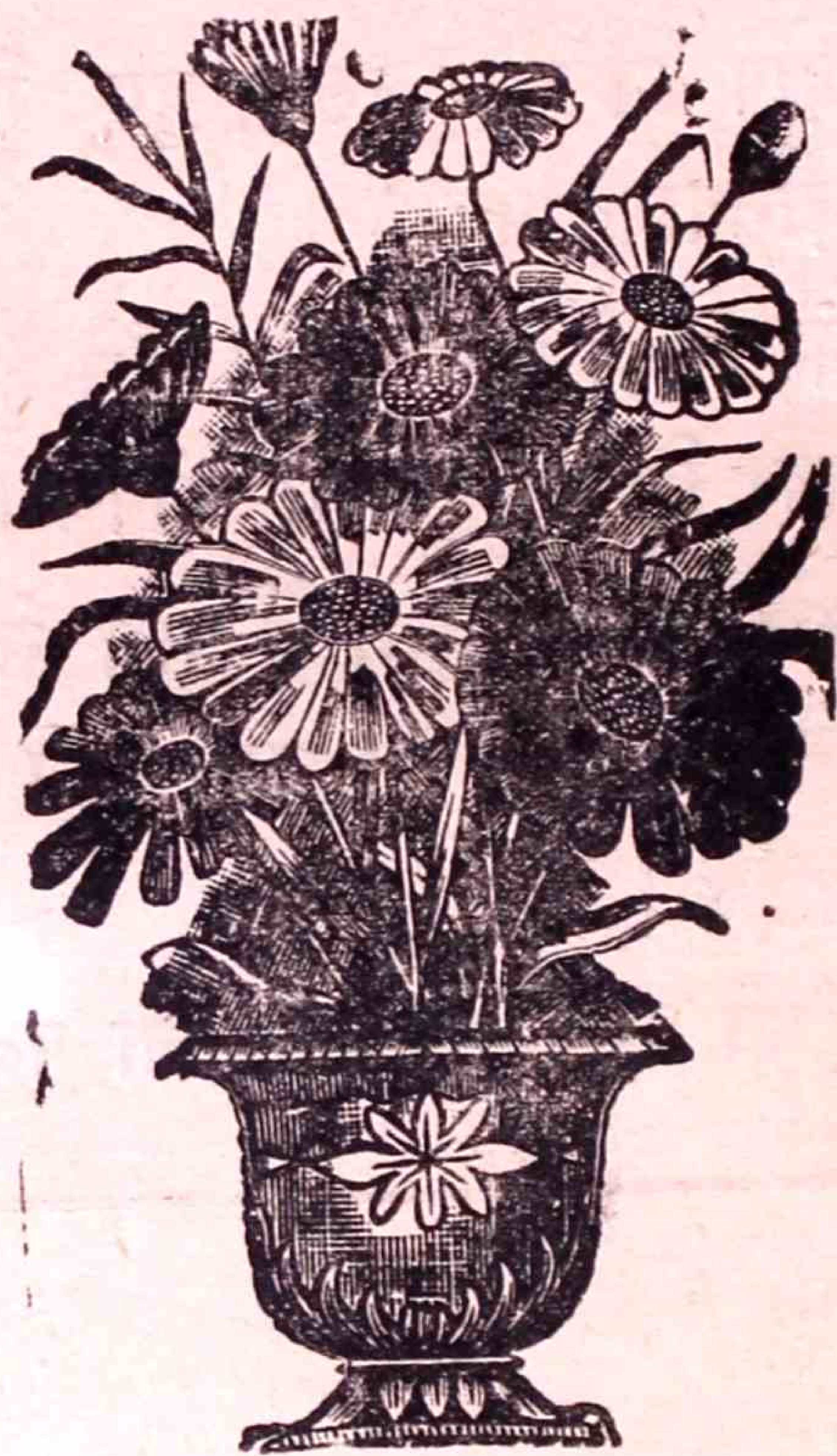
यद्यपि यह ग्रंथ अत्यन्त सरल भाषा में लिखा गया है तो भी कहीं-कहीं विवश होकर टीका को सुन्दर तथा सूक्ष्म बनाने के लिए कुछ ऐसे शब्दों के प्रयोग किये गये हैं, जो वैद्यक ग्रंथों में अधिकता से मिलते हैं, पर जिनका ठीक भाव समझना कठिन होता है। यथासम्भव ऐसे शब्दों को ढूँढकर एक कोष नीचे दिया जाता है। इससे सहृदय पाठकों की एक बड़ी कठिनाई दूर होगी और पुस्तक की बड़ी भारी कमी पूरी हो जायगी।

शब्द	आयुर्वेदिक अर्थ
अनुलोमन=	वातादिक दोषों का नाश करनेवाला, बँधे हुए मल को नीचे के मलद्वारों से निकालनेवाली औषध।
अभिष्यंदी=	गाढ़ी, भारी तथा शरीर को जकड़नेवाली औषध।
कान्तिकारक=	शरीर के रसों को पुष्ट कर खून की वृद्धि द्वारा शरीर को सुन्दर बनानेवाली औषध।
क्लेदी=	गीला करनेवाला द्रव्य।
ग्राही=	अग्निवर्द्धक तथा मलों को सुखानेवाला पदार्थ।
छेदन=	बँधे हुए कफ आदि दोषों को फोड़ कर अलग-अलग करनेवाला पदार्थ।
जीवन=	आयुवर्द्धक।
दीपन=	अग्निवर्द्धक, परन्तु पाचक न हो, ऐसी औषधि।
दीपन, पाचन=	अग्नि को बढ़ानेवाला तथा रस को पचानेवाला द्रव्य।

शब्द	आयुर्वैदिक अर्थ
धातुवर्द्धक=	वीर्य को बढ़ानेवाली तथा शारीरिक रसों को पुष्ट करनेवाली औषध।
त्रिदोष=	वात, पित्त और कफ के विकार को कहते हैं।
पाचन=	रस को पचानेवाली औषध।
पिच्छिल=	चिपचिपा, लिबलिबा या गाढ़ा द्रव्य।
पौष्टिक=	शरीर को बलवान् बनानेवाली औषध।
प्रमाथी=	मुख, नासिका, कंठ इत्यादि स्थानों से कफ आदि दोषों को दूर करनेवाली वस्तु।
प्रमादी=	तमागुणी द्रव्य, जो आलस्य उत्पन्न करे।
बृंहण=	मांस को पुष्ट कर शरीर को सुडौल बनानेवाला द्रव्य।
भेदन=	बँधे हुए या रुके हुए मल को बलपूर्वक तोड़कर मल-द्वार से निकालनेवाला द्रव्य।
मदकारी=	बुद्धि को नष्ट करनेवाला पदार्थ।
मूत्रल=	मूत्र को अधिक उत्पन्न करनेवाला पदार्थ।
वामक=	वमन अर्थात् उल्टी या कय के द्वारा पित्त और कफ को मुख से निकालनेवाली औषध।
बाजीकरण=	वीर्यवर्द्धक, पौष्टिक अर्थात् सम्भोगशक्ति बढ़ानेवाला पदार्थ।
वातल=	वायु को उत्पन्न करनेवाला पदार्थ।
विशद=	स्वच्छ, निर्मल पदार्थ या धातुओं को दोषरहित करने-वाली औषध।
विष्टम्भी=	भारी तथा पेट में अफरा उत्पन्न करनेवाला पदार्थ।
विकाशी=	धातु को बलहीन तथा शरीर के जोड़ों को कमजोर, शिथिल करनेवाला पदार्थ।
व्यवायी=	विना पचे हुए ही शरीर में व्याप्त होनेवाला, कामो-त्पादक तथा तमोगुणी पदार्थ।

शब्द	आयुर्वैदिक अर्थ
सारक=	दस्तावर पदार्थ ।
सान्द्र=	गाढ़ा, लिबलिबा पदार्थ ।
स्तम्भन=	पचने में हलका, किन्तु वायु को उत्पन्न करनेवाला, वीर्य तथा मल को रोकनेवाला पदार्थ ।
संस्रन=	कोठे में भरे हुए मल को बाहर फेकनेवाला पदार्थ ।
रसायन=	बुढ़ापे को और उत्पन्न हुए रोगों को नष्ट करके आयु बढ़ानेवाला पदार्थ ।
रेचन=	पके, विना पके अथवा रुँधे हुए मल को पतला करके बाहर निकालनेवाली औषध ।
योगवाही=	भिन्न-भिन्न वस्तुओं के योग से अथवा अनुपानभेद से अनेक रोगों में दी जानेवाली औषध ।
शुक्रल=	वीर्यवर्द्धक ।
हृद्य=	हृदय को बलवान् बनानेवाला पदार्थ ।

* इति *



मदनपालनिघण्टु

भाषानुवाद

पहला वर्ग

शान्तं शरण्यं सुखदं द्विपास्यं विद्याधरं विघ्नहरं विकास्यम् ।
स्वाभीष्टसिद्ध्यै सुधियामुपास्यं वन्दामहे तं विबुधैर्विलास्यम् ॥
नमस्कृत्य शिवं साम्बं शङ्करं लोकशङ्करम् ।
श्रीमन्मदनपालस्य निघण्टुं भाषया ब्रुवे ॥

हड़ की जातियाँ और गुण

हड़ सात प्रकार की होती है—जीवन्ती, पूतना, अमृता, विजया, अभया, रोहिणी और चेतकी।

१ जीवन्ती—जीवन में सहायता करनेवाली।

२ पूतना—मलों को दूर करके शरीर को पवित्र करनेवाली।

३ अमृता—अमृत के समान जीवन देनेवाली।

४ विजया—शरीर के रोगों को जीतनेवाली।

५ अभया—मनुष्यों को रोगों से अभय देनेवाली।

६ रोहिणी—शरीर को स्वस्थ करनेवाले अनेक गुण उत्पन्न करनेवाली।

७ चेतकी—शरीर के आलस्य को दूर करके चेतना-शक्ति देनेवाली।

सुवर्ण की सी कांतिवाली जीवन्ती होती है। जिसमें

छोटी गुठली हो, उसे पूतना समझना चाहिए। तीन दलों-वाली अमृता है। तूँबे के समान आकार की विजया, पाँच रेखावाली अभया और जो गोल हो उसे रोहिणी समझना।

सब रोगों में जीवन्ती हड़ लाभदायक है। लेप में पूतना हड़ हितकारक है। विरेचन में अमृता का उपयोग श्रेष्ठ है तथा विजया नाम की हड़ सभी रोगों को मिटाती है। नेत्रों की बीमारी में अभया, व्रण आदि में रोहिणी और विशेषकर चूर्ण के योग में चेतकी लेनी चाहिए।

हड़ चबाकर खाने से अग्नि को दीप्त करती है, पीसकर खाने से मल का शोधन करती है, पकाकर खाने से मल को बाँधती है और भुनी हुई हड़ पीसकर खाने से अन्न के दोषों को दूर करती है।

चैत-बैसाख में शहद के साथ, जेठ-असाढ़ में गुड़ के साथ, सावन-भादों में सेंधा नमक के साथ, क्वाँर-कातिक में शक्कर के साथ, अगहन-पूस में सोंठ के साथ और माघ-फागुन में पीपर के साथ खाने से शरीर के सब रोग दूर होते हैं।

हड़ के नाम और गुण

हड़ के २१ नाम हैं---शिवा, हरीतकी, पथ्या, चेतकी, विजया, जया, प्रपथ्या, प्रमथा, अमोघा, कायस्था, प्राणदा, अमृता, जीवनीया, हेमवती, पूतना, वृतना, अभया, वयस्था, नन्दिनी, श्रेयसी और रोहिणी।

इसमें मीठा, कसैला, खट्टा, कड़वा और तेज़, ये पाँच रस हैं। यह लवणरस से रहित, अतीव कसैली, रूखी, गरम, दीपिनी, शुद्धि को करती, पाक में स्वाद को

लाती और बुढ़ापे को मिटाती है। बुद्धि को बढ़ानेवाली और दस्तावर है। आयु को बढ़ाती, नयनों के लिए हितकारक, बलदायक और हलकी है। दमा, खाँसी, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, शोथ, जठररोग तथा क्रिमिरोग को दूर करती है। स्वर का बिगड़ जाना, संग्रहणी, क़ब्ज़, विषमज्वर, गोला, पेट का अफरा, फोड़ा, छर्दि, हिचकी, खाज और हौलदिली को खोती है। कामला, शूल, विबन्ध और तापतिल्ली को हरती है। इसका मीठा और खट्टा स्वाद वात को दूर करता है। कसैला स्वाद पित्त को हरता और कड़वा स्वाद कफ को नष्ट करता है।

आँवले के नाम और गुण

आँवले के पाँच नाम हैं—धात्रीफल, अमृतफल, आमलक, श्रीफल और शिव।

आँवले का फल आयु को बढ़ाता और विशेषकर रक्तपित्त को मिटाता है। इसका खट्टा स्वाद वायु को दबाता है। मिठास और ठण्ढापन पित्त को दूर करता है। रूखापन तथा कसैला स्वाद कफ को हरता है। इसमें हड़ से बढ़कर गुण नहीं हैं।

बहेड़ा के नाम और गुण

बहेड़ा के नव नाम हैं—विभीतक, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम, वासन्त, अक्ष, वृद्धजात, संवर्त और तिलपुष्पक।

यह पाक में स्वादिष्ठ और कसैला होने के कारण कफ तथा पित्त को हटाता है। खाने में गरम, लगाने में ठण्ढा और भेदी होने के कारण खाँसी को दूर करता है।

रूखा तथा आँखों के लिए हितकारक है। बालों को बढ़ाता है। इसकी मींगी नशा लाती है।

त्रिफला के नाम और गुण

हड़ तीन भाग, आँवला बारह भाग और बहेड़ा छः भाग, इसको वैद्यों ने त्रिफला कहा है। इसी को श्रेष्ठा तथा फलोत्तमा भी कहते हैं।

यह मीठे और ठण्ढेपन से पित्त को तथा रूखे और कसैलेपन से कफ को नष्ट करती है। कुष्ठरोग, प्रमेह, बवासीर, कफ और पित्त को दूर करती है। आँखों के लिए लाभदायक है। घाव को भरती है। दिल को ताक़त देती और आयु को बढ़ाती है।

भुइँआँवला के नाम और गुण

भुइँआँवला के पाँच नाम हैं—भूधात्री, बहुपत्री, अमृता, आमलकी और शिवा। यह वात को उत्पन्न करता है। कड़वा, कसैला, मीठा और ठण्ढा है। प्यास, खाँसी, रक्तपित्त, क्रिमि, पाण्डु और क्षत को नष्ट करता है।

पानीआँवला के नाम और गुण

पानीआँवला के पाँच नाम हैं—प्राचीना, आमलकी, प्राची, नागर और रक्तक। इसका पका हुआ फल पित्त तथा कफ को पैदा करता है और गरम तथा भारी होकर वायु को जीतता है।

वासा के नाम और गुण

वासा के दस नाम हैं—अरूषक, इणाववासा, वृषा, सिंहमखी, भिषक्, सिंहपर्णी, वृष, वासा, सिंहक और उत्पाटरूषक। इसे कहीं-कहीं अड़ूसा और रूसा भी कहते

हैं। यह वायु को उत्पन्न करता है, गला साफ़ करता है तथा कफ और रक्तपित्त को मिटाता है। दमा, खाँसी, ज्वर, छर्दि, प्रमेह, कुष्ठ और क्षय को दूर करता है।

गिलोय के नाम और गुण

गिलोय के तेरह नाम हैं—गुडूची, कुण्डली, छिन्ना, वयस्था, अमृतवल्लरी, छिन्नोद्भवा, छिन्नरुहा, अमृता, ज्वरविनाशिनी, वत्सादनी, चन्द्रहासा, जीवन्ती और चक्रलक्षणा।

यह कड़वी, हलकी, पकने पर स्वादिष्ठ और रसायनी है। मल को बाँधती है। कसैली, गरम और बल को बढ़ाती है। तीखी है। पेट की अग्नि को दीप्त करती है। कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, पित्त और क्रिमिरोग को हरती है। घी के साथ वायु को, गुड़ के साथ अफरा को, मिसरी के साथ पित्त को, शहद के साथ कफ को, रेंडी के तेल के साथ बड़े भारी वातरक्त को और सोंठ के साथ आमवात को मिटाती है।

बेल के नाम और गुण

बेल के नव नाम हैं—बिल्व, शलाटु, शैलूष, मालूर, सदाफल, लक्ष्मीफल, गन्धगर्भ, शाण्डिल्य और कण्टकी।

बेल का कच्चा फल मल को बाँधता है। कसैला, गरम तीक्ष्ण, दीपन, पाचन, हृदय के लिए हितकर, बलकारक हलका, चिकना और तीखा है। वात और कफ को दूर करता है। पक्का फल बल को बढ़ाता है। यह भारी, तीनों दोषों को उपजानेवाला, देर में पचनेवाला, वायु को सुगन्धित करनेवाला, विदाही, विष्टम्भकारी और मीठा है

अग्नि को मन्द करता है। बेल की गिरी संग्रहणी, कफ, वायु, आमवात और शूल में दी जाती है।

अरणी के नाम और गुण

अरणी के पाँच नाम हैं--अग्निमन्थ, मथ, केतु, अरणी और वैजयन्तिका। यह शोथ को दूर करती है। वीर्य में गरम होकर कफरोग तथा वायुरोग को नष्ट करती है।

पाटला तथा कृष्णपाटला के नाम और गुण

पाटला तथा श्याम पाटला के ग्यारह नाम—पाटला, कामदूती, कुम्भिका, कालवृन्तिका, स्वल्पमेधा, मधुदूती, ताम्रपुष्पा, अम्बुवासिनी, फलेरुहा, श्वेता और कृष्णपाटला।

यह अरुचि, सूजन, बवासीर, दमा और छर्दि को नष्ट करती है। बहुत गरम, कसैली और स्वादिष्ठ है। इसका फूल कफ, रक्त, पित्त, अतीसार और दाह की दवा है। इसका फल हिचकी तथा रक्तपित्त को दूर करता है।

कम्भारी के नाम और गुण

कम्भारी के नव नाम---काश्मरी, सर्वतोभद्रा, श्रीपर्णी, कृष्णवृन्तिका, कश्मारी, कश्मरी, हीरा, काश्मर्या और भद्रपर्णिका।

यह ज्वर और शूल को दूर करती है। गरम, मीठी और भारी है। इसका फूल वायु को उत्पन्न करता और मल को बाँधता है। रक्तपित्त और प्रदररोग को मिटाता है। इसका फल रसायन है। बालों को बढ़ाता है। शरीर को पुष्ट करता और वीर्य को बढ़ाता है। भारी होने के कारण वायु, पित्त, क्षयी, प्यास, रक्तविकार और मूत्र की रुकावट र करता है।

स्योनाक के नाम और गुण

स्योनाक के तेरह नाम—स्योनाक, पृथुशिम्बि, शुकनाश, कुटन्नट, भूतवृक्ष, कट्वङ्ग, टुएटुक, शल्लक, अरलु, मयूरजङ्घ, भल्लूक, प्रियजीव और कटम्भर।

यह दीपन, पचने के समय कड़वा, कसैला, ठंडा, मल को बाँधनेवाला और तीखा है। वायु, कफ, पित्त और खाँसी को मिटाता है। इसका कच्चा फल रूखा होता है। वायु और कफ को हरता तथा हौलदिल को दूर करता है। कसैला, मीठा, हलका, रोचक और दीपन है।

बृहत् पञ्चमूल के नाम और गुण

बेल, अरणी, पाटला, कम्भारी और स्योनाक, इन पाँचों के मिलाने से बृहत् 'पञ्चमूल' कहाता है। यह अग्नि को दीप्त करता है। हलका, गरम, तीखा और कसैला है। मेद, कफ, दमा और वायु को हरता है।

गोखरू के नाम और गुण

गोखरू के तेरह नाम—त्रिकण्टक, कण्टफल, गोक्षुर, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, भद्रयटक, त्रिकण्ट, व्यालदंष्ट्रक, श्वदंष्ट्रा, स्थूलशृङ्गाट, षडङ्ग, क्षुरक और त्रिक।

यह ठंडा और स्वादिष्ठ है। बल को बढ़ाता और बस्ति को शुद्ध करता है। प्रमेह, दमा, खाँसी, रक्तपित्त, पथरी, सूज़ाक और हौलदिल को हरता तथा वायु को दबाता है।

सरवन (शालपर्णी) के नाम और गुण

सरवन के दस नाम—शालपर्णी, ध्रुवा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीतनी, स्थिरा, विदारिगन्धा, अतिगुहा, दीर्घमूला और अंशुमती। यह भारी होता है। छर्दि, ज्वर, दमा, अती-

सार, शोष और तीनों दोषों को हरता है। बहुत गरम और रसायन है।

पिठवन (पृष्ठपर्णी) के नाम और गुण

पिठवन के आठ नाम—पृष्ठपर्णी, क्रोष्टुपुच्छा, धावनी, कलशारुहा, शृगालवृत्ता, अहितिला, पृथक्पर्णी और पर्णिका। यह हलकी है, आयु को बढ़ाती है, मीठी और गरम है तथा रक्तातीसार, दाह, प्यास, तीनों दोष, छर्दि और ज्वर को नष्ट करती है।

बड़ी कटाई के नाम और गुण

बड़ी कटाई के नव नाम—बृहती, स्थूलभण्टाकी, विषदा, मदोत्कटा, वृन्ताकी, महती, सिंही, कण्टकी और राष्ट्रकाकुली। यह मल को बाँधती है। दिल को ताक़त देती है। पाचन और गरम है। कफ और वायु को जीतती है। कुष्ठ, ज्वर, दमा, शूल, खाँसी और मन्दाग्नि को मिटाती है।

छोटी कटाई तथा सफ़ेद कटाई के नाम और गुण

छोटी कटाई के दस नाम—कण्टारिका, कण्टकिनी, कण्टकारी, निदग्धिका, दुःस्पर्शा, धावनी, क्षुद्रा, व्याघ्री, दुष्प्रदर्शिनी और बृहती।

सफ़ेद कटाई के आठ नाम—चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, क्षेत्रदूतिका, गर्भदा, चन्द्रभा, चन्द्री, चन्द्रपुष्पा और प्रियंकरी। यह दस्तावर, तेज़, कड़वी, दीपिनी, हलकी, रूखी, गरम और पाचक है। खाँसी, दमा, ज्वर, कफ, वात, पीनस, पसली का दर्द, मूत्रकृच्छ्र और हृदय के रोगों को मिटाती है।

लघुपञ्चमूल के नाम और गुण

गोखरू, शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटाई और बड़ी कटाई, ये पाँचों वस्तुएँ लघुपञ्चमूल कहाती हैं। यह शरीर में बल को उत्पन्न करता तथा पित्त-वायु को दूर करता है। बहुत गरम नहीं होता। मीठा होता है और वीर्य को बढ़ाता है।

दशमूल के नाम और गुण

लघुपञ्चमूल और बृहत्पञ्चमूल, ये दोनों मिलकर दशमूल कहाते हैं। दशमूल तीनों दोषों को तथा दमा, खाँसी, सिर के दर्द, अपतन्त्रक वायु, तन्द्रा, पसीना, ज्वर, अफरा, अरुचि और पसली के रोग को मिटाता है। इसका अर्क प्रसूता स्त्री के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

ऋद्धि तथा वृद्धि के नाम और गुण

ऋद्धि तथा वृद्धि के तेरह नाम—ऋद्धि सुखंयुग, लक्ष्मी, सिद्धि, सर्वजनप्रिया, ऋषिसृष्टा, रथाङ्ग, माङ्गल्य, श्रावणी, वसु, योग्य, युग्या और तुष्टिराशि। ऋद्धि बल को बढ़ाती, त्रिदोष को मिटाती और वीर्य को बढ़ाती है। यह मीठी और भारी है। वृद्धि गर्भदायक, ठण्ढी और आयु को बढ़ाती है। खाँसी, क्षयीरोग तथा रक्त को मिटाती है।

काकोली तथा क्षीरकाकोली के नाम और गुण

काकोली के नव नाम—काकोली, मधुरा, वीरा, कायस्था, क्षीरशुक्लिका, ध्वांक्षोली, वायसोली, स्वादुमांसी और पयस्विनी। क्षीरकाकोली के आठ नाम—क्षीरकाकोली, सुराह्वा, क्षीरिणी, पीवर, सहशस्कन्ध, सक्षीर, ससुगन्धक और क्षीरकाकोलिका। ये पित्तदोष और ज्वर को दूर करती

हैं। दोनों काकोली ठण्ढी होती हैं और वीर्य को बढ़ाती हैं। मीठी और भारी होने के कारण वायु, दाह, रक्त-पित्त, शोष, प्यास और ज्वर का नाश करती हैं।

मेदा व महामेदा के नाम और गुण

मेदा के छः नाम—मेदा, ज्ञेया, शालपर्णी, वृष्या, मेदोभवा और धरा। महामेदा के चार नाम—महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदन्ता और देवतामणि। ये दोनों भारी और स्वादिष्ठ हैं, आयु को देती हैं। स्तनों के रोग और कफ को हरती हैं। वीर्य को बढ़ाती हैं। ठण्ढी हैं। रक्त-पित्त, क्षयी और वायु को मिटाती हैं। कोई इन दोनों के अभाव में इनकी जगह सतावर लेते हैं।

जीवक व ऋषभक के नाम और गुण

जीवक के पाँच नाम—जीवक, मधुर, शृङ्गी, ह्रस्वाङ्ग और कूर्चशीर्षक। ऋषभक के छः नाम—ऋषभ, वीर, इन्द्राक्ष, विषाणी, दुर्धर और वृष। ये दोनों बल उत्पन्न करती हैं, ठण्ढी हैं। वीर्य और कफ को बढ़ाती हैं। पित्त, दाह, रक्त, खाँसी, वात, क्षयी और आमवात को हरती हैं। इनके न मिलने पर इनकी जगह विदारीकंद लेना चाहिए।

अष्टवर्ग के नाम और गुण

ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा, जीवक और ऋषभक। इन आठों चीजों को वैद्यों ने अष्टवर्ग कहा है। यह ठण्ढा व वीर्य बढ़ानेवाला है। आयु को बढ़ाता है। पित्त, दाह, रक्त और शोष को मिटाता है और स्तनों में दूध उत्पन्न करता है। गर्भ को धारण कराता है।

जीवन्ती के नाम और गुण

जीवन्ती के नव नाम--जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, यशस्करी, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, मांगल्या और जीववर्द्धिनी। यह ठण्ढी, स्वादिष्ठ व चिकनी है। त्रिदोष को मिटाती है। रसायन व बलकारक है। आँखों के लिए हितकर है, मल को बाँधती है और हलकी है।

मुलहठी के नाम और गुण

मुलहठी के नव नाम—मधुयष्टी, क्लीतनक, यष्टीमधु, मधूलिका, यष्ट्याह्व, मधुक, यष्टिमधुक, जलजा और मधु। यह भारी, ठण्ढी व बलदायक है। प्यास, छर्दि और पित्त का नाश करती है।

माषपर्णी व मुद्गपर्णी के नाम और गुण

माषपर्णी के आठ नाम—माषपर्णी, कृष्णवृन्ता, कम्बोजी, हयपुच्छिका, मांसमाषा, सिंहमुखी, स्वादमाषा और महासहा। मुद्गपर्णी के नव नाम—मुद्गपर्णी, क्षुद्रसहा, सूर्यपर्णी, कुरङ्गिणी, वनजा, रिङ्गिणी, शिम्बी, सिंही और मार्जारगन्धिका। माषपर्णी ठण्ढी, तीखी व रूखी है। वीर्य और कफ को उत्पन्न करती है, मीठी है तथा मल को बाँधती है। शोष, वायु, पित्त, पित्तज्वर और रक्त को दूर करती है। मुद्गपर्णी में भी ये गुण होते हैं। यह बवासीर और प्यास के दोषों को हरती है। हलकी होती है।

एरण्ड व लाल एरण्ड के नाम और गुण

एरण्ड (रेंड) के आठ नाम--एरण्ड, दीर्घदण्ड, तरुण, वर्धमानक, चित्र, पञ्चांगुल, व्याघ्रपुच्छ और गन्धर्वहस्तक। लाल एरण्ड के नव नाम--रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण,

व्याघ्र, व्याघ्रतर, लघु, उत्तानपत्र, उरबु, वातवैरी और चुञ्चुला। दोनों एरण्ड मीठे, गरम व भारी हैं। शूल, सूजन, कमर का दर्द, मूत्राशय, शिर की पीड़ा, जलन्धर, ज्वर, बद, दमा, कफ, अफरा, खाँसी, कुष्ठ और आमवात को मिटाते हैं। इनका फल भेदन, मीठा, खारी व गरम है। वायु का नाश करता है। इसका तेल पेट की सफाई के लिए देते हैं जिसे डाक्टर कैस्टर आयल कहते हैं।

काष्ठशारिवा और कृष्णशारिवा के नाम और गुण

काष्ठशारिवा के नव नाम—शारिवा, शारदा, आस्फोता, गोपकन्या, प्रतानिका, गोपाङ्गना, गोपवल्ली, लताह्वा और काष्ठशारिवा। कृष्णशारिवा के सात नाम—शारिवान्या, कृष्णमूली, भद्रचन्दनशारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा, चन्दना और कृष्णवल्ली। ये दोनों मीठी हैं। चिकनी और वीर्य को बढ़ाती हैं। भारी हैं। मन्दाग्नि, अरुचि, दमा, छर्दि, खाँसी और प्यास को दूर करती हैं। तीनों दोष, रक्त, प्रदर, ज्वर और अतीसार को मिटाती हैं।

जवासा और धमासा के नाम और गुण

जवासा के तेरह नाम—यास, मरुद्भव, अनन्त, दीर्घमूल, यवासक, बालपत्र, समुद्रान्त, दूरमूल, अतिकण्टक, धन्वयास, ताम्रमूली, दुःस्पर्शा और दुरालभा। धमासा के चार नाम—यासक, कच्छुरा, ताम्रमूली और धन्वयवासक। ये दोनों मीठे, रसीले, कड़वे और ठण्ढे हैं। पित्त को हरते हैं। हलके हैं। रक्त, कफ और भ्रम को दूर करते हैं। यह खेतों में अक्सर अपने आप पैदा होता है। पेड़ छोटे-छोटे, पीले-पीले, बिना पत्ती के काँटेदार होते हैं। गरमी

में खस की जगह टट्टी बाँधने के काम भी आता है।

मुण्डी के नाम और गुण

मुंडी के नव नाम——मुण्डी, भिक्षु, परिव्राजी, पावनी, तपोधना, श्रावणी, श्रीमती, मुण्डितिका और श्रावण-शीर्षका। यह कड़वी, चरफरी, वीर्य में मीठी तथा हलकी है। बुद्धि को बढ़ाती है। गलगण्ड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमिरोग, योनिरोग और पाण्डुरोगों को नष्ट करती है।

महामुण्डी व भूमिकदम्ब के नाम और गुण

महामुण्डी के तीन नाम——महामुण्डी, लोभनीया और छिन्नग्रन्थिनिका। भूमिकदम्ब के चार नाम——भूतवृक्ष, कुलहल, लम्बुशालू और कदम्बक। ये दोनों और कदम्ब का फूल गुणों में मुण्डी के समान जानना चाहिए।

अपामार्ग के नाम और गुण

अपामार्ग (लटजीरा) के आठ नाम——अपामार्ग, शिखरी, किणही, खरमञ्जरी, अधःशल्य, शैखरिक, प्रत्यक्-पुष्पी और मयूर। इसे ऊँगा और चिरचिरा भी कहते हैं। यह सर, तीखा व दीपन है। कफ और वायु को दबाता है तथा दाद, सेहुवाँ, बवासीर, खाज, शूल, जठररोग और अरुचि को दूर करता है।

लाल चिरचिरा के नाम और गुण

लाल चिरचिरा के चार नाम——अन्यरक्त, वृन्तफल, वशिर और कपिपिप्पली। यह वायु व क़ब्ज़ को बढ़ाता है और कफ को दूर करता है। अपामार्ग से इसमें गुण कम हैं। यह रूखा है और इसके पत्ते रक्तपित्त का नाश करते हैं।

कपाला के नाम और गुण

कपाला के आठ नाम——काम्पिल्य, रेचन, रक्तचूर्ण

व्रणशोधन, लोहित, रक्तशमन, रेची और रञ्जनक । कषैला कफ, रक्तपित्त, क्रिमि, गोला, जठररोग और घावों को मिटाता है । दस्तावर, गरम और चर्परा है । इसका साग कड़वा होता है, मल को बाँधता है और ठण्ढा है।

दन्ती (जमालगोटा) के नाम और गुण

दन्ती के सोलह नाम——दन्ती, गुणप्रिया, नागदन्ती, शीघ्रानुकूलक, उपचित्रा, अनुकुम्भी, विशल्या, उदुम्बर-च्छदा, आखुपर्णी, वृषैरण्डा, द्रवन्ती, सर्वरी, मूषकाह्वा, सुतश्रेणी, प्रत्यक्श्रेणी और फञ्जिका। ये नाम दोनों प्रकार के जमालगोटा के हैं। दोनों दन्ती सर, पाक और रस में कड़वी हैं। दीपन, तीखी और गरम हैं। पित्त, रक्त, कफ, सूजन, जठररोग और क्रिमिरोग को दूर करती हैं।

जयपाल के नाम और गुण

जयपाल के तीन नाम——जयपाल, दन्तिबीज और तित्तिरीफल । यह भारी, चिकना और दस्तावर है । पित्त और कफ को नष्ट करता है ।

सफेद निसोथ के नाम और गुण

सफेद निसोथ के दस नाम——त्रिवृत, कुम्भ, निशोत्रा, त्रिभण्डी, कूटरबाहिनी, सर्वानुभूति, त्रिवृता, त्रिपुटा, सरला और सिता । यह तीखा, रूखा, मीठा, सर व गरम है । वात को बढ़ाता है तथा पचने के समय कड़वा है । ज्वर, कफ, पित्त, सूजन व जठररोग को मिटाता है। रेचन (जुलाब) में इसकी जड़ के चूर्ण का प्रयोग किया जाता है ।

१——लाल रंग का चूर्ण सा इसके फलों पर लगा होता है। इसे कमीला या कबीला कहते हैं।

स्याह निसोथ के नाम और गुण

काले निसोथ[1] के आठ नाम--त्रिवृत्काला, कालमेषी, कालपर्णी, अर्धचन्द्रिका, सुखेना, मालविका, मसूरा और विदला। इसमें सफेद निसोथ से कम गुण हैं। तेज दस्तावर जुलाब है तथा मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रम और छर्दि को नष्ट करता है।

इन्द्रायन के नाम और गुण

इन्द्रायन[2] के नव नाम--इन्द्रवारुणी, इन्द्राह्व, वृषभाक्षी, गवादिनी, ऐन्द्रवारु, क्षुद्रफला, विशाला, ऐन्द्री, और वृषादिनी। दूसरी इन्द्रायन के तेरह नाम--अन्येन्द्रवारुणी, चित्रफला, चित्रमहाफला, आत्मरक्षा, नागदन्ती, त्रपुषी, गजचिर्भटी, श्वेतपुष्पी, मृगाक्षी, पक्षसुरा, मरुद्भवा, क्रिमिगुहा और चित्रदेवी। ये दोनों तीखी, पकने में कड़वी, दस्तावर, हलकी और वीर्य में गरम हैं। कामला, वायु, पित्त, कफ, तापतिल्ली और जठररोग को नष्ट करती हैं।

अमलतास के नाम और गुण

अमलतास के बाईस नाम--आरग्वध, राजवृक्ष शम्याक, कृतमालक, व्याधिघात, कर्णिकार, प्रग्रह, चतुरंगुल, आरोग्यशिम्बी, स्वर्णाट, कर्ण, दीर्घफल, कुण्डली, हिमपुष्पा, कलिख्यात, नृपद्रुम, स्वर्णशेफालिका, श्यावा, कुष्ठसूदन, स्वर्णस्थाल्या, पित्तला और सुवर्णद्रुम। यह भारी, मीठा, ठंढा और हलका दस्तावर है। ज्वर, जठररोग, रक्तपित्त, वायु, उदावर्त और शूल को मिटाता है। इसका फूल वात को बढ़ाता और मल को बाँधता है। तीख

१--तुर्वंत् भी कहते हैं। २ फरफेंदु, गडतुंबा, हिंजल, वसलंभानी भी इसे कहते हैं।

होने के कारण पित्त व कफ को मिटाता है। इसकी गिरी भी पकने पर मीठी व तीखी होकर पित्त और वायु को जीतती है।

नील के नाम और गुण

नील के ग्यारह नाम—नीलिनी, नीलिका, ग्राम्या, श्रीफला, भारवाहिनी, रञ्जनी, कलिका, मेला, तूणी, रूक्षा और विशोधिनी। यह दस्तावर व तीखी है। बालों को स्याह करती है। मोह व भ्रम को दूर करती है। गरम होने के कारण जलोदर, तापतिल्ली, वातपित्त, कफ और वायु को मिटाती है।

कुटकी के नाम और गुण

कुटकी के तेरह नाम—कटुकी, रोहिणी, तिक्ता, चक्राङ्गी, कटुरोहिणी, मत्स्यपित्ता पाण्डुरुहा, कृष्णभेदा, द्विजाङ्गिका, अशोकरोहिणी, मत्स्या, सकुला और सकुलादिनी। यह पकने पर कड़वी, तीखी, रूखी, दस्तावर, हलकी और ठण्ढी है। क्रिमि दमा, दाह, पित्त कफ और ज्वर को दूर करती है।

अङ्कोल के नाम और गुण

अङ्कोल के आठ नाम—अङ्कोलक, ताम्रफल, पीतसार, निरोचक, गुतस्नेह, विरेची, भूषित और दीर्घकीलक। यह कड़वा, चिकना, तीखा, गरम, कसैला और हलका दस्तावर है। क्रिमि, शूल, आमवात, सूजन, कफ और विष को दूर करता है। इसका फल ठण्ढा और मीठा होता है। कफकारी, पुष्टिकारी तथा भारी है। बल को बढ़ाता है। वायु, पित्त, दाह, क्षयी व रक्तदोष को मिटाता है।

सेंहुड़ के नाम और गुण

सेंहुड़ के दस नाम—सेहुण्ड, वज्रतुण्ड, गाण्डीर,

वज्रकण्टक, स्नुही (स्नुहास्नुक) सम, दुग्ध, असिपत्र, वज्री और महातरु। यह दस्तावर होता है। तीखा, दीपन, चरफरा और भारी है। शूल, आष्ठीलिका, अफरा, गोला, सोजा, जलोदर, वात, दूषीविष, तिल्ली, कुष्ठ, उन्माद, पथरी और पाण्डुरोग को नष्ट करता है।

नीम के नाम और गुण

नीम के तेरह नाम––निम्ब, नियमन, नेता, अरिष्ट, पारिभद्रक, सुतिक्त, सर्वतोभद्र, पिचुमन्द, प्रभद्रक, कुष्ठहा, देवदत्त, रविसन्निभ और सूर्यक। यह ठण्ढी और हलकी है। मल को बाँधती है। पकने में कड़वी होकर अग्नि और वायु को बढ़ाती है। घाव, पित्त, कफ, छर्दि, कुष्ठ, उबकाई व प्रमेह को नष्ट करती है। इसकी पत्ती नेत्रों के लिए हितकारक और क्रिमि, पित्त और विष को दूर करती है। इसका फल भी भेदन, चिकना और गर्म है। कुष्ठ को हरता है। हलका है। नीम की पत्ती कच्चे फोड़े को पकाती है तथा पके हुए फोड़े को बहाकर सुखाती है।

बकायन के नाम और गुण

बकायन के नव नाम––महानिम्ब, निम्बक, कामुक, विषमुष्टिक, रम्यक, गिरिक, अद्रेक, क्षार और केशमुष्टिक। यह ठण्ढा, रूखा, तीखा व कसैला है। मल को बाँधता है। कफ, पित्त, क्रिमि, छर्दि, कुष्ठ, थुकथुकी और रक्तदोष को मिटाता है।

चिरायता के नाम और गुण

चिरायता के बारह नाम––किराततिक्त, कैरात, भूनिम्ब, रामसेनक, किरातक, नैपाल, नाडीतिक्त, ज्वरान्तक, कण्डुतिक्त, अर्धतिक्त, निद्रारि और सन्निपातहा। यह वायु

को बढ़ाता है। रूखा, ठण्ढा, तीखा व हलका है। सन्निपात, ज्वर, दमा, खाँसी, रक्तपित्त और दाह को नष्ट करता है।

कुड़ा के नाम और गुण

कुड़ा[१] के आठ नाम——कुटज, मल्लिकापुष्प, कलिङ्ग, गिरिमल्लिका, वत्सक, कुटज, कोटिवृक्षक और शक्र-भूरुह। यह कड़वा, रूखा, अग्नि को बढ़ानेवाला, कसैला व हलका होता है। बवासीर, अतीसार, रक्तपित्त, कफ, प्यास, आम-वात और कुष्ठ को नष्ट करता है। इसका फूल वायु को बढ़ाता है। ठण्ढा व तीखा होता है। पित्त और अतीसार को जीतता है।

इन्द्रयव के नाम और गुण

इन्द्रयव के सात नाम——ऐन्द्रयव, ऐन्द्रफल, कालिङ्ग, कौटज, शक्राह्व, पुरुहूत और भद्रयव। यह त्रिदोष को मिटाता और क़ब्ज़ करता है। ठण्ढा व कड़वा होने के कारण ज्वर, अतीसार, खूनी बवासीर, क्रिमि, विसर्प और कुष्ठ को दूर करता है।

मैनफल के नाम और गुण

मैनफल के नव नाम——मदन, छर्दन, पिण्डीराठ, पिण्डा-न्तक, फल, करहाट, तगर, शल्यक और विषपुष्पक। यह कड़वा है, छर्दि को लाता, वीर्य में गरम, लेखन, हलका व रूखा है। कुष्ठ, कफ, अफरा, सूजन, गोला और घावों को आराम करता है।

कंकुष्ठ के नाम और गुण

कंकुष्ठ के नव नाम——कंकुष्ठ, कङ्काकुष्ठ, रेचन, रङ्ग-नामक, शोधन, पुलह, हास, वराङ्ग और कुञ्जबालुक। यह

१——कोयड़, कुड़ा। इसकी फलियों में से ही इन्द्रयव निकलते हैं।

दस्तावर है। तीखा, कड़वा व गरम होने से वर्ण को उज्ज्वल करता है। क्रिमि, सूजन, उदररोग, मलमूत्रावरोध, गोला, अफरा और कफ में लाभदायक है। इसी को मुर्दाशंख कहते हैं।

चोष के नाम और गुण

चोषक[1] के बारह नाम---हेमाह्वा, कनकक्षीरी, मेह-पुष्पी, हिमावती, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कटुपर्णी, चिक-षणी, तिक्तदुग्धा, हैमवती, पीतदुग्धा और हिमाद्रिका। यह दस्त लाती है। तीखी होने के कारण मन्दाग्नि व ग्लानि उत्पन्न करती है। क्रिमि, खाज, कफ, अफरा, विष और कुष्ठ को दूर करती है।

सातला के नाम और गुण

सातला के दस नाम---सातला, विरला, सारी, सत्फला, बहुफेनका, चर्मसाह्वा, चर्मकासा, फेना, दीप्ता तथा नालिका। यह पकने पर कड़वी है और वायु को बढ़ाती है। ठण्ढी, हलकी व तीखी होने के कारण सूजन, कफ, अफरा, पित्त, उदावर्त और रक्तदोष को दबाती है।

थूहरविशेष के नाम और गुण

थूहर के आठ नाम---अश्मन्त, मालुकापात्र, युग्मपत्र, अम्लपत्रक, श्लक्ष्णत्वक्, अश्वयोनि, कुशली और पाप-नाशन। यह कसैला होने से मल को बाँधता है। ठण्ढा व गरम है, कफ और वायु को जीतता है। गण्डमाला, रक्त, गलगण्ड व गलरोग को मिटाता है। इसका फल भी लेखन होने के कारण मल को बाँधता है और भारी होने के कारण कफ और वायु को दूर करता है।

१---इसी को सत्यानासी और बड़ी कटेरी कहते हैं। इसी की जड़ का नाम चोष है।

कचनार के नाम और गुण

कचनार के चार नाम—काञ्चनार, काञ्चनक, पाकरी और रक्तपुष्पक। इसीका भेद कोविदार है। कोविदार (लाल कचनार) के सात नाम हैं---कुद्दाल, कुहली, कुली, आस्फोत, दालक, स्वल्पकेशर और चमरी। यह ठण्ढा है, अतः मल को बाँधता है। कसैला है, इसलिए रक्तपित्त को नष्ट करता है। क्रिमि, कुष्ठ, काँच का निकलना, गण्ड-माला व घावों को दूर करता है। लाल कचनार के भी यही गुण हैं। इन दोनों के फूल ठण्ढे, हलके व रूखे हैं और मल को बाँधते हैं। पित्तरक्त, प्रदर, घाव और खाँसी को मिटाते हैं।

दोनों सँभालुओं के नाम और गुण

सफ़ेद फूलवाली सँभालू के चार नाम---निर्गुण्डी, श्वेतकुसुम, सिन्दुक और सिन्दुवारक। स्याह फूलवाली सँभालू के सात नाम---भूतकेशी, नीलसिन्दुक, पुष्पनीलक, शेफालिका, शीतभीरु, वनक और अनिल-मञ्जरी। यह स्मृतिदायक, तीखी, कसैली, कड़वी व हलकी है। बालों को बढ़ाती है, नयनों के लिए हितकारी है। शूल, शोथ, आमवात, क्रिमि, कुष्ठ, अरुचि, कफ और घावों को दूर करती है। नील सँभालू के भी यही गुण जानना चाहिए।

मेढ़ासिंगी के नाम और गुण

मेढ़ासिंगी के सात नाम--मेषशृङ्गी, मेषवल्ली, सप्तदंष्ट्रा, अजशृङ्गिका, दक्षिणावर्ता, वृश्चिकाली और विषाणिका। यह रस में तीखी है। वात को बढ़ाती और खाँसी को मिटाती है। पाक में रूखी व कड़वी है। पित्त, घाव, कफ और नेत्रशूल को दूर करती है।

पुनर्नवा के नाम और गुण

पुनर्नवा के आठ नाम--पुनर्नवा, श्वेतमूला, पृथ्वीक,[1] दीर्घपत्रक, विषाददीर्घ, वर्षाभू, पुनर्भू और मण्डलच्छदा। यह सर है; तीखी, रूखी, गरम व मीठी और कड़वी है।

लाल पुनर्नवा के नाम और गुण

लाल पुनर्नवा के नव नाम--पुनर्नवा, अरुणा, तिक्ता, रक्तपुष्पा, कटिल्लका, क्रूरक, क्षुद्रवर्षाभू, वर्षाकेतु और शिवाटिका। यह शोथ (वरम), वायु, घाव व कफ को मिटाती है। रुचि को उपजाती है। रसायन है। श्रेष्ठ पुनर्नवा तीखी व पाक में कड़वी, ठंढी व हलकी है। वायु को उत्पन्न करती है। कब्ज करती है। कफ और रक्तपित्त को मिटाती है।

रास्ना के नाम और गुण

रास्ना[2] के दस नाम--रास्ना, रम्या, युक्तरसा, रसना, गन्धनाकुली, सुगन्धमूला, अतिरसा, श्रेयसी, सुवरा और सरा। यह आम को पकाती, कड़वी, भारी और गरम है। कफ व वात को जीतती है। सूजन, दमा, वातरक्त, वायु-शूल और उदररोग को मेटती है।

असगन्ध के नाम और गुण

असगन्ध के नव नाम--अश्वगन्धा, तुरङ्गाह्वा, गोकर्णा, अवरोहक, वराहकर्णी, वरदा, बल्या, वाजीकरी और वृषा। यह वायु, कफ, सूजन, सफ़ेद कोढ़ व क्षयी को नष्ट करती है, बल को बढ़ाती है। रसायन, कड़वी, कसैली और गरम तथा अत्यन्त वीर्य को बढ़ानेवाली है।

प्रसारणी के नाम और गुण

प्रसारणी के नव नाम--प्रसारणी, राजबला, चारुपर्णी,

१--कहीं-क सट्ठी या साठी कहते हैं। २--रायसन।

प्रतानिका, शरणी, सारणी, भद्रपर्णी, सुप्रसरा और सरा यह भारी है। आयु को बढ़ाती, टूटे को जोड़ती और बल देती है। सर है। वीर्य में गरम व वात को हरती है। कड़वी है, वातरक्त और कफ को नष्ट करती है।

शतावरी के नाम और गुण

सतावर के आठ नाम—शतावरी, द्वीपिशत्रु, द्विपका, धरकण्टका, नारायणी, शतपदी, शतपाद् और बहुपत्रिका। यह भारी, ठंढी, मीठी व चिकनी है। रसायन अर्थात् बुढ़ापे को दूर करती है। वीर्य और बल को बढ़ानेवाली है। वातपित्त, रक्त तथा शोथ को घटाती और स्तनों में दूध शीघ्र पैदा करती है।

बड़ी शतावरी के नाम और गुण

बड़ी सतावर के बारह नाम—शतावरी, ऊर्ध्वकण्ठा, पीवरी, धीवरी, वरी, अभीरु, बहुपत्रा, महापुरुषदन्तिका, सहस्रवीर्या, केशी, तुङ्गिनी और सूक्ष्मपत्रिका। यह बुद्धि को बढ़ाती है। हृदय के लिए लाभदायक है। आयु को बढ़ाती है। रसायन है। वीर्य में ठंढी, बवासीर, संग्रहणी व आँखों के रोगों को मिटाती है। इसका अंकुर त्रिदोषों को हरता है। हलका होता है। बवासीर और क्षयी को नष्ट करता है।

खरैंहटी, सहदेई, बलिका व गँगेरन के नाम और गुण

खरैंहटी के आठ नाम—बला, वट्यालक, शीतपाकी, ट्योदराह्वया, भद्रौदनी, समङ्गा, समांसा और खरयष्टिका।

सहदेई के आठ नाम—महाबला, वीरपुष्पी, सहदेवी, बृहद्बला, वाट्यायनी, देवसहा, वाट्या और पीतपुष्पिका।

बलिका के चार नाम—बलाका, अतिबला, भारवाजी और वृक्षगन्धिनी।

गँगेरन के चार नाम—गङ्गेरुकी, नागबला, विश्वदेवा और गवेधुका। ये खरैंहटी आदि चारों ठंढी व मीठी हैं। बल और कान्ति को देती हैं। चिकनी हैं। मल को बाँधती हैं। वात, अम्लपित्त, रक्त और घावों को अच्छा करती हैं।

सहदेई मूत्रकृच्छ्र को मिटाती है और वायु को अनुलोमित करती है। गँगेरन भारी है और वीर्य को उपजाती है, विशेषरूप से रक्तपित्त को दूर करती है। बलदायक व रसायन है। पुरुषार्थ और आयु को बढ़ाती है। इसका फल भी ठंढा, मीठा, स्तम्भनकारी, भारी व लेखन है। मूत्रावरोध व अफरा पैदा करता और रक्तपित्त को बढ़ाता है। इन चारों के गुण प्रायः एक से ही हैं।

मालकाँगनी के नाम और गुण

मालकाँगनी के चार नाम—ज्योतिष्मती, वह्निरुचि, कंगुणी और कटुभी। यह कड़वी, तीखी व सर है। कफ और वात को जीतती है। बहुत गरम है। वमन कराती है। तीक्ष्ण है। अग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्ति बढ़ाती है।

तेजबल के नाम और गुण

तेजबल के नव नाम—तेजस्विनी, तेजवती, तेजिन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्ता और अतितेजनी। यह कफ, दमा, खाँसी शूल और आमवात को जीतती है। पाचक, गरम, कड़वी व तीखी है। रुचि और अग्नि को बढ़ाती है।

---

१ इन चारों को 'बलाचतुष्टय' भी कहते हैं।

देवदारु के नाम और गुण

देवदारु के आठ नाम—देवदारु, सुराह्वा, भद्रदारु, सुरद्रुम, भद्रकाष्ठ, स्नेहवृक्ष, क्रिमिल और शक्रदारु। यह कड़वा, चिकना, तीखा, गरम और हलका है। अफरा, ज्वर, शोथ, आमवात, हिचकी, खाज, कफ और वात को नष्ट करता है।

सरल के नाम और गुण

सरल के नव नाम—सरल, नन्दन, व्रीड़ा, नमेरु, द्विक-वृक्षक, पीतदारु, पीतवृक्ष, महादीर्घ और कलिद्रुम। यह कड़वा, पाक तथा रस में मीठा, हलका, गरम और चिकना है। वात, नेत्ररोग, कण्ठरोग तथा कर्णरोग को मिटाता है।

पुष्करमूल के नाम और गुण

पुष्करमूल के आठ नाम—पौष्कराह्व, पद्मपत्र, पौष्कर, पुष्कराह्वक, काश्मीर, पुष्करजटा, मूलवीर और सुगन्धिक। यह कड़वा, तीखा व गरम है। वात, कफ, ज्वर, सूजन, अरुचि और दमा को दूर करता है। विशेष रूप से पसली के शूल को मिटाता है।

कूट के नाम और गुण

कूट के नव नाम—कुष्ठ, रोगाह्वय, दिव्य, कौबेर, पारि-भद्रक, पारिहार्य, पारिभाव्य, उत्पल और पारिभद्रक। यह गरम, कड़वा, मीठा और तीखा है। वीर्यदायक होता है। हलका है। वातरक्त, विसर्प, कुष्ठ, खाँसी, वात और कफ को दूर करता है।

काकड़ासिंगी के नाम और गुण

काकड़ासिंगी के आठ नाम—शृंगी, कुलीरशृङ्गी, वक्रा, कर्कटशृङ्गिका, कर्कटाक्षा, महाघोषा, शृङ्गनाम्नी और नताङ्गी। यह कसैली, तीखी व गरम है। हिचकी,

छर्दि, ज्वर, कफ, दमा, क्षयी, खाँसी और ऊर्ध्ववायु को नष्टकर पुरुषार्थ को बढ़ाती है।

कायफल के नाम और गुण

कायफल[1] के दस नाम--कट्फल, कुमुदा, कुम्भी, श्रीपर्णी, लोमपादप, सोमवल्क, महाकुम्भी, भद्रा, भद्रवती, और शिवा। यह कसैला, तीखा और कड़वा होता है। वात, कफज्वर, दमा, प्रमेह, बवासीर, खाँसी, कण्ठरोग और अरुचि को दूर करता है।

रोहिष के नाम और गुण

रोहिषतृण[2] के ग्यारह नाम--रोहिष, कत्तृण, भूति, भूतिक, सरल, तृण, श्यामल, युग्मक, पौर, व्यापक और देवगन्धक।

यह पाक में कड़वा, तीखा, गरम व कसैला है। वात, पित्त, रक्तस्राव, दमा और कफज्वर को दूर करता है।

भारङ्गी के नाम और गुण

भारंगी के नव नाम--भारङ्गी, भृगुभवा (भार्गी), पद्मा, कासघ्नी, गन्धपर्वणी, खरशाक, शुक्रमाता, भञ्जी और ब्राह्मणयष्टिका। यह रूखी, कड़वी व तीखी है। रुचि को पैदा करती है। गरम व पाचक है। सूजन, खाँसी, कफ, दमा, पीनस, ज्वर और वात को नष्ट करती है।

पाषाणभेद के नाम और गुण

पाषाणभेद के आठ नाम--पाषाणभेद, पाषाण, अश्मरीभेद, अश्मभेदक, शिलाभेद, दृषद्भेद, नागभिन्न और अङ्गभेदन। यह कसैला व ठंढा है। बस्ति को शोधता है।

१--इस वृक्ष का छिलका प्रायः ओषधियों के काम आता है। २--रोहेड़ा।

दस्तावर और तीखा है। प्रमेह, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र और पथरी को दूर करता है।

नागरमोथा के नाम और गुण

नागरमोथा के तेरह नाम—मुस्त, वारिधर, मुस्ताह्व, राजमेघाख्य, कुरुविन्दक, वराह, अब्द, घन, भद्रमुस्त, राजकसेरुक, पिण्डमुस्त, विषध्वंसी और नागर। यह कड़वा व ठंढा है। मल को बाँधता है। तीखा, दीपन, पाचक और कसैला है। क्रिमि, रक्तपित्त, कफ, प्यास और ज्वर को दूर करता है।

धाय के नाम और गुण

धाय[1] के नव नाम—धातकी, कुञ्जरा, सिन्धुपुष्पी, प्रमादिनी, मदा, पार्वतीया, ताम्रपुष्पी, सुभिक्षा और मेघवासिनी।

यह कड़वी, ठंढी, कम गरम, कसैली व हलकी है। प्यास, अतीसार, रक्तपित्त, विष, क्रिमि और विसर्परोग को नष्ट करती है। दवा में इसके फूल काम आते हैं।

माचिका के नाम और गुण

माचिका[2] के दस नाम—माचिका, बालिका, अम्बष्ठा, शठी, दन्तशठी, अम्बिका, अम्बष्ठकी, सूचिमुखी, कषाया और साकण्टमुखी। यह गरम, रस व पाक में कसैली तथा ठंढी और हलकी है। पके हुए अतीसार, रक्तपित्त, कफ और कण्ठरोग को नष्ट करती है।

बिदारीकन्द के नाम और गुण

बिदारीकन्द[3] के सोलह नाम—बिदारिका, वृक्षवल्ली, वृक्षकन्दा, विदालिका, शृङ्गालिका, कन्दवल्ली, स्वादुकन्दा, फलाशका, शुक्ला, क्षारशुक्ला, क्षारवल्ली, पयस्विनी

१—इसी को धावा, धावड़ो, धावी, धव कहते हैं। २—मांई, माइयाँ। ३—सराली, भंजार,

इक्षुवल्ली, महाश्वेता, क्षीरकन्दा और क्षीरगन्धिका। यह मीठी व चिकनी है। पुष्टता को करती हुई स्तनों में दूध और वीर्य को बढ़ाती है। भारी है। पित्त, रक्त, वात व दाह को मिटाती है। रसायन है।

वाराहीकन्द के नाम और गुण

वाराहीकंद के नव नाम--वाराही, माधवी, गृष्टि, शीकरी वनमालिका, वाराहीकन्द, क्रिटि, क्रोडनामा और संवर-कन्दक। यह मीठी, पाक के समय कड़वी व तीखी है। दूध और वीर्य को पैदा करती है। बलदायक और पित्त को बढ़ाती है। वात, कफ, प्रमेह और क्रिमिरोगों को जीतती है।

पाठा के नाम और गुण

पाठा[1] के ग्यारह नाम—पाठा, अम्बष्ठा, बृहत्तिक्ता, प्राचीना, अम्बष्ठका, सरा, वरा, तिक्ता, पापचेली, श्रेयसी और वृद्धिकर्णिका। यह गरम, कड़वी, तीखी और वायु व कफ को हरती है। हलकी होने के कारण शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, अतीसार, हृदयरोग, दाह, खुजली, विष, दमा, क्रिमि, गोला, कृत्रिम विष और फोड़ों को लाभदायक है।

मुरहरी के नाम और गुण

मुरहरी के बारह नाम--मूर्वा[2], देवी, मधुरसा, देवश्रेणी, मधुस्रवा, स्निग्धपर्णी, पृथक्पर्णी, मोरटा, पीलुकर्णिका, जालिनी, ततवल्का, नन्दिनी और पृथक्त्वचा। यह दस्ता-वर, भारी, मीठी और तीखी है। पित्तरक्त, प्रमेह, त्रिदोष, प्यास, हृद्रोग, खुजली, कोढ़, ज्वर, पित्त और वायु के

१—पाटला, पाढ़। २—मूर्वादेवी मधुरसा मोरटा तेजनी तु वा। मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि॥ इत्यमरः॥ इसी को चिनार कहते हैं।

दूर करती है। पुष्टता देती है। कफ को बढ़ाती है। दिल को ताकत देती है। मल को बाँधती है। बायगोले को नष्ट करती है।

मजीठ के नाम और गुण

मजीठ के चौदह नाम——माञ्जिष्ठा, विजया, रक्ता, रक्तांङ्गी, कालमेषिका, रक्तयष्टी, ताम्रवल्ली, समङ्गा, वस्त्रभूषणा, मञ्जुला, विकशा, भङ्गी, छश्मिका और ज्वरनाशिनी। यह मीठी, तीखी व कसैली है। सेवन से शरीर का सोने के समान रंग करती है। भारी और गरम है। विष, कफ, सूजन, योनिशूल, नेत्रशूल, रक्तातीसार, कुष्ठ, रक्त, विसर्प, घाव और प्रमेह को जीतती है। इसका साग अग्नि को बढ़ाता है। मीठा व चिकना है। पित्त और वायु को मिटाता है।

हल्दी के नाम और गुण

हल्दी के ग्यारह नाम——हारिद्रा, रजनी, गौरी, रञ्जिनी, वरवर्णिनी, पिण्डा, पीता, वर्णवती, निशा, वर्णा और विलासिनी। यह कड़वी, तीखी, रूखी व गरम है। कफ व पित्त को हरती है। रंग को निखारती है। त्वग्दोष, दाह, प्रमेह, रक्त, शोथ, पाण्डुरोग और घावों को मिटाती है।

दारुहल्दी के नाम और गुण

दारुहल्दी[1] के आठ नाम——दार्वी, दारुहरिद्रा, पीतदारु, पञ्चधा, कटंकटेरी, पित्तद्रु, स्वर्णवर्णा और कटंकटी। इसमें हल्दी के समान गुण जानना चाहिए। परन्तु विशेष रूप से नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोगों को दूर करती है।

पवाँर के नाम और गुण

पंवाँर[2] के आठ नाम——प्रपुन्नाट, एड़गज, चक्रमर्द,

१——इसे पहाड़ी लोग 'कशमल का झाड़' कहते हैं। २——इसे पुवाड़, पवाँड़, पनवाड़

प्रपुन्नट, दद्रुघ्न, मर्दक, मेघकुसुम और कुष्ठकृन्तन। यह हलका, मीठा व रूखा है। पित्त और वात को मिटाता है। हृदय के लिए हितकारक व गरम है। कफ, दमा, कुष्ठ, दाद, विष और वात को जीतता है। इसका फल गरम है। कुष्ठ, खुजली, दाद, विष और वात को हरता है। इसका साग भी वात-रक्त को हरकर कफ को बढ़ाता है और हलका है। बाकुची के नाम और गुण

बाकुची के तेरह नाम--बाकुची, चन्द्रिका, सोमवल्ली, पूतिफला, वरा, सोमराजी, कृष्णफला, वल्गुजा, काल-मेषिका, चन्द्रलेखा, सोम और कुष्ठघ्नी। यह मीठी और तीखी है। पाक में कड़वी है। रसायन है। मल को बाँधती है और ठंढी है। भोजन में रुचि को पैदा करती है। दस्तावर है। हृदय को हितदायक तथा रक्तपित्त को हरती है। रूखी है। कफ, दमा, कोढ़, प्रमेह, ज्वर और क्रिमिरोग को मिटाती है। इसका फल भी पित्त, मूत्रकृच्छ्र, कुष्ठ, वात और कफ को दूर करता है।

भँगरा के नाम और गुण

भँगरा के आठ नाम--भृङ्गराज, भेकराज, मार्कव, केशरञ्जक, अङ्गारक, भृङ्गिराज, भृङ्गाह्व और सूर्यवल्लभ। यह कड़वा, तीखा, रूखा व गरम है। कफ व वात को बढ़ाता है। दाँतों को दृढ़ करता है। रसायन है। बिगड़ी खाल को सुधारता है। कोढ़, आँखों की पीड़ा व माथे की पीड़ा को दूर करता है।

पित्तपापड़ा के नाम और गुण

पित्तपापड़ा के नव नाम--पर्पट, कवच, रेणु, पित्तहा,

वरकण्टक, वरतिक्त, पर्पटक, पृथ्विक और चर्मकण्टक।

यह पित्तरक्त, भ्रम, प्यास और कफज्वर को हरता है। मल को बाँधता है। ठंढा व तीखा है। दाह को हरता है। वात को बढ़ाता है। हलका है। लाल फूलोंवाला पित्त-पापड़ा भी अतीसार को दूर करके ज्वर को उतारता है। पित्त, पेट के रोग, दाह व ज्वर को दूर कर कफ को सुखाता है। चिरायता और पित्तपापड़ा, ये दोनों तीखे, ठंढे और हलके हैं। ज्वर को दूर करते हैं।

त्रायमाणा के नाम और गुण

त्रायंमाणा[1] के सोलह नाम––शणपुष्पी, माल्यपुष्पी, धावनी, शणघण्टिका, बृहत्पुष्पी, स्वल्पघण्टा, घण्टाशब्दा, पुष्पिका, त्रायमाणा, सुहृत्त्राणा, त्रायन्ती, गिरिसानुजा, बलभद्रा, कृतत्राणा, वार्षिकी और त्रायमाणिका। यह कड़वी है। पित्त व कफ को जीतकर छर्दि को करती है तथा दस्तावर है। पित्तज्वर, कफ और रक्तशूल को जीतती है।

महाजालनिका के नाम और गुण

महाजालनिका[2] के सात नाम––महाजालनिका, चर्मरङ्ग, तिलपुष्पिका, आवर्तकी, बिन्दुकिनी, विभाण्डी और रक्त-पुष्पिका। यह तीखी है। जुलाब है। कफ और पित्त को जीतती है। दाह, उदररोग, अफरा, सूजन, कोढ़, क्रिमि और ज्वर को मिटाती है।

अतीस के नाम और गुण

अतीस के दस नाम––अतिविषा, शुक्लकन्दा, विषा, प्रतिविषा, श्यामकन्दा, शिता, शृङ्गी, भंगुरा, उपविषा और उपविषाणिका।

१––कोई इसके अभाव में वनफशा ले लेते हैं। २––कड़वी तोरी।

यह गरम, पाचक और तीखी है। कफ, पित्त और अतीसार को जीतती है। पीली, काली, सफ़ेद और लाल के भेद से उत्तरोत्तर श्रेष्ठ और बलवती है। जैसे पीली से काली, काली से सफ़ेद, सफ़ेद से लाल उत्तम है। इसलिए लाल श्रेष्ठ होने से सर्वदोषों को हरती है। लेप करने से सूजन को मिटाती तथा कफ से उपजे हुए बीस रोगों को शीघ्र ही हरती है। रसायन भी है।

मकोय के नाम और गुण

मकोय के नव नाम—काकमाची, ध्वांक्षमाची, कामची, जघनी, फला, रसायनवरा, सर्वतिक्ता, काकिनी और कटु।

यह त्रिदोष को मिटाती है। चिकनी और गरम है। स्वर और वीर्य को देती है। रसायन है और सूजन, कोढ़, बवासीर, ज्वर और प्रमेहों को दूर करती है।

काकजङ्घा के नाम और गुण

काकजंघा के आठ नाम—काकजङ्घा, नदीकान्ता, काकतिक्ता, सुलोमजा, पारावतपदी, काका, मदा और छर्दिकारिणी। यह ठंढी है। रक्तपित्त और कफज्वर को हरती है।

दोनों लोधों के नाम और गुण

लोध्र के पाँच नाम—लोध्र, तिरीट, कानीन; तिलक और सन्ततोद्भव। कड़ा होने से सरक, श्वेतलोध्र और अक्षिभेषज, ये तीन नाम दूसरे लोध[1] के हैं। यह दस्तावर है। ठंढा है। नेत्रों के लिए हितकारक है। कफ और पित्त की

१——लोध, पठानीलोध। "गालवः शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ"। इत्यमरः।

वृद्धि को हरता है। कसैला है। रक्त, सूजन, रक्तज्वर और अतीसार को दूर करता है। इसका फूल मीठा होता है। मल को बाँधता है। कड़वा है। कफ और पित्त को जीतता है।

विधारा के नाम और गुण

विधारा के पाँच नाम--वृद्धदारु, महाश्यामा, छगली, लाङ्गली और जीर्णवल्कल कोटरपुष्पी, आवेगी और छागलानी, ये तीन नाम दूसरे विधारा के हैं। यह कसैला, गरम, दस्तावर, तीखा और रसायन है। बल को उपजाता है। वायु, आमवात, रक्तरोग, सूजन, प्रमेह और कफ को जीतता है।

देवदाली के नाम और गुण

देवदाली के दस नाम--देवदाली, वृत्तकोशी, देवताण्ड, गरागरी, जीमूत, तारका, वेणी, जालिनी, आयू और विषापहा। यह रस में तीखी, छर्दिकारिणी और तीक्ष्ण है। कफ, बवासीर, सूजन, पाण्डु, क्षयी, हिचकी, क्रिमि और ज्वर को हरती है। कड़वी है। प्रमेह और कामला (काँवर) को हरती है।

हंसपादी के नाम और गुण

हंसपादी के आठ नाम--हंसपादी, हंसपदी, रक्तपादी, त्रिपादिका, प्रह्लादिनी, कीटमारी; कीटमाता और मधुस्रवा। यह भारी व ठंढी है। रक्त, दोष, विष, फोड़े, विसर्प, दाह, अतीसार, मकड़ी और भूतों को नष्ट करती है और घावों को पूरती है।

सोमवल्ली के नाम और गुण

सोमवल्ली के चार नाम--सोमवल्ली, यज्ञनेता, सोमक्षीरी और द्विजप्रिया।

यह त्रिदोष को हरती है। कड़वी, तीखी और रसायन अर्थात् आयु को बढ़ाती है।

अमरबेल के नाम और गुण

अमरबेल के नाम हैं आकाशवल्ली और अमर-वल्लरी। यह मल को बाँधती है। तीखी है और पिच्छिल-नामक रोगों को विनाशती है।

नाकुली के नाम और गुण

नाकुली के सात नाम--नाकुली, समहा, सर्पगन्धिनी, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, महासर्पनेत्रा और रोचकपत्रिका। यह कसैली, तीखी, कड़वी और गरम है। मकड़ी, बिच्छू, चूहे और साँप के विष को हरती और क्रिमिरोग तथा घावों को दूर करती है।

वटपत्री के नाम और गुण

वटपत्री के चार नाम--वटपत्री, मोहिनी, दीपिनी और रेचनी। यह कसैली व गरम है। योनि के रोगों को नष्ट करती है। इसका फल स्तम्भन करनेवाला और ठंढा है। वायु को पैदा करता है तथा कफ और पित्त को जीतता है।

लज्जालू के नाम और गुण

लज्जालू के दस नाम--लज्जालु, मोहिनी, स्पृक्का, खदिरी, गन्धकारिणी, नमस्कारी, शमी, पत्री, समङ्गा और रक्त-पादिका। यह ठंढी, तीखी और कसैली है। कफ व पित्त को जीतती है तथा रक्तपित्त, अतीसार और योनिरोगों को दूर करती है।

१--इसे छुईमुई और लाजवन्ती भी कहते हैं।

मुसली के नाम और गुण

मुसली के आठ नाम--मुसली, खलिनी, तालपत्री, काञ्चनपुष्पिका, महावृक्षा, वृक्षकन्दा, खर्जूरी और तालमूलिका। यह मीठी है। वीर्य में गरम, धातुवर्द्धक और भारी है। रसायन है। तीखी है। गुदा के रोगों को नष्ट करती है। वातनाशक है।

केवाँच के नाम और गुण

केवाँच[1] के नव नाम--कपिकच्छु, स्वयंगुप्ता, कण्डूला, दुरवग्रहा, चण्डा, आत्मगुप्ता, लांगूली, मर्कटी और प्रहर्षिणी। यह पुरुषार्थ को उपजाती है। मीठी है। धातु को बढ़ाती है और भारी है। इसका बीज वात को शान्त करता है और उत्तम वाजीकरण है।

जीयापोता के नाम और गुण

जीयापोता के चार नाम--पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टीपुत्र और अर्थसाधन। यह भारी है। वीर्य को बढ़ाता है। गर्भदायक है। कफ और वात का नाशक है।

बाँझककोड़ी के नाम और गुण

बाँझककोड़ी के आठ नाम--बन्ध्याकर्कोटकी, देवी, कुमारी, विषनाशिनी, मनोज्ञा, नागदमनी, बन्ध्य और योगेश्वरी। यह हलकी होती है। कफ और घावों को शोधती है। साँप के काटे को अच्छा करती है। तीखी है। विसर्परोग और विष को हरती है।

विष्णुक्रान्ता के नाम और गुण

विष्णुक्रान्ता के पाँच नाम--विष्णुक्रान्ता, नीलपुष्पी,

१--खजोहरा की फली।

जया, वश्या और अपराजिता। यह कड़वी और बुद्धिवर्द्धिनी है। क्रिमि, घाव और कफ को जीतती है।

शङ्खाहूली के नाम और गुण

शङ्खाहूली के सात नाम--शङ्खपुष्पी, शङ्खनाम्नी, किरीटी, कम्बुमालिनी, शंखाहूली, स्मृतिहिता और वर्णविलासिनी। यह दस्तावर है। बुद्धि और स्मृति को बढ़ाती है। मन में विकार को लाती है। रसायन, कसैली और गरम है। मोह और प्रमेह को मिटाती है।

दूधी के नाम और गुण

दूधी के चार नाम--दुग्धिका, मधुपर्णी, क्षीरिणी और स्वादुपुष्पिका। यह गरम, भारी, रूखी और बादी है। गर्भकारक, मीठी और वीर्यवर्द्धक है। कफ, कुष्ठ और क्रिमिरोगों को जीतती है।

अर्कपुष्पी के नाम और गुण

अर्कपुष्पी[1] के चार नाम--अर्कपुष्पी, क्रूरकन्दा, जलकामा और अभिरण्डिका। यह क्रिमि, कफ, प्रमेह और पित्तविकारों को दूर करती है।

भिलावाँ के नाम और गुण

भिलावाँ[2] के नव नाम--भल्लातक, नभोवल्ली, वीरवृक्ष, अग्निवक्त्रक, आरुष्कर, रूक्ष, तपन, अग्निमुखी और धनुष्। यह कसैला, गरम, वीर्यवर्द्धक, मीठा और हलका है। वायु, कफ, जलोदर, अफरा, कोढ़, बवासीर, संग्रहणी, बायगोला, ज्वर, सफेद कोढ़, मन्दाग्नि, क्रिमिरोग और फोड़ों को अच्छा करता है।

१--[illegible] । २--इसका पानी लगने से छाले पड़ जाते हैं और धूएँ से सूजन हो जाती है।

चरपोटा के नाम और गुण

चरपोटा के चार नाम--चरपोटा, दीर्घपत्री, कुन्तली और तिक्तका। यह ठंढी, रूखी और भेदनी है। दमा और खाँसी को खोती है।

गूमा के नाम और गुण

गूमा के नव नाम--द्रोणपुष्पी, श्वसनक, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रक, द्रोणा, कौडिन्य और वृक्षसारक। यह भारी, रूखी, स्वादिष्ठ और गरम है। वायु व पित्त को नष्ट करती है। भेदनी और कड़वी है। कामला, वायु, सूजन, कफ और क्रिमिरोग को हरती है।

ब्राह्मी व ब्राह्ममण्डूकी के नाम और गुण

ब्राह्मी के पाँच नाम--ब्राह्मी, सरस्वती, सोमा, सत्याह्वा और ब्रह्मचारिणी। ब्राह्ममण्डूकी के नव नाम--मण्डूकपर्णी, माण्डूकी, त्वष्ट्री, दिव्या, महौषधि, कपोतविट्का, मुनिका, लावण्या और सोमवल्लरी। यह ठंढी, दस्तावर, मीठी, हलकी, बुद्धिवर्द्धिनी और रसायन है। स्वर को शुद्ध करती है। स्मृति और शक्ति को बढ़ाती है। कोढ़, पाण्डु, प्रमेह, रक्त और खाँसी को दूर करती है। विष, सूजन और ज्वर को हरती है। ये ही सब गुण ब्राह्ममण्डूकी में भी जानना चाहिए।

सौंचली व ब्रह्मसौंचली के नाम और गुण

सौंचली या ब्रह्मसौंचली के सात नाम--सुवर्चला, अर्ककान्ता, सूर्यभक्ता, सुखोद्भवा, सूर्यावर्ता, रविप्रीता और ब्रह्मसुवर्चला। यह भारी, ठंढी और मूत्र को उपजाती है। वात और कफ को जीतती है। दूसरी गरम और हलकी है। कोढ़, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वर को हरती है।

१--दस्तावर।

मछौंछी के नाम और गुण

मछौंछी के चार नाम——मत्स्याक्षी, बालिका, मत्स्य-गन्धी और मत्स्यादनी। यह मल को बाँधती है और ठंढी है। कोढ़, पित्त, कफ और रक्तदोष को नष्ट करती है।

जलपीपल के नाम और गुण

जलपीपल के चार नाम——तोयपिप्पली, अम्बुबल्ली, पलूर और कश्चट। यह हृदय को सुखदायक और नयनों को हितकर है। वीर्य को पैदा करती है। मल को बाँधती है। ठंढी, रूखी और हलकी है। रक्त-दोष, दाह और घावों को लाभ पहुँचाती है।

गोभी के नाम और गुण

गोभी के पाँच नाम——गोजिह्वा, गोजिका, गोभी, दार्विका और स्वरपर्णिनी। यह वात को उपजाती, मल को बाँधती, ठंढी, हलकी और हृदय के लिए हितकर है। कफ, पित्त, प्रमेह, खाँसी, रक्तदोष, घाव और ज्वर को हरती है।

नागदमनी के नाम और गुण

नागदमनी के चार नाम——नागाह्वा, दमनी, नागगन्धा और भुजंगपर्णिनी। यह शरीर के रंग को अच्छा बनाती है। मकड़ी और साँप के विष को हरती है।

लालचिरमिटी व सफ़ेदचिरमिटी के नाम और गुण

लालचिरमिटी[२] के पाँच नाम——गुञ्जा, शिखण्डिका, ताम्रा, रक्तिका और काकनासिका। सफ़ेद चिरमिटी के पाँच नाम——श्वेता, चक्रिका, चूडा, दुर्मुखा और काकपीलु। यह बालों को बढ़ाती है। बलदायक है। बिगड़ी खाल को सुधारती, पित्त और कफ को मिटाती है। नयनों के रोगों को

१——[illegible]। २——घुँघची।

हरती और पुरुषार्थ को बढ़ाती है। खुजली, ग्रहपीड़ा, फोड़ा, क्रिमि, बालों का झड़ जाना तथा कोढ़ इसके सेवन से दूर होता है। ये ही गुण सफ़ेद चिरमिटी में भी वैद्यों ने कहे हैं।

वरवेलि के नाम और गुण

वरवेलि के चार नाम—वेलान्तर, दीर्घपत्र, वीरद्रु और बहुवारक। यह पथरी को तोड़कर निकाल देती है। क़ब्ज़ पैदा करती है। कफ, मूत्रकृच्छ्र और वायु को जीतती है।

वन्दाक के नाम और गुण

वन्दाक[1] के आठ नाम—वन्दाक, वृक्षरुहा, शेखरी, कामवृक्षक, वृक्षादनी, कामतरु, कामिनी और आपदरोहिणी। यह कण्ठ को साफ़ करता है। वातरक्त, सूजन, घाव और विष को हरता है।

पिण्डार के नाम और गुण

पिण्डार के चार नाम—पिण्डार, करहाट, तीक्ष्णकाल और कुरंगक। यह मीठा और ठंढा है। सूजन, पित्त और कफ को नष्ट करता है।

नकछिकनी के नाम और गुण

नकछिकनी के छः नाम—छिक्किका, क्षवक, क्रूर, नासा, संवेदना और पटु। यह पित्त को पैदा करती है। कोढ़, क्रिमि, वात और कफ को मिटाती है।

रोहेरु के नाम और गुण

रोहेरु के नव नाम—रोहित, दाडिमीपुष्प, रोहीत, कूटशाल्मलि, प्लीहा, रोहिणी, रोही, रक्तघ्न और पारिजातक।

१—यह बाँदा पेड़ों की डालियों में लग जाता है। पेड़ में से न काटा जाय तो पेड़ को नष्ट करके सब वृक्ष इसी का हो जाता है। गाँवों में प्रायः इससे चमड़ा पकाया जाता है।

यह दस्तावर है। बायगोला, यकृत् और प्लीहोदर को विनाशता है।

मोचरस के नाम और गुण

मोचरस के सात नाम—मोचक, मोचरस, शाल्मली-वेष्टक, मोचनिर्यासक, पिच्छा, मोचास्रावी और वेष्टक। यह ठंढा और भारी है। मल को बाँधता, अतीसार को दबाता और पुरुषार्थ को बढ़ाता है। प्रवाहिका, खाँसी, रक्तपित्त, कफ और दाह को दूर करता है।

अजमोद (बवरी) के नाम और गुण

अजमोद के अजगन्धा, बस्तगन्धा, कवरी और पूत-पर्वर, ये चार नाम हैं। यह हलकी, भोजन में रुचि बढ़ाती व हृदय के लिए हितकर है। कफ व वात को मिटाती है।

पियाबासा के नाम और गुण

पियाबासा के आठ नाम—सैरेयक, सहचर, सैरेय, किङ्किरातक, दासीसहचर, किरण्टी, शैर्षक और मृदुकंटक। लाल फूलवाले पियाबासा का नाम 'कुरुबक' पीले फूलवाले का 'कुरण्टक' तथा नीले फूलवाले का 'आर्तगल' है। इसी को 'बाणा' व 'गोदनपाकी' भी कहते हैं।

यह कोढ़, वात, रक्तदोष, कफ, खुजली और विष को नष्ट करता है। तीखा, गरम और मीठा है। बालों को बढ़ाता, चिकना और स्याह कर देता है।

हरमल के नाम और गुण

हरमल के नव नाम—श्वेतस्यन्दा, श्वेतपुष्पा, कटभि, गिरिकर्णिका, सिता, अपराजिता, श्वेता, विषघ्नी और मेहनाशिनी। नीलस्यन्दा, व्यक्तगन्धा, नीलपुष्पा और गवा-

दिनी, ये चार नाम सफ़ेद हरमल के हैं। ये दोनों ठंढे और ग्रहपीड़ानाशक हैं। दृष्टि को कुण्ठित करते हैं। कोढ़, शूल, त्रिदोष, आम, सूजन, घाव और विष को दूर करते हैं।

तालमखाने के नाम और गुण

तालमखाने के आठ नाम--इक्षुर, क्षुरमेधाण्ड, कोकिलाक्ष, क्षुरक, तैलकण्ड, तिक्षरिक्षु, बालिका और इक्षुगन्धिका। यह ठंढा, भारी तथा वातरक्त और कफ का नाशक है।

कपास के नाम और गुण

कपास के कार्पास, पटशूल, छादवनी, वादर और पिचु, ये पाँच नाम हैं। यह गरम और मीठा है। वायु को दबाता है। इसका बीज (बिनौला) स्तनों में दूध पैदा करता और पुरुषार्थ को बढ़ाता है। चिकना, कफ बढ़ानेवाला और भारी है।

आरामशीतला के नाम और गुण

आरामशीतला के देवी, गन्धा और कुक्कुरमर्दन, ये तीन नाम और हैं। यह ठंढी, कड़वी तथा पित्त, कफ और रक्तनाशक है।

करौंदे के नाम और गुण

करौंदे के कुक्कुरद्रु, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र और मृदुच्छद, ये चार नाम और हैं। यह कड़वा और तीखा है। ज्वर, रक्त और कफ को नष्ट करता है।

वामी के नाम और गुण

वामी के शङ्खधरा, वारिब्राह्मी और हिलमोचिका, ये तीन नाम और हैं। यह सूजन को मिटाती तथा कोढ़, पित्त, कफ और वायु को हटाती है।

सरफोंका के नाम और गुण

सरफोंका के शरपुंखा, कालशाक, प्लीहारी और कालका, ये चार नाम हैं। यह यकृत्, तापतिल्ली, दुष्टघाव, विष, खाँसी, लोहू, दमा और ज्वर को नष्ट करती है। तीखी, कसैली और हलकी है।

बलामोटा के नाम और गुण

बलामोटा के जया, सूक्ष्मपत्रा और अपराजिता, ये तीन नाम और हैं। यह विष, कफ और मूत्रकृच्छ्र को मिटाती और विजयदायक है।

सुदर्शना के नाम और गुण

सुदर्शना के सोमवल्ली चक्राङ्का और मधुपर्णिका, ये तीन नाम और हैं। यह स्वादिष्ठ और गरम है। कफ, सूजन, रक्त और वात को दबाती है।

मोरशिखा क नाम आर गुण

मोरशिखा के मयूराह्वा, शिखा, साहस्री और मधुकच्छदा, ये चार नाम और हैं। यह हलकी होती है और पित्त, कफ तथा अतिसार को नष्ट करती है।

लक्ष्मणा के नाम और गुण

लक्ष्मणा[1] के पुत्रदा, रक्ता, बिन्दुपत्रा और नागिनी, ये चार नाम और हैं। इसके फूल गोदुग्ध के समान सफ़ेद होते हैं। इसकी बेल होती है। पत्तों पर रोएँ और लाल लाल बूँदें सी होती हैं। यह गर्भदायक, ठंढी और दस्तावर है। पुरुषार्थ को बढ़ाती और त्रिदोषों को मिटाती है।

१—कोई इसके अभाव में सफ़ेद फूल की छोटी कटेली लेते हैं।

मांसरोहिणी के नाम और गुण

मांसरोहिणी के अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकसा और कसा, ये चार नाम और हैं। यह पुरुषार्थ को बढ़ाती, तीनों दोषों को दूर करती और दस्तावर है।

हड़सिंहार के नाम और गुण

हड़सिंहार के अस्थिसंहारक, वज्रवल्लरी, कोष्ठु, घण्टिका, वज्राङ्गी, ग्रन्थिमान्, वज्रप्रोक्ता और अस्थि-शृङ्खला, ये आठ नाम हैं। यह ठंढा है, धातु को बढ़ाता है, वात को दूर करके हड्डियों को जोड़ता है।

आक के नाम और गुण

आक दो प्रकार का होता है। दोनों के अर्क, सूर्याह्वय, क्षीरी, सदापुष्प, विकीरण, मन्दार, वसुक, अलर्क, राजाह्व और दीर्घपत्रक, ये दस नाम हैं। ये दोनों शङ्खवात, कोढ़, खुजली, विष, फोड़े, पिलही, बायगोला, बवासीर, कलेजे की सूजन, कफ, उदररोग और क्रिमिरोगों को नष्ट करते हैं।

सफ़ेद व लाल कनेर के नाम और गुण

सफ़ेद कनेर के करवीर, अश्वहा, श्वेतपुष्पा और शतपुष्पक, ये चार नाम हैं, और लाल कनेर के रक्तपुष्प, चण्ड, लगुड, करवीरक, ये चार नाम हैं। दोनों नेत्रपीड़ा, सूजन, खुजली और फोड़ों को नष्ट करते हैं। हलके और गरम हैं। क्रिमिनाशक हैं। खाने में विष के समान हैं।

धतूरे के नाम और गुण

धतूरे के धतूर, कितव, धूर्त, देवता, मदन, शठ, उन्मत्त, मातल, तूरी, तरक और कनकाह्वय, ये ग्यारह नाम हैं। यह नशा लाता है। शरीर के रंग को निखारता है।

अग्नि को बढ़ाता है। छर्दि को उपजाता और कोढ़, गजकोढ़ तथा ज्वर का नाशक है। गरम व भारी है। फोड़े, कफ, खुजली, क्रिमि और विष को दूर करता है।

कलिहारी के नाम और गुण

कलिहारी के वह्निमुखी, लाङ्गली, गर्भपातिनी, कलिकारी, विशल्या, हलिनी, शीरी, प्रभाता, शुक्लपुष्पिका, विद्युत्, उल्का, अग्निजिह्वा, पुष्पसी, भरा, वह्निशिखा, अग्निका और नलरन्ध्री, ये सत्रह नाम हैं। यह दस्तावर, तीखी, गरम और हलकी है। कोढ़, सूजन, बवासीर, फोड़े, क्रिमिरोग और शूल को अच्छा करती है। पित्त को उत्पन्न करती और गर्भ को गिराती है।

घीकुवार के नाम और गुण

घीकुवार के कुमारी, मण्डला, माता, गृहकन्या, अतिपिच्छला, रसायनी, कटिकिनी, सवरा और वनोद्भवा, ये नव नाम हैं। यह भेदिनी और ठंढी है। कलेजे की सूजन, पिलही, कफ और ज्वर को मिटाती है। ग्रन्थि, विस्फोट, रक्तपित्त और खाल के रोगों को हरती है।

भाँग के नाम और गुण

भाँग के भङ्गा, अङ्गजा, मातुलानी, मोहिनी, विजया और जया, ये छः नाम हैं। यह कफ को हरती, मल को बाँधती और अग्नि को बढ़ाती है। कड़वी, हलकी, दीपन और गरम है। पित्त को उपजाती और अफरा तथा नशा करती है।

काञ्चनी के नाम और गुण

काञ्चनी के शोणफलिनी, काकायु और काकवल्लरी, ये तीन नाम और हैं। यह स्त्री के स्तनों में दूध को उपजाती

है। माथे की पीड़ा और त्रिदोषों को नष्ट करती है।

दूब के नाम और गुण

नीली दूब के दूर्वा, शष्पा, शीतकरी, गोलोमी और शतपर्विका, ये पाँच नाम हैं। सफ़ेद दूब के श्वेता, श्वेतदण्डा, भार्गवी, दुर्मता और रुहा, ये पाँच नाम हैं। ये दोनों ठंढी हैं। विसर्प, रक्त, प्यास, पित्त, कफ और दाह को दबाती हैं।

गण्डदूब के नाम और गुण

गण्डदूब के गण्डदूर्वा, मत्स्यगन्धा, मत्स्याक्षी और शकुलादिनी, ये चार नाम हैं। यह ठंढी और हलकी है। मल को बाँधती है। दाह, प्यास, कफ, रक्तदोष, कोढ़ और पित्तज्वर को नष्ट करती है।

काश के नाम और गुण

काश (काँस तृण) के काश, सुकाण्ड, काशेक्षु, ऋषीक, श्वेतवासर, इक्ष्वारिका, इक्षुकाश और इक्षुरस, ये आठ नाम हैं। यह ठंढा है। मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तदोष और पित्त का नाश करनेवाला है।

कुश (डाभ) के नाम और गुण

कुश के दर्भ, बर्हि, कुश, तीक्ष्ण, सूच्यग्र और यज्ञभूषण, ये छः नाम हैं। यह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्यास, पित्त और बस्तिरोग को मिटाता है तथा कफ और रक्तदोष को हरता है।

मूँज के नाम और गुण

मूँज के मुञ्ज, क्षुरा, स्थूलदर्भ, बाणाह्व और ब्रह्ममेखल, ये पाँच नाम हैं। यह शीतल है। विसर्प, रक्तदोष, मूत्ररोग, बस्तिरोग और नेत्ररोग को अच्छा करती है।

नरसल के नाम और गुण

नरसल के नल, रन्ध्री, पुष्पमृत्यु, दमन, अनन्तक और

पिट, ये छः नाम हैं। यह मूत्रकृच्छ्र, दाह, रक्तदोष, कफ, पित्त और विसर्प का नाशक है।

बाँस के नाम और गुण

बाँस के वंश, वेणु, कीचक, कर्मार और त्वक्सार, ये पाँच नाम हैं। यह दस्तावर और ठंढा होता है। पित्त, कफ, दाह, रक्त और सूजन को दबाता है। इसका अँखुआ भारी और भेदी है। कफ को बढ़ाता और वातपित्त का विनाश करता है। इसकी जड़ भी भेदक व बहुत गरम है। कफ, वात और पित्त को दूर करती है।

खुरासानी अजवायन के नाम और गुण

खुरासानी अजवायन के जवानी, जवनी, तीव्रा, तुरुष्का और मदकारिणी, ये पाँच नाम हैं। यह जीवनी, रूखी और भारी है। मल को बाँधती और मदकारी है।

पोस्त के नाम और गुण

पोस्त के तिलभेद, खसतिल, शुभ्रपुष्प और लसत्फल, ये चार नाम हैं। यह धातुवर्द्धक, कफकारक, वातनाशक, भारी और पुरुषार्थ बढ़ानेवाला है। इसके फलों का छिलका रूखा और विशेषकर मल को बाँधनेवाला है।

अफीम के नाम और गुण

अफीम के आफूक, तद्रसोद्भूत, अहिफेन और सफेनक, ये चार नाम हैं। यह सुखानेवाली है। मल को बाँधती, कफ को मिटाती तथा वात और पित्त को बढ़ाती है।

छिलिहिण्डा के नाम और गुण

छिलिहिण्डा के महामूल, पाताल और गरुडाह्वय, ये तीन नाम और हैं। यह अतिबलकारक, वातनाशक और कफ को बढ़ानेवाला है।

दूसरा वर्ग

सोंठ के नाम और गुण

सोंठ के शुण्ठी, विश्वौषध, विश्व, कटुभद्र, कटूत्कट, महौषध, शृङ्गवेर, नागर और विश्वभेषज, ये नव नाम हैं। यह भोजन में रुचि को उपजाती तथा आमवात, कफ, अफरा और वात को नष्ट करती है। पाचनी, कड़वी, हलकी, चिकनी, गरम और पाक में चरफरी है। धातु को पुष्ट करती, स्वर को बढ़ाती तथा छर्दि, दमा, खाँसी, शूल, हृदयरोग, फीलपाँव, सूजन, बवासीर, मलमूत्रावरोध, जलोदर और वात के रोगों को दूर करती है।

अदरक के नाम और गुण

अदरक के आर्द्रक, शृङ्गवेर और महौषध, ये तीन नाम हैं। इसमें सोंठ के समान गुण होते हैं। यह भेदन, दीपन, भारी, कड़वा और गरम है। पुरुषार्थ को बढ़ाता तथा भोजन में रुचि पैदा करता है। दमा, खाँसी, छर्दि, हिचकी, वात, कफ और अफरा को मिटाता है।

मिर्च के नाम और गुण

मिर्च के मरीच, वल्लिज, तीक्ष्ण, मलिन और श्याम-भूषण ये पाँच नाम हैं। यह कड़वी, तीखी, दीपन, पित्त-कारिणी, गरम और रूखी है। कफ, वात, दमा, शूल और क्रिमिरोगों को अच्छा करती है। गीली मिर्च पाक में मीठी तथा अति गरम नहीं है। कड़वी, भारी व कुछ तीखे गुणोंवाली है। कफ को निकालती तथा पित्त को नहीं बढ़ाती है।

पीपल के नाम और गुण

पीपल के पिप्पली, चपला, कृष्णा, मागधी, मगधा,

कणा, विश्वा, उपकुल्या, वैदेही, शौण्डी और तीक्ष्णतण्डुला, ये ग्यारह नाम हैं। यह मन्दाग्नि रोग को लाभ पहुँचाती है। पुरुषार्थ को बढ़ाती है। पाक में मीठी और रसायनी है। बहुत गरम नहीं होती। कड़वी, चिकनी, हलकी है। कफ और वात को हरती है। पित्त को पैदा करती और दस्तावर है। दमा, खाँसी, उदररोग, ज्वर, कोढ़, प्रमेह, बायगोला, बवासीर, पिलही, शूल और आमवात को नष्ट करती है। गीली पीपल कफदायक, चिकनी, मीठी और भारी है।

त्र्यूषण (त्रिकुटा) व चतुरूषण के नाम और गुण

सोंठ, पीपल और मिर्च के मिलाने से त्र्यूषण (त्रिकुटा) होता है। इसके कटुक, कटु, व्योष और कटुत्रय, ये चार नाम हैं। पीपलामूल के मिलाने से यही 'चतुरूषण' कहाता है। यह मन्द अग्नि को प्रज्वलित करता है। खाँसी, दमा, त्वचा के रोग, बायगोला, प्रमेह, कफ, स्थूलता, चर्बी का बढ़ना, फीलपाँव और पीनसरोग इसके सेवन से अच्छे होते हैं।

पीपलामूल के नाम और गुण

पीपलामूल के कणामूल, कटु, ग्रन्थि, पिप्पलीमूल, ऊषण, षड्ग्रन्थ, ग्रन्थिक, मूल, मागध और चटिकाशिर, ये दस नाम हैं। यह दीपन, कड़वा, गरम, पाचन, हलका, रूखा और भेदी है। पित्त को बढ़ाता तथा कफ, वात और उदररोग का विनाशक है।

चव्य के नाम और गुण

चव्य के चवण, उच्छिष्ट, चविका और कोलवल्लिका, ये चार नाम और हैं। इसमें पीपलामूल के समान गुण होते हैं। विशेषकर गुदा के रोगों को हरता है। इसका

ल भी विष, दमा, खाँसी और क्षयीरोग का नाशक है।

गजपीपल के नाम और गुण

गजपीपल के तत्फल, श्रेयसी, हस्तिमागधा, गजपिप्पली और गजकृष्णा, ये पाँच नाम और हैं। यह कड़वा और गरम है। अग्नि को बढ़ाती है। वात, कफ, अतीसार, दमा, कंठरोग और क्रिमिरोगों की विनाशक है।

चीत के नाम और गुण

चीत के चित्रक, हुतभुक्, व्याल, दारुण, दहन, अरुण, अग्निमाली, हविःपाची और वह्नि, ये नव नाम हैं। यह पाक में कड़वा, अग्निवर्धक, पाचक, हलका, रूखा और गरम है। संग्रहणी, कोढ़, सूजन, बवासीर, क्रिमि और खाँसी को अच्छा करता है। कफ, वात को हरता है। मल को बाँधता है। इसका साग भी कफ व वात का विनाशक है।

पञ्चकोल के नाम और गुण

पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ और चीता, इन पाँचा के मिलाने से 'पञ्चकोल' बनता है। यह कफ, अफरा, गोला, शूल और अरुचि को हरता है।

मिर्च, पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ और चीता, यह षडूषण है। इसमें भी पञ्चकोल के समान गुण जानना चाहिए।

सौंफ के नाम और गुण

सौंफ के शतपुष्पा, शतव्योषा, शताह्वा, कारवी, मिशि, अवाक्पुष्पी और त्वचिच्छत्रा, ये सात नाम हैं। शतिका और मागधी, ये दो नाम दूसरी सौंफ के हैं। यह हलकी, गरम, तेज, दीपनी और कड़वी है। ज्वर, वात, कफ, फोड़े, शूल और आँख के रोगों को हरती है।

सफ़ेद सौंफ़ में भी ये ही गुण हैं। परन्तु यह योनिशूल को विशेष रूप से हरती है।

सोया के नाम और गुण

सोया के मिश्रेया, मिशि, शालीन, शाली और शीतशिवा, ये पाँच नाम हैं। यह अग्नि को बढ़ाता है। हृदय के लिए हितकर है। मलावरोध, क्रिमि और वीर्यरोग का विनाशक है। रूखा और गरम है। इसका फल खाँसी, छर्दि, कफ और वात की औषध है।

मेथी व वनमेथी के नाम और गुण

मेथी व वनमेथी के मेथिका, बस्तिका, शेलु, रोहिती और वनमेथिका, ये पाँच नाम हैं। यह दीपनी है। हृदय को सुखदायक है। विष्ठा के क्रिमियों को दूर करती है। शूल, वीर्यरोग, बायगोला, वात और कफ को हरती है। वनमेथी में इससे अल्पगुण होते हैं। यह घोड़ों के लिए लाभदायक है।

अजमोद के नाम और गुण

अजमोद के अत्युग्रगन्धा, मोदा, हस्तिमयूरक, खराह्वा, कारवी, वल्ली, बस्तमोदा और मर्कट, ये आठ नाम और हैं। यह कड़वा, तीखा, दीपन, हलका, गरम, दाहकारक और हृदय के लिए लाभदायक है। धातु को बढ़ाता और मल को बाँधता है। नेत्रपीड़ा, क्रिमिरोग, छर्दि, सेहुवाँ और बस्तिरोग का नाशक है।

(१) सफ़ेद ज़ीरा

सफ़ेद ज़ीरे के जीरक, दीर्घक, शुक्ल, अजाजी और कणजीरक, ये पाँच नाम हैं।

(२) स्याह ज़ीरा

स्याह ज़ीरे के जीरक, जरण, कृष्ण और वर्षाकाल-सुगन्धिक, ये चार नाम हैं।

(३) कलौंजी के नाम और गुण

कलौंजी के कालिका, वाष्पिका, कुञ्चि, कारवी, उपकुञ्चिका, पृथ्वीका, सुषवी, पृथ्वी, स्थूलाजाजी और उपकालिका, ये दस नाम हैं। ये तीनों रूखे, कड़वे, गरम, दीपन और हलके हैं। मल को बाँधते, पित्त को उपजाते और बुद्धि को बढ़ाते हैं। गर्भाशय का शोधन करते हैं। आँखों के लिए आनन्ददायक हैं। वात, अफरा, बायगोला, छर्दि और कफ को नष्ट करते हैं।

अजवायन के नाम और गुण

अजवायन के यवानी, दीप्यक, दीप्य, दीपनीया, यवानिका, यवसाह्वा, उग्रगंधा, यवाह्वा और भूकदंबक, ये नव नाम हैं।

यह तीखी, गरम, कड़वी और हलकी है। वात, कफ, उदररोग, अफरा, बायगोला, शूल और क्रिमिरोग को नष्ट करती है। पाचन है। रुचि को बढ़ाती है।

चौहार के नाम और गुण

चौहार के यवानीया, यवानी और जन्तुनाशन, ये तीन नाम और हैं। इसमें अजवायन के समान गुण वैद्यों ने कहे हैं। परन्तु विशेष रूप से क्रिमिनाशक है।

बबई के नाम और गुण

बबई के अजगन्धा, पूतिकीटा, वर्वरी, पूतिवर्वर, कारवी, खरपुष्पा, तुङ्गी और पूतिमयूरक, ये आठ नाम हैं। यह कड़वी, तेज़, रूखी, हलकी और हृदय के लिए हित-

कर है। अग्नि को बढ़ाती है। दृष्टि को मन्द करती है। वीर्य, वात और कफ की विनाशक है।

(१) घोड़बच के नाम

घोड़बच के जटिला, शतपर्वा, लोमशा और हेमवती, ये चार नाम हैं।

(२) दुधबच के नाम और गुण

दुधबच[1] के वचा, उग्रगन्धा, गोलोमी, षड्ग्रन्था और जटिला, ये पाँच नाम हैं। यह गरम, कड़वी और तीखी है। छर्दि को लाती, स्वर और अग्नि को बढ़ाती तथा मिर्गीरोग, कफ, उन्माद, भूतदोष, शूल और वात को नष्ट करती है।

हाऊबेर के नाम और गुण

हाऊबेर के हपुषा, वपुषा, विश्वा, विगन्धा और विश्वगन्धिका, ये पाँच नाम हैं। यह तीखा, कड़वा, गरम, कसैला और भारी है। पित्त, उदररोग, वात, बवासीर, ग्रहणी, सूजन और बायगोला का विनाशक है।

बायबिड़ङ्ग के नाम और गुण

बायबिड़ङ्ग के बिड़ङ्ग, जन्तुहनन, क्रिमिघ्न, क्षुद्रतण्डुला, भूतघ्नी, तण्डुला, घोषा, कराला और मृगगामिनी, ये नव नाम हैं।

यह कड़वी, तीखी, गरम, रूखी और हलकी है। बायगोला, अफरा, उदररोग, कफ, क्रिमि, वात और मलमूत्रावरोध को दूर करती है।

धनिया के नाम और गुण

धनिया के धान्याक, धान्यक, धान्य, धानेय, वितुन्नक और कुस्तुम्बुरु, ये छः नाम हैं। धानी, धानेय और कालुका

१—प्रायः खाने में 'दुधबच' को ही लेते हैं।

ये तीन नाम हरी धनिया के हैं। यह कसैली, हलकी, रूखी और चिकनी है। वीर्य को नहीं बढ़ाती। मूत्र को बढ़ाती है। हृदय के लिए हितकारक है। मल को बाँधती है। पाक में मीठी है। पाचक है। त्रिदोषों को हरती है। दमा, खाँसी, रक्तदोष, प्यास, आमवात, बवासीर और क्रिमिरोग की नाशक है। ये ही गुण हरी धनिया में भी हैं। परन्तु वह विशेष रूप से स्वादिष्ठ और पित्त की विनाशक है।

हिंगु पत्री के नाम और गुण

हिंगुपत्री के पृथुस्तन्वी, पृथ्वीका, चारुपत्रिका, बाष्पिका, कारवी, तन्द्री, बिल्विका और दीर्घिका, ये आठ नाम और हैं।

दूसरी हिंगुपत्री के हिंगुपत्री, वेणुपत्री, हिंगुशिवाटिका, जन्तुका, रामठी, नाडी, पिण्डा और हिंगुफला, ये आठ नाम हैं। ये दोनों हृदय के लिए बलकारक हैं। तीखी, गरम, पाचक और कड़वी हैं। पेट के रोग, बस्तिरोग, क़ब्ज़, बवासीर, कफ, बायगोला और वात को नष्ट करती हैं।

हींग के नाम और गुण

हींग के हिंगु, वाह्लीक, अत्युग्र, रामठ, भूतनाशन, अगूढ़गन्धा, जरण, जन्तुघ्न और सूपभूषण, ये नव नाम हैं। यह गरम, पाचन, रोचन और तीक्ष्ण है। कफ, वात, शूल, बायगोला, उदररोग, अफरा और क्रिमियों को दूर करती है और पित्त को बढ़ाता है।

वंशलोचन के नाम और गुण

वंशलोचन के वंशजा, वैष्णवी, क्षीरी, त्वक्क्षीरी, वंशरोचना, तुगाक्षीरी, तुगा, वंशी, वंशक्षीरी, शूभा और

सिता, ये ग्यारह नाम हैं। यह पुष्टिकारक है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। ठंढा और मीठा है। प्यास, क्षयी, ज्वर, दमा, खाँसी, रक्तपित्त और कामला को नष्ट करता है।

सेंधानमक के नाम और गुण

सेंधानमक के सैन्धव, सिन्धुज, शुद्ध, माणिमन्थ और पटूत्तम, ये पाँच नाम हैं। यह हृदय और नेत्रों के लिए हितकर है। मीठा, ठंढा, हलका, पाचक, दीपन और चिकना है। पुरुषार्थ को बढ़ाता और त्रिदोषों को नष्ट करता है।

कालनमक के नाम और गुण

काले नमक के सौवर्चल, सुगन्धाख्य, रुच्यक और हृद्यगन्धक, ये चार नाम हैं। यह अग्निवर्द्धक, कड़वा, गरम, रुचिकर और हलका है। डकारों को शुद्ध करता है। पतला है। कब्ज, अफरा और शूल का विनाशक है।

विडनमक के नाम और गुण

सोंचरनमक के विड, कृत्रिमक, पाक्य, धूर्त, द्राविड और आसुर, ये छः नाम हैं। यह हलका और गरम है। मल को बाँधता है। हृद्रोग, भारीपन, अरुचि, अफरा, कफ और शूल को मिटाता है। अधोवायु का अनुलोमन करता है, अर्थात् कफ को ऊपर की ओर और वात को नीचे की ओर निकालता है।

पाँगा नमक के नाम और गुण

पाँगानमक के सामुद्र, वारिसंभूत, अक्षीव और आसुर, ये चार नाम हैं। यह अग्निवर्द्धक और स्वादिष्ठ होता है। भेदी, कड़वा, तीखा और रूखा है। कफकारी है। वात को

दबाता है। पित्त को बहुत नहीं उपजाता। बहुत गरम भी नहीं है।

रेहनमक के नाम और गुण

रेहनमक के औद्भिद, भूमिज, भौम, पार्थिव और पृथिवी-भव, ये पाँच नाम हैं। यह रक्त को बढ़ाता है। पतला और हलका है तथा वात का अनुलोमन करता है।

साँभरनमक के नाम और गुण

साँभरनमक के गण्डाख्य, रोमलवण, रोम और शाकंभरीभव, ये चार नाम हैं। यह हलका और भेदी है। वायु को दबाता है। बहुत गरम है। मूत्र को पैदा करता है।

खारीनमक के नाम और गुण

खारीनमक के क्षार, पांसुभव, औष, औषर, पाँसव और वसु, ये छः नाम हैं। यह भारी, कड़वा और चिकना है। कफ को उपजाता और वायु को नष्ट करता है।

काचनमक के नाम और गुण

काचनमक के काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण और काचसम्भव, ये पाँच नाम हैं। यह अग्नि को प्रदीप्त करता है। बहुत गरम है। विशेष रूप से रक्तपित्त को बढ़ाता है।

जवाखार के नाम और गुण

जवाखार के यवक्षार, सूकपाक्य, यवसूक और यवाग्रज, ये चार नाम हैं। यह अग्नि को बढ़ाता है। वात, कफ, दमा, गलरोग, आमवात, बवासीर, ग्रहणी, बायगोला, कलेजे की सूजन और तापतिल्ली में लाभदायक है।

सज्जी के नाम और गुण

सज्जी के स्वार्जिका, स्वर्जिकापाक्य, सुखपाक्य और सुवर्चिका, ये चार नाम हैं। इसमें जवाखार से कम गुण हैं।

विशेष रूप से बायगोला और शूल को मिटाता है।

सुहागे के नाम और गुण

सुहागे के टङ्कण, मालतीजात, द्रावी और लोहविशुद्धिद, ये चार नाम हैं। यह अग्निवर्द्धक और रूखा है। कफ और वातपित्त का नाशक है।

थूहरखार के नाम और गुण

थूहरखार[1] के सुधाह्वय, सुधा, सौधभूषण और कटुशर्करा, ये चार नाम हैं। इसका खार तेज है, अर्थात् अग्नि के समान है। पकाने और फोड़नेवाला तथा क्लेदी है।

सर्वक्षार के नाम और गुण

टेसू, तिलकनाल, गोखुरू, केला, ऊंगा, मदार, सेहुँड़ और मोषा आदि से उपजे जो खार हैं, वे अग्नि के समान पाचन, भेदन, तीखे, हलके और फाड़नेवाले हैं। वीर्य को उत्पन्न करते हैं। क्लेदी हैं। दृष्टि को धुँधला करते हैं। रक्तपित्तकारक हैं। मलमूत्रावरोध, अफरा, पीनस, यकृत्, तिल्लीरोग, कफ, आमवात, गोला, बवासीर, संग्रहणी और क्रिमियों को नाशते हैं।

तीसरा वर्ग

कपूर आदि के नाम और गुण

कपूर के कर्पूर, स्फटिक, चन्द्र, सिताभ्र, हिमबालुक, हिमोपल, शीतरज, भूतिक, हिमाह्वय, हिमाभ्र, घनसार और चन्द्राह्व, ये बारह नाम हैं। यह ठंढा, हलका और लेखन है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। नेत्रों के लिए हितदायक है।

[1]—सुधाक्षार।

कफ, दाह, मुख का विरस होना, मेदोरोग, सूजन और विष का विनाशक है।

कस्तूरी व लताकस्तूरी के नाम और गुण

कस्तूरी के कस्तूरिका, मृगमद, वेदमुख्या, मृगाण्डज और मृगनाभि, ये पाँच नाम हैं। दूसरी कस्तूरी को लता-कस्तूरी माना है। यह पुरुषार्थ को बढ़ाती है। भारी, कड़वी और गरम है। कफ और शीत को दबाती है। विष, वमन, सूजन, दुर्गन्ध और वातरोगों की विनाशक है। ये ही गुण लताकस्तूरी में भी जानना चाहिए। विशेष रूप से नयनों के लिए हितकारी, ठंढी और हलकी है।

मार्जारीकस्तूरी के नाम और गुण

मार्जारीकस्तूरी के मार्जारी, पूतिका, पूतिकचा और गन्ध-चेलिका, ये चार नाम हैं। यह मतली को उत्पन्न करती है। नेत्रों के लिए हितकारक है। कफ और वात की नाशक है।

चन्दन के नाम और गुण

चन्दन के तिलपर्ण, महार्ह, श्वेतचन्दन, भद्राश्रय, मल-यज, गोशीर्ष और गन्धसारक, ये सात नाम हैं। यह ठंढा, रूखा, कड़वा, हलका और आनंद देनेवाला है। हृदय में गुण धारण करनेवाला है। वर्ण को बदलता है। विष, कफ, प्यास, पित्तरक्त और दाह का नाशक है।

लालचन्दन के नाम और गुण

लालचन्दन के रक्तचन्दन, उद्दिष्ट, लोहित, क्षुद्रचन्दन, ताम्रसार, रक्तसार, ज्योतिःसोम और रञ्जन, ये आठ नाम हैं। यह ठंढा, भारी, स्वादिष्ठ और कड़वा है। छर्दि, प्यास और रक्तपित्त को हटाता है। नेत्रों के लिए हितकर

है। पुरुषार्थ को बढ़ाता, ज्वर को हरता और विष का विनाशक है। मलयागिरिचन्दन के नाम और गुण

मलयागिरिचन्दन के कालीयक, पीतसार, पीत और नारायणप्रिय, ये चार नाम हैं। इसमें लालचन्दन के समान गुण होते हैं। विशेषकर वात का नाश करनेवाला है।

काले अगुरु के नाम और गुण

काले अगुरु के कृष्णागुरु, अगुरु, राजार्ह, विश्वरूपक, जोङ्गक, शीतमलिन, क्रिमिजघ्न और नक्कक, ये आठ नाम हैं। यह गरम और हलका है। कर्णरोग और नेत्ररोग को दूर करता है। पित्त को पैदा करता है।

केसर के नाम और गुण

केसर के कुंकुम, चारु, वाह्लीक, वर्ण्य, अग्निशिख, वर, काश्मीर, पीत, अभ्राह्व, संकोच, पिशुन और अंशुक, ये बारह नाम हैं। यह कड़वी और गरम है। सेहुआँ, शिर के शूल, घाव और क्रिमियों को नष्ट करती है। उत्साह और बल उत्पन्न करती है। व्यङ्ग और तीनों दोषों को दूर करती है।

लोबान के नाम और गुण

लोबान के सिह्लक, कपिज, धूम्र, तुरुष्क, पिण्डित और कपि, ये छः नाम हैं। यह कोढ़ और खुजली का नाशक, चिकना और गरम है। वीर्य और कान्ति को बढ़ाता है।

एलुवा के नाम और गुण

एलुवा के एलवालुक, एल्वालु, वालुक और हरिवालक, ये चार नाम हैं। यह ठंढा और हलका है। खुजली, कोढ़, कफ, क्रिमिरोग, प्यास, छर्दि, कफपित्त, रक्तदोष और मूत्र-रोगों का नाशक है।

जायफल के नाम और गुण

जायफल के जातीफल, जातिसूत, शलूक और मालतीसुत, ये चार नाम हैं। यह हलका, दीपन, पाचन और गरम है। स्वर को सुधारनेवाला है। हृदय के लिए हितकर है। कफ, वात, वमन, क्रिमि, पीनस और खाँसी में लाभ पहुँचाता है।

जावित्री के नाम और गुण

जावित्री के जातीपत्री, जातिपर्णा और मालतीपत्रिका, ये तीन नाम हैं। यह हलकी और गरम है। कफ, क्रिमि और विष को दूर करती है।

लौंग के नाम और गुण

लौंग के लवङ्ग, शिखर, दिव्य, लव, चन्दनपुष्पक, श्रीपुष्प, देवकुसुम, भृङ्गार और वारिसम्भव, ये नव नाम हैं। यह हलकी, दीपन, आँखों के लिए हितकारी और हृदय के लिए हितकर है। शूल, अफरा, कफ, दमा, खाँसी, छर्दि और क्षयरोग में लाभदायक है।

कङ्कोल के नाम और गुण

कङ्कोल के कटुक, कोल, मारीच और माधवोषित, ये चार नाम और हैं। यह गरम है। हृदयरोग, कफ, वात और मन्दाग्नि को जीतता है।

छोटी इलायची के नाम और गुण

छोटी इलायची के एला, त्रुटि, चन्द्रबाला, बहुला, निष्कुटि, त्विषा, कपोतवर्णा, सूक्ष्मैला, कुनटी और द्राविडी, ये दस नाम हैं। यह कफ, दमा, खाँसी, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र को मिटाती है।

बड़ी इलायची के नाम और गुण

बड़ी इलायची के स्थूलैला, त्रिपुटा, कन्या, भद्रा, एला और त्रिदिवोद्भवा, ये छः नाम हैं। यह रुचि को उपजाती, थुकथुकी को लाती और पित्त को नष्ट करती है। तीखी, हलकी और गरम है। विष, बस्तिरोग, मुखरोग, शिरोरोग, छर्दि और खाँसी को दूर करती है।

दालचीनी के नाम और गुण

दालचीनी के त्वच, वराङ्ग, सकल, त्वक्कोच, तनुक, वर, लाटपर्ण्य, घन, भृङ्ग, गुरुत्वक् और स्वर्णभूमिक, ये ग्यारह नाम हैं। यह हलकी, गरम, कड़वी, विषनाशक और मीठी है। पित्त को बढ़ाती है। हृद्रोग, बस्तिरोग, वात, बवासीर, पीनस, क्रिमि और वीर्यरोग को दूर करती है।

तेजपात के नाम और गुण

तेजपात के पत्र, दलाह्व, ताम्रूम, तमाल, रोमु और रोमश, ये छः नाम हैं। यह गरम और हलका है। कफ, हृल्लास (थुकथुकी , बवासीर और वात का नाशक है।

नागकेसर के नाम और गुण

नागकेसर के नागकेसरक, नाग, चाम्पेय, केसर और गज, ये पाँच नाम हैं। यह रूखी, गरम और हलका है। आम को पचाती है। दुर्गन्ध, कोढ़, विसर्प, कफ, पित्त और विष को नष्ट करती है।

(१) त्रिजात या त्रिसुगन्धक

इलायची, दालचीनी और तेजपात, इनको त्रिजात या त्रिसुगन्धक कहते हैं।

(२) चतुर्जात

नागकेसर, इलायची, दालचीनी और तेजपात, इनको चतुर्जात कहते हैं। ये दोनों वात और कफ के विनाशक हैं।

तालीस के नाम और गुण

तालीस के तालीसपत्र, धात्रीपत्र, सकोदन, अपर, ग्रन्थिकापत्र, पत्राढ्य और तुलसीच्छद, ये सात नाम और हैं। यह हलका, तीखा और गरम है। दमा, खाँसी, कफ, वात, गोला, आमवात, मन्दाग्नि और क्षयी को नष्ट करता और रुचि को उपजाता है।

सरल के नाम और गुण

सरल के सरल, मदन, चण्ड, नमेरु और पीतवृक्षक, ये पाँच नाम हैं। यह कण्ठ, कर्ण तथा नेत्र के रोगों को नष्ट करता है। गरम, हलका और कड़वा है।

श्रीवास के नाम और गुण

श्रीवास के श्रीवास, वेष्टक, दासी, श्रीनिवास और कलिद्रुम, ये पाँच नाम हैं। यह कफ, शिरोरोग, नेत्ररोग को हरता है और दस्तावर है।

नेत्रबाला के नाम और गुण

नेत्रबाला के बालक, वारि, ह्रीवेर, पिङ्ग, आचमन, कच, उदीच्य, वज्र, मन्थाह्व, वरिष्ठ और गन्धमूलक, ये ग्यारह नाम हैं। यह ठंढा, रूखा और हलका है। अग्नि को बढ़ाता है। पाचक है। रक्तपित्त, ज्वर, कफ, दाह, प्यास और घावों का विनाशक है।

जटामांसी व बालछड़ के नाम और गुण

जटामांसी के मांसी, जटा, भूतकेशी, क्रव्याद, अनलद और शिखा, ये छः नाम हैं। और बालछड़ के कृष्णा,

पूतनाकेसी, गन्धमांसी और पिशाचिका, ये चार नाम हैं। यह ठंढी है। त्रिदोष, रक्त, दाह, विसर्प और कोढ़ का नाश करती है।

खस के नाम और गुण

खस के उशीर, अभय, सेव्य, वार, वीरणी और मूलिका, ये छः नाम हैं। यह पाचक, ठंढा और स्तम्भनकारी है। कफ, पित्त का नाशक है। प्यास, रक्त, विष, विसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र और घावों को नष्ट करता है।

गगनधूरि के नाम और गुण

गगनधूरि के रेणुका, कपिला, कौन्ती, पाण्डुपत्री और हरेणुका, ये पाँच नाम हैं। यह पित्त को उपजाती, बुद्धि को बढ़ाती, अग्नि को जगाती और गर्भ को गिराती है।

प्रियंगु के नाम और गुण

प्रियंगु के प्रियंगु, फलिनी, श्यामा, कान्ताह्वा, नन्दनी व लता, ये छः नाम हैं। यह ठंढा है। वमन, दाह, पित्तज्वर और रक्तरोग को जीतता है। मुख में कान्ति को उपजाता और देह की दुर्गन्ध को मिटाता है।

पारिपेल के नाम और गुण

पारिपेल के प्लव, वन्य, शुकाह्व और परिपेलक, ये चार नाम और हैं। यह ठंढा है। खुजली, कोढ़, रक्तदोष, कफ और पित्त को दूर करता है।

छरीला के नाम और गुण

छरीला के शैलेय, स्थविर, वृद्ध, शिलापुष्प और शिलोद्भव, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढा, हलका और हृदय के लिए हितकारक है। कफपित्त को नष्ट करता है।

कुन्दुरू के नाम और गुण

कुन्दुरू के कुन्दुरू, मेचक, कुन्द, खपुर, भीषण और

बली, ये छः नाम हैं। यह पसीना लाता है। वात, कफ, व्रणरोग और ज्वर को दूर करता है।

गूगुल के नाम और गुण

गूगुल के गुग्गुल, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलंकष, जटायु, कौशिक, धूर्त, देवधूप, शिव और पुर, ये दस नाम हैं। यह उज्ज्वल, चर्परा, वीर्य में गरम है। मीठा, पतला, दीपन, चिकना, बलकारी और दस्तावर है। टूटे को जोड़ता, पुरुषार्थ को बढ़ाता और बिगड़े स्वर को सुधारत है। रसायन है। कफ, वात, घाव, अपची, मेदोरोग, प्रमेह, रक्तवात, रक्तस्वेद, कोढ़, आमवात, फुन्सी, गाँठ, सूजन, बवासीर, गलगण्ड और क्रिमि का नाशक है। नया गूगुल वीर्य को बढ़ाता है। धातु को पुष्ट करता है। पुराना गूगुल अतीव लेखन है।

राल के नाम और गुण

राल के राल, सर्जरस, यक्षधूप, सर्ज, अग्निवल्लभ, क्षणक, सालनिर्यास, लाक्षा, ललन और वर, ये दस नाम हैं। यह ठंढी, भारी, तीखी और कसैली है। संग्रहणी, ग्रहदोष, रक्तरोग, पसीना, विसर्प, विष, घाव और बिवाँइयों को दूर करती है।

थुनेरा के नाम और गुण

थुनेरा के स्थौणेयक, बहिश्चूड, शुक्रवर्ण और शुक्रच्छद, ये चार नाम हैं। यह ठंढा है। पुरुषार्थ को उपजाता और बुद्धि को बढ़ाता है। त्रिदोष और रक्तरोग को दूर करता है।

चौरक के नाम और गुण

चौरक के कितव, चंद्र, दुष्पुत्र, शङ्कित और रिपु, ये पाँच

नाम हैं। यह मीठा, ठंढा और हलका है। कोढ़, वात, कफ और रक्तरोग को जीतता है।

मुरा के नाम और गुण

मुरा के गन्धवती, दैत्य, गन्धाढ्या, सुरभि और कुटि, ये पाँच नाम और हैं। यह ठंढी और हलकी है। कुष्ठ, ग्रहदोष, पित्त और वातरक्त को मिटाती है।

कचूर के नाम और गुण

कचूर के कर्चूर, द्राविड़, गन्धमूलक, दुर्लभ और शटी, ये पाँच नाम हैं। यह मन्द अग्नि को जगाता और रुचि को उपजाता है। गरम और हलका है। कोढ़, बवासीर, घाव, दमा, खाँसी, कफ, बायगोला, वात और क्रिमियों को दूर करता है।

कचूरभेद के नाम और गुण

कचूरभेद के शटी, पलाशी, षड्ग्रन्था, सुव्रता और गन्धमूलिनी, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढा और हलका है। ज्वर, आमवात, रक्तरोग और खाँसी को मिटाता और मल को बाँधता है।

अस्परक के नाम और गुण

अस्परक[1] के स्पृक्का, स्पृक्, ब्राह्मणी, देवी, निर्माल्या, कुटिका और वधू, ये सात नाम और हैं। यह मीठी और ठंढी है। पुरुषार्थ को बढ़ाती है। कुष्ठ, अलक्ष्मी और त्रिदोषों की विनाशक है।

ठिवना के नाम और गुण

ठिवना[2] के ग्रन्थिपर्ण, नीलपुष्प, शुकपुष्प और शुकच्छद, ये चार नाम और हैं। यह हलका, तीखा, रुचिकारी और गरम है। वात और कफ को हरता है।

नलिका के नाम और गुण

नलिका के नर्तकी, शून्या, निर्मला, धमनी और नटी, ये

१—'असवर्ग'। २—'गठौना'।

म्भिनी है। पित्त, कफ, विष और रक्तदोष को दूर करती है। ये ही गुण कुमोदिनी के भी वैद्यों ने माने हैं।

पद्मचारिणी के नाम और गुण

पद्मचारिणी के अतिचरा, पद्माह्वा और चारटी, ये तीन नाम और हैं। यह ठंढी और हलकी है। कफ व मूत्रकृच्छ्र को जीतती है। स्तनों में दाह करती है।

(१) सफ़ेदकमल के नाम

सफ़ेद कमल के कमल, श्वेताम्भोज, सारस, सरसीरुह, सहस्रपत्र, श्रीगेह, शतपत्र, कुशेशय, पङ्केरुह, तामरस, राजीव, पुष्कराह्वय, अब्ज, अम्भोरुह, पद्म, पुण्डरीक, पङ्कज, नल, सरोज, नलिन, अरविन्द और महोत्पल, ये बाईस नाम हैं।

(२) लालकमल के नाम

लालकमल के रक्तोत्पल, कोकनद, हल्लक और रक्त-सन्ध्यक, ये चार नाम हैं।

(३) नीलकमल के नाम

नीलकमल के नीलोत्पल, कुवलय, भद्र और इन्दीवर, ये चार नाम हैं। यही यदि कुछ सफ़ेदी लिये हो तो "कुमुद, कैरव और कुमुत्" कहा जाता है।

कमलों के गुण

सफ़ेद कमल ठंढा, वर्ण को निखारनेवाला और मीठा है। कफ, पित्त, प्यास, दाह, रक्तदोष, विस्फोट, विष और विसर्प का विनाशक है। लाल और नीले कमल में सफ़ेद कमल से कम गुण होते हैं।

कह्लार के नाम और गुण

कह्लार के ह्रस्वपाथोज, सौम्य और महत्सौगन्धिक, ये

तीन नाम और हैं। यह मल को बाँधता है। रूखा और भारी है। बड़ी शीतलता का उत्पादक है।

कमलकेसर के नाम और गुण

कमलकेसर के किञ्जल्क, केसर, गौर, आपीत और काञ्चनाह्वय, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढी है। मल को बाँधती है। खूनी बवासीर, कफ और पित्त को दबाती है।

कमलबीज के नाम और गुण

कमलबीज के पद्मबीज, कालेय, पद्माक्ष और पद्मकर्कटी, ये चार नाम हैं। यह ठंढा, मीठा, बलदायक और भारी है। गर्भ को स्थापित करता और मल को बाँधता है। वात, कफ, पित्त, रक्तदोष और दाह को दबाता है।

कमलमूल के नाम और गुण

कमलमूल[1] के मृणाल, बिस, अम्भोज, नाल, नलिनीरुह, पद्मादिमूल, शालूक, शालीन और करहाटक, ये नव नाम हैं। यह ठंढा, मीठा, रूखा और भारी है। वीर्य को बढ़ाता और मल को बाँधता है। पित्त, दाह और रक्तदोष को मिटाता है। यही गुण शालूक में भी हैं।

चमेली के नाम और गुण

चमेली के जाती, प्रियंवदा, राज्ञी, मालती, सुमना, पीता, सत्यपरा, पीतपुष्पा और काञ्चनपुष्पिका, ये नव नाम हैं। यह हलकी और गरम है। शिरोरोग, नेत्ररोग, दन्त-रोग, घाव और रक्तदोष को नष्ट करती है।

मालती के नाम और गुण

मालती के मल्लिका, मोदिनी, मुक्तबन्धना और मद-

१—कहीं "भिस, भसीड़ा" कहते हैं। इसका शाक बनता है।

यन्तिका, ये चार नाम और हैं। यह गरम, हलकी और वीर्य को बढ़ाती है। वात, पित्त और रक्तरोग को जीतती है।

जूही के नाम और गुण

जूही के यूथिका, हरिणी, बाला, पुष्पगन्धा, शिखण्डिनी और स्वर्णयूथी, ये छः नाम हैं। पीली जूही के पीता, गणिका और स्वर्णपुष्पिका, ये तीन नाम हैं। य दोनों ठंढी हैं। रक्तरोग, शिरोरोग और नेत्ररोग को दूर करती तथा कफ और वात को बढ़ाती हैं।

सेवती के नाम और गुण

सेवती के कुब्जका, भद्रतरुणी, बृहत्पुष्पा, महासहा, शतपत्री, तरुणी, कर्णिका और चारुकेशरा, ये आठ नाम हैं। लाल सेवती के रक्ता, रक्तपुष्पा, लाक्षापुष्पा और अतिमञ्जुला, ये चार नाम हैं। दोनों ठंढी, हलकी, हृदय को हित-कारक, मल को बाँधती और वीर्य को उपजाती हैं। त्रिदोष, रक्तरोग को मिटाती और बिगड़े वर्ण को सुधारती हैं। ये ही गुण कुब्जका में भी होते हैं।

केतकी व स्वर्णकेतकी के नाम और गुण

केतकी के सूचिकापुष्प, जम्बूक और क्रकचच्छद, ये तीन नाम और हैं। स्वर्णकेतकी के सुवर्णकेतकी, लघुपुष्पा और सुगन्धिनी, ये तीन नाम हैं। ये दोनों कड़वी, मीठी, हलकी और तीखी हैं। कफ को दबाती हैं।

वासन्ती के नाम और गुण

वासन्ती के सारणी, कुन्दा, प्रहसन्ती और वसन्तजा, ये चार नाम और हैं। यह ठंढी, हलकी, तीखी और त्रिदोषों को हरती है।

नेवारी के नाम और गुण

नेवारी के नेपाली, ग्रैष्मिका, लूना, लापिनी और वनमल्लिका, ये पाँच नाम हैं। वर्षावाली नेवारी के वार्षिकी, त्रिपुढा, श्रीमती और षट्पदप्रिया, ये चार नाम हैं।

दोनों ठंढी, तीखी और हलकी हैं। त्रिदोषों को हरती हैं। कर्णरोग, नेत्ररोग और मुखरोग की विनाशक हैं। ये ही गुण वर्षावाली नेवारी में भी हैं।

माधवी के नाम और गुण

माधवी के मण्डप, कामी, पुष्पेन्द्र और अभीष्टगन्धक, ये चार नाम और हैं। यह मीठी, ठंढी और हलकी है तथा त्रिदोषों को हरती है।

चम्पा के नाम और गुण

चम्पा के चम्पक, काचर, रम्य, चाम्पेय, सुरभि और चल, ये छः नाम हैं। यह ठंढी है। मूत्रकृच्छ्र, कफ, पित्त और रक्तवात को जीतती है।

संदेशरा के नाम और गुण

संदेशरा के पुन्नाग, पाटलीपुष्प, केसर और षट्पदालय, ये चार नाम हैं। इसे नागकेसर भी कहते हैं। यह मीठा और ठंढा है। रक्तपित्त और कफ का विनाशक है।

मौलसिरी के नाम और गुण

मौलसिरी के बकुल, केसर, मध्यगन्ध, सिंह और विशारद, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढा है। कफ, पित्त, दन्तरोग और मद का विनाशक है। इसका फल वायु को उत्पन्न करता, मल को बाँधता तथा कफ, पित्त को हरता है। ठंढा है

बघौला के नाम और गुण

बघौला के वुष, बुक, स्थूलपुष्प, वसुक और शिवशोधक, ये पाँच नाम हैं। यह ठंडा है। विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और दाह को हरता है।

कुन्द के नाम और गुण

कुन्द के शुक्ल, सदापुष्प, भृङ्गबन्धु और मनोरम, ये चार नाम और हैं। यह ठंडा और हलका है। कफ, शिरोरोग, विष और पित्त को लाभदायक है।

मुचुकुन्द के नाम और गुण

मुचुकुन्द के क्षेत्रवृक्ष, चिबुक और प्रतिविप्लुष, ये तीन नाम और हैं। यह शिरोरोग, रक्तपित्त और मुखरोग का विनाशक है।

बेला के नाम और गुण

बेला के भूमण्डली, विचिच्छिन्न, द्विपदा और अष्टपदी, ये चार नाम हैं। यह ठंडा और हलका है। कफ, पित्त और विष का विनाशक है।

तिलक के नाम और गुण

तिलक के क्षुरक, श्रीमान्, विचित्र और मुखमण्डन, ये चार नाम और हैं। यह बड़ा गरम और रसायन है। कफ को कम करता तथा कुष्ठ को हरता है।

मतिपाड़ी के नाम और गुण

मतिपाड़ी के गणेरुक, कर्णिकार, कर्ण और गणकारिका, ये चार नाम हैं। यह शोधन है। सूजन, कफ, रक्तदोष, घाव और कोढ़ को नष्ट करता है।

१—यह मौलसिरी का ही भेद है। २—गेंदा।

दुपहरिया के नाम और गुण

दुपहरिया के बन्धुजीव, शरत्पुष्प, बन्धु, बन्धूक और रक्तक, ये पाँच नाम हैं। यह कफकारी, हलका और मल को बाँधनेवाला है। वात, पित्त को हरता है।

गुड़हल के नाम और गुण

गुड़हल के जपापुष्प, जपारक्त, त्रिसन्ध्या, अरुणा और असिता, ये पाँच नाम हैं। यह मल को बाँधती और बालों को बढ़ाती है। कफ और पित्त को जीतती है।

सिन्दूरी के नाम और गुण

सिन्दूरी के रक्तबीजा, रक्तपुष्पा और सुकोमला, ये तीन नाम और हैं। यह ठंढी है। कफ, पित्त, रक्तदोष, प्यास और वमन को हरती है।

तुलसी के नाम और गुण

तुलसी के सुरसा, गौरी, भूतघ्नी और बहुमञ्जरी, ये चार नाम और हैं। यह कड़वी, तीखी, दीपनी, गरम और हृदय के लिए हितकारी है। दाह और पित्त को हरती है। कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, पसलीशूल, कफ और वात को जीतती है।

मरुवा के नाम और गुण

मरुवा के मरु, मरुवक, तीक्ष्ण, खरपुष्प और फणिज्झक, ये पाँच नाम हैं। यह अग्निवर्द्धक, हृदय के लिए हितकर, तीखा, गरम, हलका और पित्तवर्द्धक है। बीछू आदि के विष, कफ, वात, कोढ़ और क्रिमियों को नष्ट करता है तथा रक्तविकार से पैदा हुई सूजन को लेप करने से दूर करता है।

१—जासवंद, जवापुष्प। २—क्वचित्—दाहपित्तकृत्, इति पाठः। (कहीं दाह, पित्त को करती है।) ऐसा भी पाठ है।

दौना के नाम और गुण

दौना के मदन, मदना, दान्त, दम. मुनिसुत, मुनि, गन्धोत्कट, मदनक, विनीता और कुलपुत्रक, ये दस नाम हैं। यह नेत्ररोग, कोढ़, लोहू, मेदोरोग, खुजली और त्रिदोषों को दूर करता है।

तीनों मल्लिकाओं के नाम और गुण

श्याममल्लिका (वनतुलसी) के वर्वरी, वर्जक, कुण्ठ, वैकुण्ठ, कुठेरक, कपित्थार्जक, वटपत्र, कटिञ्जर, कृष्णार्जक, कालमास, कराल और कृष्णमल्लिका, ये बारह नाम हैं

यदि यह काले रंग की हो तो इसे 'कठिल्लक' और 'कुठेरक' कहते हैं।

सफ़ेद रंगवाली को 'अर्जक' और तीसरी को 'वटपत्र' कहते हैं। ये तीनों रूखी, ठंढी और कड़वी हैं। दाहकारक और पित्तवर्द्धक हैं। कफ, वात, रक्त, दाद, क्रिमि और विष की विनाशक हैं।

चौथा वर्ग

सुवर्ण आदि के नाम और गुण

सोने के सुवर्ण, काञ्चन, हेम, हाटक, तप्तकाञ्चन, चामीकर, शातकुम्भ, तपनीय, रुक्मक, जाम्बूनद, हिरण्य, स्वर्ण और जातरूपक, ये तेरह नाम हैं। यह ठंढा, भारी, कसैला, कड़वा और मीठा है। वीर्यवर्द्धक, आयुवर्द्धक, बलकारी है। कान्तिकारी और अत्यन्त लेखन है। विष, घबराहट, त्रिदोष, ज्वर और शोष को मिटाता है।

१—बबई।

चाँदी के नाम और गुण

चाँदी के रूप्यक, रजत, रूप्य, तार, श्वेत और वसूत्तम, ये छः नाम हैं। यह ठंढी, दस्तावर, रसायन, लेखन और कसैली है। वात, पित्त को हरती है। पाक में खट्टी है।

दूसरी चाँदी चिकनी है। दस्तावर है। आयु को बढ़ाती है तथा धातुओं के लिए हितकारी है।

ताँबे के नाम और गुण

ताँबे के ताम्र, म्लेच्छमुख, शुल्ब, नैपाल, रविनामक, उदुम्बर, सूर्यप्रिय, रक्तज और रक्तधातुक, ये नव नाम हैं। यह दस्तावर, हलका, मीठा और ठंढा है। पित्त और कफ को कम करता है। घावों को भरता है। पाण्डु, कोढ़, बवासीर, सूजन, दमा और खाँसी को नष्ट करता है।

काँसे के नाम और गुण

काँसे के कांस्य, लोह, निज, घोष, पञ्चलोह और प्रकाशक, ये छः नाम हैं। यह भारी, गरम, नेत्रों के लिए हितकारक और दस्तावर है। कफ और पित्त का नाशक है।

पीतल के नाम और गुण

पीतल के पीतलोह, सिंहलक, कपिल, सौकुमारक, वर्तलोह, त्रिलोह, राजरीति और माहेश्वरी, ये आठ नाम हैं। यह ठंढी, रूखी, कड़वी और गरम है। कफ तथा पित्त की नाशक है।

राँगे के नाम और गुण

राँगे के रङ्गक, तीरक, वङ्ग, त्रपु, करटी और घन, ये छः नाम हैं। यह हलका, रूखा, दस्तावर और गरम है। प्रमेह, कफ, क्रिमि, पाण्डु और दमा को दूर करता है। पित्त को कुछ बढ़ाता है।

जस्ते के नाम और गुण

जस्ते के जसद, रङ्गसदृश और दितिहेतु, ये तीन नाम हैं। यह कसैला, तीखा, ठंढा और नेत्रों के लिए हितकारी है। कफ, पित्त, प्रमेह, पाण्डु और दमे का विनाशक है।

सीसे के नाम और गुण

सीसे के सीस, धातुमल, नाग, उरग, परिपिष्टक, जवनेष्ठ, भुजग, विसृष्टक और कृष्णक, ये नव नाम हैं। इसमें राँगे के समान गुण जानना चाहिए। विशेष रूप से सब प्रमेहों का विनाशक ।

लोहे क नाम और गुण

लोहे के लोह, शस्त्र, अयः, कुष्ठ, व्यङ्ग, पारावत और घन, ये सात नाम हैं। लौहमल के कृष्णायस, तन्मल, किट्ट, मण्डूर, लोहज और रज, ये छः नाम हैं।

यह दस्तावर, ठंढा, भारी, रूखा, मीठा और कसैला है। कफ और पित्त को हरता है। नेत्रों को हितकारी और बलदायक है। वात को उत्पन्न करता है। सूजन, कोढ़, प्रमेह, बवासीर, कृत्रिम विष, पाण्डु और क्रिमियों का नाशक है।

लोहे के ही गुण लोहकिट्ट में भी जानने चाहिए। परन्तु विशेष रूप से पाण्डुरोग को नष्ट करता है।

पारे के नाम और गुण

पारे के पारद, चपल, हेमनिधि, सूत, रसोत्तम, त्रिनेत्र, रोषण, स्वामी, हरबीज, रस, प्रभु, रसन्द्र, रसलोह और महारस, ये चौदह नाम हैं। यह क्रिमि और कोढ़ को दूर करता है। आँखों के लिए हितकारी, गरम और रसायन है।

अबरख के नाम और गुण

अबरख के अभ्रक स्वच्छ, आकाश, पटल, वरपीतक, ये

पाँच नाम हैं। यह भारी, ठंढा और बलकारक है। कुष्ठ, प्रमेह और त्रिदोषों को दूर करता है। सेवन किया हुआ अबरख क्रिमि, कुष्ठ और प्रमेह को नष्ट करता है। उज्ज्वल है। वीर्य-वर्द्धक और अग्निवर्द्धक है, ऐसा प्राचीन मुनियों ने कहा है।

गन्धक के नाम और गुण

गन्धक के गन्ध, सौगन्धक, लेखी, गन्धाश्मा, गन्ध-पीतक, लेलीतक, बलिवसा, वेगन्ध और बलि, ये नव नाम हैं। यह पाक में कड़वा और वीर्य में गरम है। पित्त को उत्पन्न करता और दस्त को लाता है। कोढ़, क्षयी, ताप-तिल्ली, कफ, वात और पारे से उत्पन्न रोगों को हरता है।

सोनामाखी के नाम और गुण

सोनामाखी के माक्षिक, धातुमाक्षीक, ताप्य और तापीज, ये चार नाम हैं। यह कसैली और हलकी है। पुरुषार्थ को बढ़ाती, बिगड़े स्वर को सुधारता और आँखों के लिए हितकारक है। रसायन है। कोढ़, सूजन, बवासीर, प्रमेह, बस्तिरोग, पाण्डु, उदररोग, विष और क्षयी को दूर करती है। मैथुन में आनन्ददायक और कड़वी है।

मैनसिल के नाम और गुण

मैनसिल के मनःशिला, शिला, गोला, नैपाली, कुनटी, कुला, दिव्यौषधि, नागमाता, मनोगुप्ता और मनोम्बिका, ये दस नाम हैं। यह खाज को हरनेवाली, दस्तावर, गरम, लेखन, कड़वी, तीखी और चिकनी है। विष, दमा, खाँसी, भूतदोष, कफ और रक्तविकार को हरती है।

हरताल के नाम और गुण

हरताल के हरिताल, अल, ताल, गोदंत और नटभूषण,

ये पाँच नाम हैं। यह कड़वा, चिकना, कसैला और गरम है। विष, खुजली, कोढ़, मुखरोग, कफ, पित्त और बाल-ग्रह दोषों को दूर करता है।

गेरू व सोनागेरू के नाम और गुण

गेरू के गैरिक, रक्तपाषाण, गिरिमृत् और गवेधुक, ये चार नाम हैं। सोनागेरू के स्वर्णवर्ण, स्वर्णमण्डल और स्वर्णगैरिक, ये तीन नाम हैं। यह दाह, पित्त, रक्तदोष, कफ, हिचकी और विष को दूर करती है। आँखों के लिए हित-कारी है। यही गुण सोनागेरू में भी हैं। परन्तु विशेष रूप से यह वमन को रोकती है।

(१-२) नीलाथोथा के नाम और गुण

नीलाथोथा के तुत्थ, कर्पूरिकातुत्थ, अमृतासङ्ग और मयूरग्रीवक, ये चार नाम हैं।

दूसरे को शिखिकण्ठ कहते हैं। यह लेखन और भेदन है। खुजली, कोढ़, विष, कफ और क्रिमियों का नाशक है।

दूसरा नीलाथोथा नेत्रों के लिए हितकारी और उत्तम है।

(१-२) कसीस के नाम और गुण

हीरा कसीस के कासीस, धातुकासीस, खेचर और तप्त-लोमश, ये चार नाम हैं। दूसरे कसीस के पुष्पकासीस, तुवर और वस्त्ररागधृक्, ये तीन नाम हैं।

ये दोनों खट्टे, गरम और कड़वे हैं। बालों को बढ़ाते हैं आँखों के लिए हितकारी हैं तथा खुजली, विष, सफ़ेद कोढ़, मूत्रकृच्छ्र, कफ और वात के विनाशक हैं।

सिंगरफ़ के नाम और गुण

सिंगरफ़ के हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, सैकत और चूर्णपारद,

ये पाँच नाम हैं। यह पित्त, कफ, विष और कोढ़ को दूर करता है। आँखों के लिए हितकारी है।

सिन्दूर के नाम और गुण

सिन्दूर के नागज, रक्त, श्रीमत्, शृङ्गारभूषण, वसन्त-मण्डन, नागरक्त और रक्तरज, ये सात नाम हैं। यह गरम है। विसर्प, कुष्ठ, खुजली और विष का विनाशक है। टूटे को जोड़ता है। घावों को शुद्ध करके भरता है।

सुरमे के नाम और गुण

सुरमे के सौवीर, अञ्जन, कृष्ण, कालनील, सुवीरज, स्रोताञ्जन, स्रोतोज, नदीज, यामुन और वर, ये दस नाम हैं।

यह ग्राही, मीठा, ठंढा और नेत्रों के लिए हितकारी है। वात और कफ को जीतता है। सेहुआँ और क्षयी को नष्ट करता है। ये ही गुण स्रोतोञ्जन में होते हैं।

रसौंत के नाम और गुण

रसौंत के रसाञ्जन, रसोद्भूत, तार्क्ष्य, शैल, तार्क्ष्यज, रसाग्रच, कृत्रिम तार्क्ष्य, दार्व्य और दार्वीरसोद्भव, ये नव नाम हैं। यह कड़वा, छेदन, गरम, तीखा और रसायन है। कफ, मुखरोग और नेत्ररोग का नाशक है। घावों के दोषों को दूर करके शीघ्र अच्छा करता है।

पुष्पाञ्जन के नाम और गुण

पुष्पाञ्जन के पुष्पकेतु, रीतिज और कुसुमाञ्जन, ये तीन नाम हैं। यह खारी और गरम है। काच, अर्म और पटल का नाशक है।

शिलाजीत के नाम और गुण

शिलाजीत के शिलाजतु, उष्णज, शैल, निर्यास, गिरि-

शाह्वय, शिलाह्व, गिरिज, शैल, शैलेय और गिरिजतु, ये दस नाम हैं। यह गरम, कड़वा, योगवाही और रसायन है। छर्दि, प्रमेह, बादी, बवासीर, कोढ़, मुखरोग, उदररोग, पाण्डुरोग, दमा, क्षयी, उन्माद, रक्तदोष, सूजन, कफ और क्रिमियों का विनाशक है।

बोल के नाम और गुण

बोल के गन्धरस, वीर, निर्लोह, बर्वर, चल, सुगन्धि, नालिका, पिण्ड और रसगन्ध, ये नव नाम हैं।

यह दो प्रकार का होता है। रक्तहारी, ठंढा, बुद्धिवर्द्धक, अग्निवर्द्धक और पाचक है। ज्वर, मिरगीरोग और कोढ़ को मिटाता है। गर्भाशय का शोधक है।

(१-२) फिटकरी के नाम और गुण

फिटकरी के स्फटिकाख्या, मृता, बाष्पी, काक्षी और सौराष्ट्रसंभवा, ये पाँच नाम हैं। दूसरी फिटकरी के आढ़की, तुवरी, मृत्तिका और सुरमृत्तिका, ये चार नाम हैं।

यह कसैली और गरम है। कफ, पित्त, विष, घाव, सफ़ेद कुष्ठ और विसर्प को मिटाती है।

यही गुण तुवरी (दूसरी फिटकरी) में भी हैं।

समुद्रफेन के नाम और गुण

समुद्रफेन के हिण्डीर, फेन, वारिकफ और द्विज, ये चार नाम और हैं। यह नयनों के लिए हितकारी, लेखन, शमनक और फैलनेवाला है।

मूँगे के नाम और गुण

मूँगे के प्रवाल, विद्रुम, सिन्धु, लताग्र और रक्तवर्णक,

ये पाँच नाम हैं। यह पुष्टि, कान्ति और बल का देनेवाला है। पुरुषार्थ और वीर्य को बढ़ाता है।

मोती के नाम और गुण

मोती के मौक्तिक, तौतिला, मुक्ताफल, मुक्ता और शुक्तिज, ये पाँच नाम हैं। यह मीठा, ठंढा और रोगहारी है। विष का विनाशक है।

माणिक्य आदि के नाम और गुण

लाल के माणिक्य, पद्मराग, वसु, रत्न और सुरत्नक, ये पाँच नाम हैं। सूर्यकान्तमणि के सूर्यकान्त, सूर्यमणि, सूर्याक्ष और दहनोपल, ये चार नाम हैं। चन्द्रकान्तमणि के चन्द्रकान्त, चन्द्रमणि, स्फटिक और स्फटिकोपल, ये चार नाम हैं। पन्ना के गोमेद, सुन्दर, पीत, रत्न और तृणचर, ये पाँच नाम हैं। हीरा के हीरक, भिदुर, वज्र, सूचिवक्त्र और वरार्धक, ये पाँच नाम हैं। लहसुनिया के नीलरक्त, नीलमणि, वैडूर्य और बालवायज, ये चार नाम हैं।

मरकतमणि के गारुन्मत, मारकत, दृषद्गर्भ और हरिन्मणि, ये चार नाम हैं। मोती सीप के मुक्तास्फोट, अब्धिमण्डूकी, शुक्ति और मौक्तिकमन्दिर, ये चार नाम हैं।

मोतीकान्ति के मुक्तिकान्ति, कटुकान्ति, दीपनी और वह्निनाशिनी, ये चार नाम हैं।

ये मंगलद्रव्य और आँखों के लिए हितकारी हैं।

१—"रमन्ते जना यस्मिन्निति रत्नम्"

कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् एतानि पञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः ॥
सुवर्णं रजतं मुक्ताराजावर्तं प्रवालकम् । रत्नपञ्चकमाख्यातं शेषं वस्तु प्रचक्षते ॥
मुक्ताफलं हिरण्यं च वैडूर्यं पद्मरागकम् । पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मकं तथा ॥
प्रवालयुक्तान्युक्तानि महारत्नानि वै दश ॥ १ ॥

लेखन, ठंढे, कसैले, मीठे और फैलनेवाले हैं। धारण करने में उत्तम हैं। दाह, दुष्टग्रह और विषों को शान्त करते हैं।

शङ्ख के नाम और गुण

शङ्ख के कम्बु, जलधर, वारिज और दीर्घनिस्स्वन्न, ये चार नाम हैं। यह पाक में कड़वा, कसैला, मीठा और हलका है। नयनों के लिए हितकारी, लेखन, पक्तिशूल-हारी, पित्तहारी, कफ और रक्तदोष को दूर करता है।

छोटे शङ्ख व कौड़ी के नाम और गुण

छोटे शङ्ख के शङ्ख, लघुशङ्खनक, शम्बुक और वारि-शुक्त, ये चार नाम हैं। कौड़ी के कपर्द, क्षुल्लक, चराचर और वराटक, ये चार नाम हैं। ये दोनों हलके, ठंढे हैं। नेत्ररोग और फोड़ों को अच्छा करते हैं।

खड़िया व गौड़पाषाण के नाम और गुण

खड़िया के खटी, कपोल, खटिनी, श्वेता और नाड़ी-तरङ्गक, ये पाँच नाम हैं। इसी का भेद गौड़पाषाण या क्षीरपाक है। यह दाह और रक्तपित्त को हरती तथा ठंढी है। यही गुण गौड़पाषाण में भी होते हैं।

कीचड़ व बालू के नाम और गुण

कीचड़ के पङ्क और कर्दमक, ये दो नाम हैं। बालू के बालुका और सिकता, ये दो नाम हैं। यह दाह, रक्तपित्त और सूजन को मिटाती है। फैलनेवाली है। बालू लेखनी, ठंढी है। घाव और उरःक्षत को आराम करती है।

चुम्बक पत्थर के नाम और गुण

चुम्बक पत्थर के चुम्बक, कान्तपाषाण, अयस्कान्त और लोहकर्षक, ये चार नाम हैं। यह लेखन और ठंढा है। मेदोरोग, विष और कृत्रिम विष को नष्ट करता है।

काँच के नाम और गुण

काँच के काच, कृत्रिमरत्न, विगुण और काचभाजन, ये चार नाम हैं। यह फाड़नेवाला है। घावों को भरता है। नेत्रों के लिए हितकारी, लेखन और हलका है।

पाँचवाँ वर्ग

वट आदि वृक्षों के नाम और गुण

बरगद के वट, रक्तपदा, क्षीरी, बहुपाद, वनस्पति, यक्षावास, पदारोही, न्यग्रोध, स्कन्धज और ध्रुव, ये दस नाम हैं। यह ठंढा और भारी है। मल को बाँधता है। कफ, पित्त और घावों को हितकारी है।

पीपल के नाम और गुण

पीपल के पिप्पल, श्यामल, अश्वत्थ, क्षीरवृक्ष, गजाशन, हरिवास, चलदल, मङ्गल्य और बोधिपादप, ये नव नाम हैं। यह दुःख को दूर करता है। ठंढा है। पित्त, कफ, घाव और रक्तरोग को दूर करता है।

पारसपीपल के नाम और गुण

पारसपीपल के पारिश, फलीश, कपिनूत और कपीतन, ये चार नाम हैं। यह पुरुषार्थ को बढ़ाता है। चिकना है। कफ और क्रिमि पैदा करता है।

गूलर के नाम और गुण

गूलर के उदुम्बर, क्षीरवृक्ष, जन्तुवृक्ष, सदाफल, हेमदुग्ध, क्रिमिफल, यज्ञाङ्ग और शीतवल्कल, ये आठ नाम हैं। यह ठंढा, भारी, घावों के लिए हितकारक है। कफ, पित्त और रक्तरोग को मिटाता है।

कठूँबर के नाम और गुण

कठूँबर के काकोदुम्बरिका, फल्गु, मलायु और चित्र-भेषज, ये चार नाम हैं। इसमें गूलर के समान गुण होते हैं। कटे हुए को विशेष रूप से अच्छा करती है।

पाकर के नाम और गुण

पाकर के प्लक्ष, प्लव, चारुवृक्ष, सुपार्श्व, गर्भभाण्डक, वटी, कमण्डलु, यूप, पिप्परि और चारुदर्शन, ये दस नाम हैं। यह ठंढी है। घावों को हरती है। कफ, पित्त, सूजन और विसर्प को जीतती है।

पञ्चक्षीरीवृक्ष के नाम और गुण

बड़, गूलर, पीपल, पारसपीपल[1] और पिलखन, ये पाँच क्षीरीवृक्ष कहलाते हैं; क्योंकि इनमें दूध होता है। इनकी छाल पञ्चवल्कला कहाती है। यह ठंढी है। मल को बाँधती है। घाव, सूजन और विसर्प को जीतती है।

क्षीरीवृक्ष ठंढे हैं। घावों के लिए हितकर होते हैं। योनि-दोष, घाव, सूजन, पित्त और कफ को हरते हैं। स्तनों में दूध बढ़ाते हैं। टूटी हड्डियों को जोड़ते हैं। क्षीरीवृक्षों के पत्ते ठंढे और हल्के होते हैं। मल को बाँधते हैं। कफ, पित्त और रक्तरोग को दूर करते हैं। इनके फल भी विष्टम्भी हैं। मल को बाँधते हैं। रक्तपित्त और कफ के विनाशक हैं।

नन्दीवृक्ष के नाम और गुण

नन्दीवृक्ष के अश्वत्थभेद, प्ररोही और गजपादप, ये तीन नाम हैं। इसमें पीपल के समान समस्त गुण हैं, परन्तु हलका और गरम है। विष का विनाशक है।

१—कोई वैद्य 'पचवल्कल' में पारसपीपल की जगह शिरस या वेतस लेते हैं।

कदम्ब के नाम और गुण

कदम्ब के गन्धवत्पुष्प, प्रावृषेण्य और मनोन्नति, ये तीन नाम हैं। दूसरे कदम्ब के धूलिकदम्ब, नीप और राजकदम्बक, ये तीन नाम हैं। कदम्ब ठंढा है। कफ, पित्त और रक्तरोगों का विनाशक है।

अर्जुनवृक्ष के नाम और गुण

अर्जुनवृक्ष के ककुभ, अर्जुननामा, नद, मञ्जु और शठद्रुम, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढा होता है। भग्न, क्षत, क्षय, विष और रक्तरोगों को लाभदायक है।

सिरसवृक्ष के नाम और गुण

सिरसवृक्ष के शिरीष, प्लवग, विप्र, शुकवृक्ष, कपीतन, मृदुपुष्प, श्यामवर्ण, भण्डीर और शङ्खिनीफल, ये नव नाम हैं। यह ठंढा है। बिगड़े वर्ण को सुधारता है। विष, विसर्प और सूजन का विनाशक है।

नीली कटसरैया के नाम और गुण

नीली कटसरैया के आर्गट, आर्त्तगल, बहुकण्ट और प्रघर्षण, ये चार नाम हैं। यह कसैली और ठंढी होती है। घावों को शोधती और भरती है।

(१) वेतस के नाम और गुण

वेतस के वञ्जल, नम्र, वानीर, दीर्घपत्रक, नादेय, मध्यपुष्प, तोयकाम और निकुञ्जक, ये आठ नाम हैं।

(२) जलवेतस के नाम और गुण

जलवेतस के जलौकासंभूत, अम्भोज, निचुल और जलवेतस, ये चार नाम हैं।

१—कहीं-कहीं 'कोह' कहते हैं। २—सिरसा।

(३) हिञ्जल के नाम और गुण

हिञ्जल[1] के इज्जल, हिञ्जल, गुच्छ, पला और कच्छ-पीलिका, ये पाँच नाम हैं।

इन तीनों में वेतस ठंढा है। दाह, सूजन, बवासीर, योनिरोग, घाव, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, पथरी, कफ और वात का विनाशक है। जलवेतस भी ठंढा है। मल को बाँधता है। वात को कुपित करता है। ये ही गुण इज्जल में भी होते हैं, परन्तु यह विशेष रूप से विष का विनाशक है।

लसोड़े के नाम और गुण

लसोड़े के श्लेष्मान्तक, कर्बुदार, पिच्छली, भूतपादप, शेलु, शैलु, शैलूक और शैलिक, ये आठ नाम हैं। यह बालों के लिए हितकारी है। गरम है। विष, फोड़ा, घाव, विसर्प और कोढ़ को मिटाता है। इसका फल पुरुषार्थ को बढ़ाता है। वात, पित्त, क्षयी और रक्तरोग को दूर करता है।

पीलू के नाम और गुण

पीलू के पीलु, शतसहस्रांशी, तीक्ष्ण, करभप्रिय, सहस्राङ्गी और गुड़फल, ये छः नाम हैं। इसके फल को पीलु या पीलुज कहते हैं। यह गरम, भेदी और हलका है। रक्तपित्त को पैदा करता है। बायगोला, बवासीर, तिल्लीरोग, वात, पथरी और कफ को दूर करता है। अग्निवर्द्धक है। आयु को बढ़ाता है।

साग के नाम और गुण

साग के शाक, खरच्छद, भूमिसह और दीर्घच्छद, ये

१—यह जलवेतस का भेद है। "निचुलोऽम्बुज इज्जलः" इस अमरकोष के प्रमाण से समुद्र-फल को समुद्रशोष भी कहते हैं।

चार नाम हैं। यह कफ, वात और रक्तदोष का विनाशक है। गर्भ को स्थापित करता है। ठंढा है।

शाल के नाम और गुण

शाल के सर्जरस, सर्ज, श्रीकृष्णारि और पत्रक, ये चार नाम हैं। यह मल को बाँधता है। घाव, कफ और विष का विनाशक है। ठंढा है। जले हुए को अच्छा करता है।

तमाल के नाम और गुण

तमाल के तापिच्छ, कालस्कन्ध और मितद्रुम, ये तीन नाम हैं। इसमें शाल के समान गुण हैं। विशेष रूप से सूजन, दाह और विस्फोटकरोग को दूर करता है।

(१-२) खैर के नाम और गुण

खैर के खदिर, रक्तसार, गायत्री और बालपत्रक, ये चार नाम हैं। सफ़ेद खैर के श्वेतसार, कार्मुक और कुब्जकण्टक, ये तीन नाम हैं। ये दोनों ठंढे हैं। दाँतों के लिए हितकारी हैं। क्रिमि, प्रमेह, ज्वर, घाव, सफ़ेद कोढ़, आमवात, पित्तरक्त, पाण्डु, कुष्ठ और कफ को दूर करते हैं। इसका गोंद मीठा, बलदायक और वीर्य को बढ़ाता है। इसका सार भी विशद, बलकारी, मुखरोग, कफ और रक्तरोग को हरता है।

दुर्गन्धित खैर के नाम और गुण

दुर्गन्धित खैर के अरिमेद, विट्खदिर, गोधास्कन्ध और अरिमेदक, ये चार नाम हैं। यह कसैला और गरम है। मुखरोग, दन्तरोग और रक्तरोग को हरता है। खुजली, विष, कफ. क्रिमि और घावों को नष्ट करता है।

बबूल के नाम और गुण

बबूल[1] के बब्बूल, किंकराल, पीतक और पीतपुष्पक, ये चार नाम हैं। यह कफ को दूर करता और मल को बाँधता है। कोढ़, क्रिमि और विष का विनाशक है। इसका काढ़ा सात दिन पीने से रक्तपित्त दूर होता है।

विजयसार के नाम और गुण

विजयसार के बीजक, अशनक, सौरी, प्रिय, काम्य और अलकप्रिय, ये छः नाम हैं। यह कोढ़, विसर्प, सफ़ेद कोढ़, प्रमेह, ज्वर, क्रिमि, कफ और रक्तपित्त का विनाशक है। बिगड़ी खाल को सुधारता, बालों को बढ़ाता और बुढ़ापे को दूर करता है।

तेंदुवा के नाम और गुण

तेंदुवा के तिनिश, स्पन्दन, नेमी, सर्वसार और अश्मगन्धक, ये पाँच नाम हैं। यह कफ, पित्तरक्त, मेदरोग, कोढ़ और प्रमेहों को अच्छा करता है।

भोजपत्र के नाम और गुण

भोजपत्र के भूर्ज, भुज, बहुपुट, मृदुत्वक् और लेख्यपत्रक, ये पाँच नाम हैं। यह भूतदोष, ग्रहदोष, कफ, कर्णरोग और रक्तपित्त को मिटाता है।

ढाक के नाम और गुण

ढाक के पलाश, किंशुक, किर्मी, याज्ञिक, ब्रह्मपादप, क्षीरश्रेष्ठ, रक्तपुष्प, त्रिवृत और समिदुत्तम, ये नव नाम हैं। यह अग्निवर्द्धक है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। दस्तावर और गरम है। घाव को भरता है। बायगोला को दबाता

[1]—कहीं-कहीं 'कीकर' तथा 'कीकरा' भी कहते हैं।

है और टूटी हुई हड्डी आदि को जोड़ता है। ग्रहणी, बवासीर और क्रिमियों का विनाशक है। इसका फूल कफ, पित्तरक्त और मूत्रकृच्छ्र को दूर करता और मल को बाँधता है। इसका फल भी हलका और गरम है। प्रमेह, बवासीर, क्रिमि और दुष्टकफ इसके सेवन से अच्छे होते हैं।

धव के नाम और गुण

धव के नन्दितरु, गौर, शकटाक्ष और धुरन्धर, ये चार नाम हैं। यह शीत, प्रमेह, रक्त, पाण्डु, पित्त और कफ का विनाशक है।

धामिनवृक्ष के नाम और गुण

धामिनवृक्ष के धन्वन, गोत्रविटपी, धर्मण और गोत्रपुष्पक, ये चार नाम हैं। यह कसैला और हलका है। कफ, पित्तरक्त और खाँसी को अच्छा करता है।

सोजा के नाम और गुण

सोजा[1] के सर्ज, अजकर्ण, स्वेदघ्न, लतावृक्ष और कुदेहक, ये पाँच नाम हैं। यह बिगड़े वर्ण का सुधारनेवाला है। कफ, पसीना, मल, पित्त और क्रिमियों को दूर करता है।

सहोरा के नाम और गुण

सहोरा[2] के शाखोट, पीतफल, छागी और क्षीरविनाशन, ये चार नाम हैं। यह वातरक्त, कफ, वात और अतीसार को दूर करता है।

बरना के नाम और गुण

बरना के वरुण, वरण, श्वेत, शाकवृक्ष और कुमारक, ये पाँच नाम हैं। यह पित्तकारी, कफहारी और भेदी है।

१—इसी वृक्ष से राल निकलती है। २—चरवाहे दोने में इसका दूध लगाकर बकरी का दूध दुहकर, उसी समय दही बन जाने से, खा लेते हैं।

मूत्रकृच्छ्र, रक्त, वात, गोला, वातरक्त, क्रिमि और सूजन का विनाशक है। अग्नि को बढ़ाता है।

जिङ्गिणी के नाम और गुण

जिङ्गिणी के झिङ्गिणी, जिङ्गी, नुनि, यासा और मोटकी, ये पाँच नाम और हैं। यह घाव, हृद्रोग, वात और अतीसार को जीतती है। कड़वी है। इसका सत गरम है। इसका नस्य लेने से बाहुपीड़ा दूर होती है।

सलई वृक्ष के नाम और गुण

सलई वृक्ष के शल्लकी, वल्लकी, मोची, गजभक्षा, महारुहा, गन्धवीरा, कुंदुरुकी, सुस्रावा और वनकर्णिका, ये नव नाम हैं। यह घाव, पित्तरक्त, कफपित्त और अतीसार को जीतता है।

हिंगोट के नाम और गुण

हिंगोट के इंगुद, भल्लकी, वृक्षकण्टक और तापसद्रुम, ये चार नाम हैं। यह कोढ़, भूतादिदोष, ग्रहदोष, घाव, विष और क्रिमियों का नाशक है। गरम है। सफ़ेद कोढ़ और शूल का विनाशक है। इसका फल कफ और वात को दूर करता है।

कटहा के नाम और गुण

कटहा के कटम्भर, चारुशृङ्गी, कटभी और तृणशौण्डक, ये चार नाम हैं। यह प्रमेह, रक्तरोग, नाड़ीव्रण, विष और क्रिमियों को नष्ट करता है। गरम है। कफ और कोढ़ का विनाशक है। इसका फल कफ और वीर्यदोष को दूर करता है। इसका सत भारी है। पुरुषार्थ को बढ़ाता, बल देता और वात को हरता है।

मोषा के नाम और गुण

मोषा के मुष्क, मोक्षकक, घुंटी, शिखरी और क्षुद्रपाटला,

ये पाँच नाम हैं। यह कफ और वात का विनाशक है। मल को बाँधता, गुल्म, विष और क्रिमियों को दूर करता है। गरम है। इसका फूल बस्तिरोग, खुजला, कफ और पित्त को मिटाता है। इसका सत अत्यंत वीर्यवर्द्धक है। शोष, पित्त और वात का विनाशक है।

फरहद के नाम और गुण

फरहद[1] के पारिभद्र, निम्बवृक्ष, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कण्टकी, पारिजात, मन्दार और कटिकिंशुक, ये आठ नाम हैं।

यह क्रिमि, कफ, मेद और कफवात का विनाशक है।

सेमर के नाम और गुण

सेमर के शाल्मली, तूलिनी, मोचा, कुक्कुटी, रक्तपुष्पिका, कण्टकाढ्या, स्थूलफला, पिच्छिला और चिरजीविनी, ये नव नाम हैं। यह ठंढा है। धातुओं को पुष्ट करता और वीर्य को बढ़ाता है। रक्तपित्त को जीतता है। इसका गोंद[2] पुरुषार्थ को बढ़ाता है। सूजन, पित्त और वातरक्त का विनाशक है। रसायन है। चिकना है। इसका फूल मल को बाँधता और पित्त को जीतता है।

तुन के नाम और गुण

तुन के तुणि, कुठेर, आपीत, तनुक और नन्दिपादप, ये पाँच नाम हैं। यह मल को बाँधती और धातुओं को पुष्ट करती है। ठंढी है। घाव, कोढ़ और रक्तपित्त को अच्छा करती है।

सातला के नाम और गुण

सातला के सप्तपर्ण, गुच्छपुष्प, छत्री और शाल्मलि-

१—कहीं-कहीं पहाड़ी नीम कहते हैं। २—इसके गोंद को मोचरस कहते हैं।

पत्रक, ये चार नाम हैं। यह घाव, कफ, वात और कोढ़ को हरता है। दस्तावर है।

हरिद्रु के नाम और गुण

हरिद्रु[1] के हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गैरद्रुम और वर, ये पाँच नाम हैं। यह कफ को हरता है। घावों को शोधता और भरता है।

करञ्जा के नाम और गुण

करञ्जा के करञ्ज, नक्तमाल, नक्ताह्व, घृतवर्णक, पूतिक, पूतिवर्ण, प्रकीर्ण और चिरबिल्वक, ये आठ नाम हैं। यह कड़वा और तीखा है। वीर्य में गरम है। योनि के दोषों को दूर करता है। कुष्ठ, उदावर्त, गोला, बवासीर, घाव, क्रिमि और कफ का विनाशक है। इसका फल कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, क्रिमि और कोढ़ को अच्छा करता है। इसका पत्ता कफ, वात, बवासीर, क्रिमि और सूजन को दूर करने में उत्तम है।

करञ्जी के नाम और गुण

करञ्जी के काकतिक्ता, वयस्या और अङ्गारवल्लरी, ये तीन नाम हैं। यह गरम है। वात, बवासीर, क्रिमि, कोढ़ और प्रमेहों को दूर करती है।

तिरिगिच्छि के नाम और गुण

तिरिगिच्छि के गजकण्ट, करञ्जी, क्षीरिणी और द्विप, ये चार हैं। यह कफ, बवासीर, क्रिमि, कोढ़ और प्रमेहों को अच्छा करती है।

जाँटी[2] के नाम और गुण

जाँटी के शमी, तुङ्गा, शङ्खफला, पवित्रा, केशहृत्फला,

१—हलदुआ। २—जंडी।

लक्ष्मी, शिवा, अधिमती, भूशमी और शङ्कराह्वया, ये दस नाम हैं। यह ठंढी, हलकी और दस्तावर है। दमा, कोढ़, बवासीर और कफ को हरती है। इसका फल पित्तकारी, रूखा तथा बुद्धिवर्द्धक और बालों को हानि पहुँचानेवाला होता है।

झिंझिणी के नाम और गुण

झिंझिंणी[1] के शमीषिका, टिण्ठिणिका, दुर्बला, अम्बु-शिरीषिका, ये चार नाम हैं। यह कफ, कोढ़, बवासीर, सन्निपात और विष को हितकारक है।

रीठे के नाम और गुण

रीठे के अरिष्ट, गर्भपाती, कुम्भवीर्य, फेनिल, कृष्ण-बीज, रक्तबीज, पीतफेन और अर्थसाधन, ये आठ नाम हैं। यह त्रिदोषों को दूर करता है। गरम है, गर्भ को गिराता और ग्रहदोषों को दूर करता है।

शीशम के नाम और गुण

शीशम के शिंशपा, कपिला. कृष्णा, सारमण्डलपत्रिका, कुशिंशपा, भस्मपिङ्गला और वत्सादनी, ये सात नाम हैं। यह गरम है। प्रमेह, कोढ़, सफ़ेद कोढ़, छर्दि, क्रिमि, बस्तिरोग, घाव, दाह, रक्तदोष को दूर करती और गर्भ को गिराती है।

अगस्त्य के नाम और गुण

अगस्त्य के वङ्गसेनाह्व, मधुशिग्रु और मुनिद्रुम, ये तीन नाम हैं। यह पित्त, कफ और गरमी को जीतता है। ठंढा है। इसका फूल पीनस, कफ, पित्त और रतौंधी को दूर करता है।

१—टिंठिणी, झिंझणी।

छठा वर्ग

दाख आदि के नाम और गुण

दाख के द्राक्षा, मधुफला, स्वाद्वी, हारहूणा, फलोत्तमा, मृद्वीका, मधुयोनि, रसाला, गोस्तनी और गुडा, ये दस नाम हैं। कच्ची दाख भारी होती है और गुण भी कम हैं। खट्टी दाख रक्तपित्त को नष्ट करती है। छोटी दाख वीर्य से रहित होती है। गौ के थन ऐसी आकृतिवाली दाख भी समान गुणोंवाली होती है।

पकी हुई दाख दस्तावर, भारी, ठंढी और आँखों को हितकारी है। धातु को पुष्ट करती है। प्यास, ज्वर, दमा, छर्दि, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, क्षयी और मदात्यय में लाभदायक है।

पहाड़ी दाख हलकी और खट्टी होती है। कफ और अम्लपित्त को नष्ट करती है।

कच्चे, पक्के आम के नाम और गुण

पके आम के आम्र, चूत, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, माकन्द, पिकबन्धु, रसालय और कामवल्लभ, ये नव नाम हैं। कच्चा आम खट्टा और रूखा होता है। त्रिदोष और रक्तरोग को हटाता है।

पक्का आम मीठा, ठंढा, वीर्यवर्द्धक, चिकना, भारी और रसायन है। मांस को बढ़ाता है। ग्राही, वातहारी, रुचिकारी और हृदय के लिए हितकर है। रूप को बढ़ानेवाला है। प्रमेह, रक्तविकार, कफ, पित्त और घावों का नाशक है।

इसका रस दस्तावर, चिकना और अग्निवर्द्धक है। कसैला, मीठा और भारी होता है। रूप और पुरुषार्थ को

बढ़ाता है। सूखा आम खट्टा और कसैला होता है। कफ और वात को दूर करता है।

जामुन के नाम और गुण

जामुनवृक्ष के महाजम्बू, राजजम्बू, महास्कन्धा, बृहत्फला, क्षुद्रजम्बू, वीरपत्रा, मेघाभा, कामवल्लभा, नादेयी और क्षुद्रफला, ये दस नाम हैं।

जामुनफल के जम्बु और जाम्बव, ये दो नाम हैं। यह मल को बाँधती है। रूखी है। कफ, पित्त, घाव और रक्त-रोग को हटाती है।

राजजामुन का फल स्वादिष्ट, विष्टम्भी और भारी होता है। भोजन में रुचि उत्पन्न करता है। छोटी जामुन में भी ये ही गुण होते हैं। दाह को दूर करना इसका विशेष गुण है।

नारियल के नाम और गुण

नारियल के नारिकेल, दृढ़फल, महावृक्ष, महाफल, तृण-राज, तृणफल, तृणाह्व और दृढ़बीजक, ये आठ नाम हैं।

इसका फल ठंढा होता है। देर में पकता है। बस्ति का शोधन करता है। विष्टम्भी है। धातुओं को पुष्ट करता और पुरुषार्थ को बढ़ाता है। वात, पित्त, रक्तविकार और दाह को दबाता है। इसका रस दीपन, ठंढा और हलका होता है। हृदय को लाभ पहुँचाता है। वीर्य को बढ़ाता है। इसकी गिरी वीर्यवर्द्धक और वात पित्त को शान्त करतीहै।

छुहारा और खजूर के नाम और गुण

छुहारा और खजूर के श्रेणी, खर्जूरिकावृक्ष, श्रीफला, द्वीपसम्भवा, पिण्डखर्जूरिका, खर्जू, दुष्प्रधर्षा, सुकण्टका, स्कन्धफला, स्वाद्वी, दुरास्ता, मृदुच्छदा, भूमिखर्जूरिका काककर्कटी और कासुकर्कटी, ये पन्द्रह नाम हैं। इसका

फल ठंढा, मीठा, चिकना और बल को देनेवाला है। घाव, रक्तरोग, वात, पित्त, मद, मूर्च्छा और मदात्यय को नष्ट करता है। छुहारे में इससे कम गुण होते हैं। इसकी गिरी मस्तक के रोगों को हरती है। ठंढी होती है। पुरुषार्थ को बढ़ाती है। पित्तरक्त और दाह को मिटाती है।

सुलेमानी के नाम और गुण

सुलेमानी के शिलेमानी, लोकहरा, मृदुला और तिवरीफला, ये चार नाम हैं। यह परिश्रम, भ्रम, दाह, मूर्च्छा और रक्तपित्त को दूर करती है।

केले के नाम और गुण

केले के कदली, ग्रन्थिनी, मोचा, रम्भा, वीरा, आयतच्छदा, काष्ठीला, वारणी, रंभामोचा और महाफला, ये दस नाम हैं। यह योनिदोष, पथरी और रक्तपित्त को अच्छा करती है। ठंढी है। इसका कन्द भी ठंढा है। बल देनेवाला है। बालों को बढ़ाता है। पित्त, कफ और रक्तदोष को दबाता है। इसका फल मीठा, ठंढा, विष्टम्भी, कफकारी, भारी और चिकना होता है। रक्तपित्त, प्यास, दाह, क्षत, क्षयी और वात को दूर करता है।

अनार के नाम और गुण

अनार के दाडिमी, रक्तकुसुमा, दन्तबीज और शुक्र-प्रिया, ये चार नाम हैं। यह पाचक, अग्नि और भोजन की रुचि को बढ़ाता है। हृदय के लिए हितकारी है, कसैला और रसीला है। मल को बाँधता है। अम्लवेत की भाँति यह भी खट्टा, मीठा दो प्रकार का है। मीठा अनार त्रिदोष का विनाशक है। खट्टा अनार वात, बल व रक्तपित्त को

शान्त करता है। सूखे हुए खट्टे अनार में भी ये ही गुण होते हैं। इसका रस कफ और वात का विनाशक है।

निर्मली के नाम और गुण

निर्मली के कतक और पयःप्रसादि, ये दो नाम हैं। इसका फल कतक कहाता है। वह आँखों के लिए हित-कारी है। पानी को निर्मल करता है। वात और कफ को हरता है। ठंढा, मीठा, कसैला और भारी है।

बेरियों के नाम और गुण

१—पहली बेरी के बदरी, कर्कटी, मोघा, कोंरटी और युग्मकण्टका, ये पाँच नाम हैं। २—दूसरी बेरी के स्निग्ध-च्छदा और कोशफला, ये दो नाम हैं। ३—तीसरी बेरी का नाम 'सौवीरिका' यह है। ४—चौथी को 'हस्तिकोलि' कहते हैं। ५—छोटी बड़बेरी के 'कर्कन्धु' और 'कीधुका' ये दो नाम हैं। यह ठंढी, कड़वी और रूखी है। पित्त और कफ को नष्ट करती है।

बेर के नाम और गुण

बेर के फेनिल, कुवल, कुह, कर्कन्धु, ह्रस्वबदर, वरट और कंधुक, ये लौकिक नाम हैं। पके हुए गूदेवाला बेर मीठा होता है। बड़ा बेर 'सौवीरक' कहाता है। यह हलका, ग्राही, रुचिकारी और गरम है। वात को जीतता है। कफ और पित्त को उत्पन्न करता है। ठंढा, भेदी, भारी, वीर्यवर्द्धक और धातुपोषक है। पित्त, दाह, रक्तदोष, क्षत, प्यास और वात को शान्त करता है। 'कोलनामक' बेर भारी और दस्तावर होता है।

सूखा बेर भेदी, अग्निकारी और हलका है। प्यास, ग्लानि और रक्तदोष को दबाता है।

छोटा बेर मीठा, चिकना और भारी होता है। पित्त और वात का नाशक है। इसकी गिरी भी वायु और पित्त को दबाती है। धातुओं को पुष्ट करती और वीर्य-बल देती है।

खिन्नी के नाम और गुण

खिन्नी के क्षीरी, क्षत्रिया, राजाह्वा, राजादन, फलाशी, राजन्य, स्तम्भन, अश्वचिबुक और मुचिलिण्टक, ये नव नाम हैं। इसका फल ठंढा, चिकना, भारी और बलदायक है। प्यास, मूर्च्छा, मद, भ्रम, क्षयी, त्रिदोष और रक्तरोग का नाशक है।

चिरौंजी के नाम और गुण

चिरौंजी के चार, धनुष्पट, शाल, प्रियाल और मुनि-वल्लभ, ये पाँच नाम हैं। यह पित्त, कफ और रक्तरोग को मिटाती है। इसका फल मीठा, भारी, चिकना और दस्ता-वर है। वात, पित्त, दाह, प्यास और क्षत का विनाशक है। इसकी गिरी मीठी होती है। धातुओं को पुष्ट करती है। वीर्य को उत्पन्न करती है। पित्त और वात को शान्त करती है।

फालसे के नाम और गुण

फालसे के परूषक, मृदुफल, परूष, रोयण और पर, ये पाँच नाम हैं। यह कसैला, खट्टा और हलका होता है। आमपित्त को बढ़ाता है। पका हुआ पाक में मीठा, ठंढा और विष्टम्भी होता है। धातु को पुष्ट करता है। हृदय को बल देता है। प्यास, पित्त, दाह, रक्तदोष, क्षत, क्षयी और वात का विनाशक है।

तेंदुवा के नाम और गुण

तेंदुवा के तिन्दुक, स्यन्दन, स्फूर्ज्य, कालसार, रावण, काकपीलु और कुपीलु, ये सात नाम हैं। विषतिन्दुक नाम का दूसरा है। यह घाव और वात का विनाशक है

इसका सार पित्तरोग को शांत करता है। कच्चा फल ग्राही, वातकारी, ठंढा और हलका होता है। पका हुआ फल पित्त, प्रमेह, रक्तदोष और कफ का विनाशक है। भारी है। विषतेंदु में भी ये ही गुण होते हैं, परन्तु यह विशेष रूप से मल को बाँधता है और ठंढा है।

काँकई के नाम और गुण

काँकई के किङ्किणील, व्याघ्रपाद, देवदारु और चर, ये चार नाम हैं। यह कसैली, ठंढी और कड़वी है। पित्त और कफ को शान्त करती है। इसका कच्चा फल वात को बढ़ाता है। पका हुआ फल मीठा होता है। त्रिदोष का विनाशक है।

महुआ के नाम और गुण

महुआ के मधूक, मधुक, तीक्ष्ण, सार, गुडपुष्पक, गोलाफल, मधुकोष्ठ, मधुकोष्ठी और मधुद्रुम, ये नव नाम हैं। दूसरे महुआ के ह्रस्वफल, मधुर और दीर्घपुष्पक, ये तीन नाम हैं। यह कफ और वात को शांत करता है। कसैला है। घावों को भरता है। इसका फूल मीठा, बलकारक, ठंढा और भारी होता है। धातु को पुष्ट करता है। फल भी ठंढा, भारी और मीठा होता है। वीर्य को बढ़ाता है। वात-पित्त को शांत करता है। हृदय को हानिकारक है। प्यास, रक्तपित्त, दाह, दमा, क्षत और क्षयी का विनाशक है।

कटहल के नाम और गुण

कटहल के पनस, कंटकीफल, श्वासहा और गर्भकंटक, ये चार नाम हैं। यह पका हुआ ठंढा और चिकना है पित्त-वात को हरता है, बलदायक और वीर्यदायक है रक्तपित्त, क्षत और क्षयी का नाशक है। कच्चा विष्टम्भ

१—किंकिणी।

है। वात को उत्पन्न करता है। कसैला और हलका है।

बड़हल के नाम और गुण

बड़हल के लकुच, क्षुद्रपनस, निकुच और ग्रंथिमत्फल, ये चार नाम हैं। यह भारी, विष्टम्भी, मीठा, स्वादिष्ठ और खट्टा होता है। रक्तपित्त और कफ को बढ़ाता है। वात को शांत करता है। गरम है। वीर्य और अग्नि का विनाशक है।

ताड़ के नाम और गुण

ताड़ के ताल, ध्वज, दुरारोह, तृणराज और महाद्रुम, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढा है। वात, पित्त और घाव का नाशक है। मद और वीर्य को बढ़ाता है। इसका फल ठंढा, बल-कारी, चिकना, स्वादिष्ठ, रसवाला, भारी और विष्टम्भी है। वात, पित्त, रक्तदोष, क्षत और दाह का नाशक है। इसका बीज मूत्र और पुरुषार्थ को बढ़ाता है। वातपित्त को हरता और ठंढा है।

खर्बूजा के नाम और गुण

खर्बूजा के खर्बूज, फलराज, अमृताह्व और दशांगुल, ये चार नाम हैं। यह मूत्रकारक, बलकारक, कोष्ठशुद्धि-कारक, भारी, चिकना, मीठा और ठंढा होता है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। पित्त और वात को शान्त करता है। सब खर्बूजों में से जो खट्टा या मीठा और रस से खारी होता है, वह रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्र को पैदा करता है।

सेब के नाम और गुण

सेब के मुष्टिप्रमाण, बदर, सीवफल और सितिकाफल, ये चार नाम हैं।

दूसरे सेब के अम्भःफल और महात्सिञ्चितिकाफल, ये दो नाम हैं। यह ठंढा, भिरानेवाला, चिकना, मूत्रकारी

और स्वादिष्ठ है। त्वग्दाह, अन्तर्दाह और पित्त से उत्पन्न हृत्कम्प, सञ्चित मल, ज्वर तथा विष का विनाशक है। भारी है। धातु को पुष्ट करता है। कफ को बढ़ाता है। वीर्यवर्द्धक है। पाक और रस में ठंढा है।

नासपाती के नाम और गुण

नासपाती के अमृताह्व, रुचिफल, लघुबिल्व और फलाकृति, ये चार नाम हैं। यह गरम, वातहारी, मीठी और खट्टी है। रुचि और वीर्य को बढ़ाती है।

नारव (कश्मीर की नासपाती) के अम्भोफल, महत्सिंचितिकाफल, ये दो नाम हैं। इसमें सेब के समान गुण हैं। पर विशेष रूप से कसैली और ठंढी है।

अमरूद के नाम और गुण

अमरूद का नाम पेरुक है। यह कसैला, मीठा, ठंढा, खट्टा, कफकारी और वीर्यवर्द्धक है। वात और पित्त का नाशक है।

बादाम के नाम और गुण

बादाम के सुफल, वातवैरि और नेत्रोपम, ये तीन नाम हैं। यह गरम, अत्यन्त चिकना और वातनाशक है। बल और वीर्य को बढ़ाता है।

पिस्ता के नाम और गुण

पिस्ता के निकोचक, चारुफल, अङ्कोट, गलकोजक, पिस्त, मुकुलक और दन्तीफलसमाकृति, ये सात नाम हैं। यह भारी, चिकना और मीठा है। स्त्रीरमण में गुणकारक और गरम है। धातु को बढ़ाता, रक्त को बदलता और वात का नाशक है। कफ तथा पित्त को बढ़ानेवाला है। यही गुण चिलगोजा में हैं, परन्तु यह विशेषरूप से भारी है और देर में पचता है।

लीची के नाम और गुण

लीची के एलाफल। और अलीची, ये दो नाम हैं। लीची आमवात को नष्ट करती है। भारी, खट्टी, गरम और दस्तावर है। पकी लीची स्वादिष्ठ, ठंढी और बलकारक है। वातपित्त का नाश करती है।

आलूबुखारा के नाम और गुण

आलूबुखारा के आल्लूक, अल्लू, भल्लूक, भल्लू और रक्तफल, ये पाँच नाम हैं। इसका रस ठंढा, मीठा और खट्टा होता है। वात और पित्त को हरता है।

अञ्जीर के नाम और गुण

अञ्जीर के मज्जल और काकोदुम्बरिकाफल, ये दो नाम और हैं। यह ठंढा, मीठा और भारी है। रक्तपित्त और वात का नाशक है। छोटा अञ्जीर इससे कम गुणवाला होता है।

अखरोट के नाम और गुण

अखरोट के अक्षोटक, वैधृतफल, कन्दलाभ और पृथुच्छद, ये चार नाम हैं। यह मीठा, बलकारी, भारी और गरम है। वात को हरता है। दस्तावर है

पालेवत के नाम और गुण

पालेवत के सितपुष्प और तिन्दुकफल, ये दो नाम और हैं। महापालेवत को मानवक कहते हैं। यह ठंढा, मीठा, भारी और गरम होता है। अग्नि और वात को शान्त करता है। यही गुण महापालेवत के हैं। परंतु वह विशेष रूप से हृदय को बल देता है। खट्टा है। तृषा को मिटाता है।

शहतूत के नाम और गुण

शहतूत के तूत, तूद, ब्रह्मकोष, ब्राह्मण्य और ब्रह्मदारु, ये पाँच नाम हैं। यह भारी और ठंढा है। पका हुआ

स्वादिष्ठ होता है। पित्त और वात का विनाशक है।

गंगेरुवा के नाम और गुण

गंगेरुवा के गङ्गेरुक, कर्कटक, कारक और मृगलिण्डक, ये चार नाम हैं। इसके दो भेद हैं। १—पहले गंगेरुवा के तोदन, क्रन्दन और मृगविट्सदृश, ये तीन नाम हैं। यह दस्तावर होता है। पका हुआ भारी होता है। वातरक्त को शान्त करता है। २—दूसरा तोदन-नामक ग्राही, मीठा और हलका होता है। वातरक्त को शान्त करता है।

तुम्बर के नाम और गुण

तुम्बर को टिन्त्रिक भी कहते हैं। यह कच्चा खट्टा और गरम होता है। पित्त पैदा करता है। समुद्र में उपजे केसर के समान शोभावाले कालायन फल तथा पत्तों के समान इसका वृक्ष जानना चाहिए। इसमें भिलावें के समान गुण होते हैं। यह कफ को शान्त करता है। पाक में कड़वा और गरम है। घाव और प्रमेह को पैदा करता है।

बिजौरा नींबू के नाम और गुण

बिजौरा नींबू के बीजपूर, मातुलुङ्ग, कुशरी और फल-पूरक, ये चार नाम हैं। इसका फल भोजन में रुचि बढ़ाता है। रस में खट्टा, हलका और अग्निवर्द्धक है। यह रक्तपित्त को उत्पन्न करनेवाला है। बिगड़े कंठ को सुधारता है। जीभ और हृदय को शोधता है। इसका गूदा धातुवर्द्धक, ठंढा और भारी होता है। पित्त व वात को शान्त करता है। इसकी केसर भी हलकी और मल को बाँधनेवाली होती है। शूल, बायगोला और उदररोग को नष्ट करती है। बीज गरम और भारी होता है। क्रिमि, कफ और वात को शान्त करता है। गर्भस्थापक है। फूल वातकारक,

मल बाँधनेवाला, रक्तपित्तहारी और हलका होता है। शूल, अजीर्ण, अफरा, कफ, वात, अरुचि, दमा और खाँसी में इसका रस देना उत्तम है।

मधुककड़ी के नाम और गुण

मधुककड़ी के मधुकर्कटिका, स्वादु, लुङ्गी, घण्टालिका और घटा, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढी होती है। लाल रंग की पित्त को हरती है। भारी है। इसकी जड़ हैज़ा और कान के शोथ (कनगुर) को नष्ट करती है।

नारङ्गी के नाम और गुण

नारङ्गी के नागरङ्ग, गोरक्ष और योगसागर, ये तीन नाम और हैं। यह खट्टी और बहुत गरम होती है। वातपित्त को हरती है। दस्तावर और मीठी होती है। खट्टी नारङ्गी हृदय को बल देती, देर में पचती और वात को शान्त करती है।

जम्भीरी नींबू के नाम और गुण

जम्बीरी नींबू के जम्बीरक, दन्तशठ, जम्भीर और जम्भल, ये चार नाम हैं। यह खट्टा, शूलनाशक, भारी और गरम है। कफ-वात को शान्त करता है। मुख के बुरे स्वाद या फीकेपन को मिटाता है। हृत्पीड़ा, मन्दाग्नि और क्रिमि-रोग को दूर करता है।

अम्लवेत के नाम और गुण

अम्लवेत के अम्ल, अम्लवेतस, चुक्र, वेतस और शर-भेदक, ये पाँच नाम हैं। यह बहुत गरम, भेदन और हलका है। जठराग्नि को बढ़ाता है। हृद्रोग, शूल और बायगोला को नष्ट करता है। भारी है। पित्त, प्यास और कफ को दूषित करता है।

१—चकोतरा।

सारांम्ल के नाम और गुण

सारांम्ल के सारांम्लक, सारगुल, रसाल और सारपादप, ये चार नाम हैं। यह अम्ल, वातनाशक और भारी है। पित्त और कफ का विनाशक है।

नींबू व राजनींबू के नाम और गुण

नींबू के निम्बूक और निम्बुक, ये दो नाम हैं। राजनींबू का नाम राजनिम्बूक है। यह खट्टा, वातनाशक और पाचक होता है। अग्निवर्द्धक और हलका है। राजनींबू विशेषकर मीठा और भारी है। पित्त और वात का विनाशक है।

कमरख के नाम और गुण

कमरख के कर्मरङ्ग, नागफल, भव्य और पिच्छिलबीजक, ये चार नाम हैं। यह ठंढी, मीठी और मल को बाँधनेवाली है। खट्टी है, कफ और पित्त को दूर करती है।

इमली के नाम और गुण

इमली के अम्लिका, चुक्रिका, चिञ्चा, तिन्तिडी और शुक्तिचन्द्रिका, ये पाँच नाम हैं। यह कच्ची भारी होती है। वात को हरती है। पित्त, कफ और रक्तदोष को शान्त करती है।

पकी हुई इमली भारी और रुचिकारक होती है। अग्नि और बस्ति को शोधती है। सूखी इमली हृदय को बल देती है। परिश्रम, भ्रम, प्यास और ग्लानि को हरती है। हलकी है।

तिन्तिड़ीक के नाम और गुण

तिन्तिड़ीक के वृक्षाम्ल, अम्लशाक और अम्लपादप, ये तीन नाम हैं। यह कच्चा वातनाशक, गरम और भारी है। पका हुआ हलका होता है। मल को बाँधता है। संग्रहणी, कफ और वात को शान्त करता है।

करोंदा के नाम और गुण

करोंदा के करमर्दी, सुषेणा और कृष्णफला, ये तीन नाम हैं। यह भारी, गरम और खट्टा होता है। रक्तपित्त और कफ को बढ़ाता है। पका हुआ मीठा, रुचिकारी और हलका होता है। पित्त और वात का विनाशक है।

कैथे के नाम और गुण

कैथे के कपित्थक, दधिफल, कपित्थ और सुरभिच्छद, ये चार नाम हैं। यह मलबन्धक और हलका होता है। त्रिदोष को दूर करता है। पका हुआ भारी होता है। प्यास व हिचकी को शान्त करता है। वातपित्त को दबाता है। मीठा, खट्टा और कसैला होता है। कण्ठ को शोधता, मल को बाँधता और देर में पचता है।

कैथपत्री के नाम और गुण

कैथपत्री के कपित्थपत्री, फणिजा, कुलजा और जीवपत्रिका, ये चार नाम हैं। यह तीखी और गरम होती है। कफ, प्रमेह और विष का विनाश करती है।

अम्बाड़े के नाम और गुण

अम्बाड़े के आम्रातक, आम्रवट, फली, मोद, फल और कपि, ये छः नाम हैं। यह कच्चा वातनाशक, भारी और गरम होता है। भोजन में रुचि बढ़ाता है। दस्तावर है। पका हुआ मीठा और ठंढा होता है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। वात, पित्त, क्षयी और रक्तरोग को शान्त करता है।

राजाम्र के नाम और गुण

राजाम्र के राजाम्राह्व, काम्रनाम, कामाह्व और राजपुत्रक, ये चार नाम हैं। यह मीठा और ठंढा होता है। मल को बाँधता है। पित्त और वात का विनाशक है।

चतुरम्ल और पञ्चाम्ल के नाम

तिन्तिडीक, अनार, इमली और कैथा, इन्हीं के मिलाने से चतुरम्ल बनता है। वैद्यों के मतानुसार अम्लवेत, तिन्तिडी, अनार, बेर और बिजौरा के मिलाने से पञ्चाम्ल बनता है।

कोशाम्र के नाम और गुण

कोशाम्र के कोशाम्रक, घनस्कन्ध, जन्तुवृक्ष और कोशक, ये चार नाम हैं। यह कोढ़, सूजन, रक्तपित्त, घाव और कफ को नष्ट करता है। इसका फल मलबन्धक, वात-नाशक, खट्टा, गरम और भारी है। पित्त को उपजाता है। पका हुआ फल अग्नि को जगाता है। रुचि को बढ़ाता है। हलका और गरम है। कफवात को जीतता है। इसकी गुठली मीठी है। पित्त और वात को शान्त करता है। बलदायक और अग्निवर्द्धक है।

सुपारी क नाम और गुण

सुपारी के क्रमूक, क्रमुक, पूग और पूगीफल, ये चार नाम हैं। य हभारी, ठंढी, रूखी और कसैली है। कफ, पित्त को दूर करती है। मोह पैदा करती है। अग्नि को जगाती और रुचि को उपजाती है। मुख के बिगड़े स्वाद को ठीक करती है। गीली सुपारी भारी होती है, कफ को पैदा करती है। अग्नि और दृष्टि को क्षीण करती है। पकी सुपारी त्रिदोष को हरती है। सूखी सुपारी वात को बढ़ाती है।

कड़ी सुपारी बहुत अच्छी होती है। और भी अनेक सुपारियाँ हैं, जो ठंढी बनी होती हैं। परन्तु पाक और देशविभाग से चिकनी सुपारी समस्त दोषों को हरती है। इसका फूल कृमियों को पैदा करता है। कसैला, मीठा और

भारी होता है। यही गुण चिकनी सुपारी के भेदों में भी जानना चाहिए।

पान के नाम और गुण

नागरपान के ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागिनी, नागवल्लरी और ताम्बूल[1], ये पाँच नाम हैं। यह हृदय को बल देता और भोजन में रुचि बढ़ाता है। तीखा, गरम और कसैला होता है। फैलनेवाला है। कड़वा, खारा और चर्फरा है। काम और रक्तपित्त को पैदा करता है। बलकारी है। कफ, मुख की दुर्गन्ध, मल, वात और परिश्रम का विनाशक है। इसमें चूना कफ और वात को हरता है; कत्था कफ और पित्त को जीतता है। पान इन मसालों के संयोग से अनेक दोषों को हरता है। मन को प्रसन्न करता है। मुख की विरसता को मिटाता है। सुगन्ध, कान्ति और शोभा उत्पन्न करता है।

हरफारेवड़ी के नाम और गुण

हरफारेवड़ी के घनस्निग्धा, महाप्रांशु, प्रपुन्नाट, समच्छदा, सुगन्धमूला, लवली, पाण्डु और कोमलवल्कली, ये आठ नाम हैं। हरफारेवड़ी के फल के श्याम और ज्योत्स्नाफल, ये दो नाम हैं। यह पथरी, बवासीर, वात और पित्त को हरता है। हलका है। विशद है। हृदय को बल देता, रुचि को उपजाता और पित्त कफ को घटाता है।

वृक्ष के ही समान गुण उनके फलों में भी होते हैं। गिरी में भी वे ही गुण जानने चाहिए। सरदी, गरमी, ख़राब हवा (आँधी वग़ैरह) तथा सर्प, कीटआदि से दूषित, बेफ़सल पैदा

१—ताम्बूलं स्वर्णवर्णं क्रमुकफलयुतं साग्रमप्यगृहीतं
कर्पूरेणाण्डजाभ्यां कृतखदिरवटीसौरभेणातिचूर्णम्।
चूर्णं ग्रावानुजातं शिशिरकिरणवत्प्रोज्ज्वलं तेन साकं
दत्वा विप्राय पूर्वं तदनुनरपतिर्भक्षयेदासदत्तम् ॥ १ ॥

हुआ, बुरी भूमि में उपजा और पाक को उल्लङ्घन करनेवाला गला, सड़ा, कीड़ों से युक्त, तत्काल का पका हुआ फल न खाना चाहिए। बिल्व (बेलफल) के सिवा और कच्चे फल विशेष रूप से हानिकारक होते हैं।

सातवाँ वर्ग

कुम्हड़ा आदि सागों के नाम और गुण

कुम्हड़ा[1] के कूष्माण्डकी, पुष्पफली, पचनालि, चतुर्विध, कर्कारु, अफला, कन्दी, आरु और राजकर्कटी, ये नव नाम हैं। यह धातुवर्धक, बलकारक, ठंढा और भारी है। पित्त-रक्त और वात को शान्त करता है। पित्त को मिटाता है।

मध्यम पका हुआ ठंढा होता है और कफ को पैदा करता है। बहुत पका हुआ पेठा बहुत ठंढा नहीं होता। हलका होता है। मन्दाग्नि को जगाता है। बस्ति को शोधता है। वीर्यरोग और त्रिदोष का विनाशक है। यह बहुत मीठा नहीं है। वात, पथरी और कफ को दूर करता है। इसका गूदा पित्त का विनाशक है। वह वीर्य को बढ़ाता तथा बस्ति को शोधता है।

ककड़ी के नाम और गुण

ककड़ी के कर्कटी, लोमशी, व्यालपत्रा, एर्वारु और बृहत्फला, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढी, रूखी, मीठी और भारी होती है। मल को बाँधती है।

गोरखककड़ी के नाम और गुण

गोरखककड़ी[2] के चिर्भट, धेनुदुग्ध और गोरक्षकर्कटी, ये तीन नाम हैं। यह मीठी, रूखी और भारी होती है। पित्त और कफ का विनाश करती है। ठंढी और विष्टम्भी

१—कोहड़ा, पेठा। २—फूट (बड़ी ककड़ी)।

होती है। मल को बाँधती है। पकी हुई गोरखककड़ी गरम होती है और पित्त को शान्त करती है।

तरबूज़ के नाम और गुण

तरबूज़ के कालिङ्ग, कृष्णबीज, कलिङ्ग और फलवर्तुल ये चार नाम हैं। यह मल को बाँधता है। नेत्ररोग तथा पित्त-रोग को हरता है। ठंढा और भारी है। पके हुए तरबूज़ में खार होता है। गरम है। पित्त को बढ़ाता है। कफ और वात को शान्त करता है।

(१) मीठी तूँबी के नाम और गुण

मीठी तूँबी के तूम्बी, मिष्टा, महातुम्बी, राजा, अलाबु और अलाबुनी, ये छः नाम हैं। मीठी तुम्बी का फल पुरुषार्थ को बढ़ाता है। कफ-पित्त को हरता है और भारी है।

(२) कड़वी तूँबी के नाम और गुण

कड़वी तूँबी के कटुतुम्बी, मिष्टफली, राजपुत्री और दुग्धिनी, ये चार नाम हैं। यह ठंढी है। हृदय को बल देती है। पित्त, खाँसी और विष का विनाश करती है।

खीरा के नाम और गुण

खीरा के त्रपुष, कण्टकिलता, सुधावास, कटु, छर्दिपर्णी, मूत्रफला, पित्तक और हस्तिपर्णिनी, ये आठ नाम हैं। यह मूत्र को उपजाता है। ठंढा और रूखा है। पित्त, पथरी और मूत्रकृच्छ्र का विनाश करता है। पका हुआ खीरा गरम और खट्टा होता है। पित्त को उपजाता है। कफ और वात को शान्त करता है।

बालुक के नाम और गुण

बालुक[१] के कण्डक और बालु, ये दो नाम और हैं। यह ठंढा, मीठा और भारी है। रक्तपित्त को हरता है। भेदी है। हलका और गरम है। पका हुआ अग्नि को बढ़ाता है।

---

१ एक प्रकार की ककड़ी, जो बालू में पैदा होती है।

छोटे तरबूज़ के नाम और गुण

छोटे तरबूज़ के शीर्णवृन्त, चित्रफल, विचित्र और पीतवर्णक, ये चार नाम हैं। यह हलका, मीठा, भेदी और गरम है। अग्नि और पित्त को उत्पन्न करता है।

(१) तोरई के नाम और गुण

तोरई के कोशातकी, शतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधसा, मृदङ्गफलका, ज्वेरा, घोटाकी और कर्कशच्छदा, ये आठ नाम हैं। यह हलकी, कड़वी और रूखी होती है। आमाशय को शोधती है। सूजन, पाण्डु, उदररोग, तापतिल्ली, कोढ़, बवासीर, कफ और पित्त को शान्त करती है। इसका फल भेदी, ठंढा और हलका होता है। यह प्रमेह और त्रिदोषों को नष्ट करती है।

(२) घियातोरई के नाम और गुण

घियातोरई के राजकोशातकी, मिष्टा, महाजालि और सपीतका, ये चार नाम हैं। यह ठंढी होती है। ज्वर का विनाश करती है। कफ और वात को बढ़ाती है।

(३) बड़ी तोरई के नाम और गुण

बड़ी तोरई के महाकोशातकी, हस्तिघोषा और महाफला, ये तीन नाम हैं। यह चिकनी और मीठी होती है। पित्त और वात का विनाश करती है।

(१) बैंगन के नाम और गुण

बैंगन के वृन्ताकी, वार्तिकी, वृत्ता, भण्टाकी और भण्टिका, ये पाँच नाम हैं। यह मीठा, तीखा, हलका, गरम और पाक में कड़वा है। पित्त को पैदा करता है। हृदय को बल पहुँचाता है। अग्नि को बढ़ाता है। वीर्य को उत्पन्न करता

१—बाँझ।

है। कफ, वातज्वर, अरुचि और खाँसी को मिटाता है। पका हुआ भाँटा पित्त को बढ़ाता है और भारी है।

(२) सफ़ेद भाँटा के नाम और गुण

सफ़ेद भाँटा के श्वेतवार्ताकु और कुक्कुटाण्डफलोपम, ये दो नाम हैं। इसमें काले बैंगन से कम गुण होते हैं। बवासीरवालों के लिए हितकारी है।

कुँदरू के नाम और गुण

कुँदरू के बिम्बी, रक्तफला, गोला, तुण्डी और दन्तच्छदोपमा, ये पाँच नाम हैं। यह छर्दि पैदा करता है। रक्तपित्त, रक्तरोग और कामला का विनाश करता है। इसका फल ठंढा, मीठा और भारी होता है। पित्तरक्त और दाह को शान्त करता है। विष्टम्भी और भेदी है। वायु, मलमूत्रावरोध और अफरा पैदा करता है।

करेले के नाम और गुण

करेले के कारवेल्ल, कटिल्ल, उग्रकाण्ड, सुकाण्डक, कारवल्ली, वारिवल्ली और बृहद्वल्ली, ये सात नाम हैं। यह ठंढा, भेदी, हलका और तीखा होता है। वात को नहीं बढ़ाता। पित्तरक्त, कामला, पाण्डु, कफ, प्रमेह और क्रिमियों को दूर करता है।

ककोड़ा के नाम और गुण

ककोड़ा के कर्कोटकी, पीतपुष्पा और महाजालिनी, ये तीन नाम हैं। यह मल को निकालता है। कोढ़, थुकथुकी, अरुचि, दमा, खाँसी और ज्वर का विनाशक है। यही गुण इसके फूल में भी हैं। यह विशेष रूप से सेहुवाँ और अरुचि को दूर करता है।

१—खेखसा।

बाँझककोड़ा के नाम और गुण

बाँझककोड़ा के बन्ध्याकर्कोटकी, देवी, नागारि और विषकण्टका, ये चार नाम हैं। यह तीखी होती है। विष, विसर्प और खाँसी को मिटाती है।

करेरुआ के नाम और गुण

करेरुआ के डोडिका, विषमुष्टि, विषयष्टि और समुष्टिका, ये चार नाम हैं। यह कफ, पित्त, बवासीर, क्रिमिरोग, बायगोला और विष का विनाश करती है।

ढेंढस के नाम और गुण

ढेंढस के डिण्डिस, रोमसफल, तिन्दिस और मुनिनिर्मित, ये चार नाम हैं। यह वात को उत्पन्न करता है और रूखा है। मूत्र को पैदा करता है। पथरी को तोड़ता है।

सुआरासेम के नाम और गुण

सुआरासेम के कोलशिम्बी, कृष्णफल, षड्वसी और करपादिका, ये चार नाम हैं। यह वात का विनाश करती है। भारी है। आम, कफ और पित्त पैदा करती है।

सेम के नाम और गुण

सेम के शिम्बी, कुशिम्बी, कुत्सा, अस्राशिम्बी और पुत्रकशिम्बिका, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढी, भारी और बलकारी है। कफ को उपजाती तथा वात और पित्त को दबाती है।

बथुआ के नाम और गुण

बथुआ के वास्तुक, शाकपत्र, कम्बीर और प्रसादक, ये चार नाम हैं। यह पाचक, रोचक और हलका है। वीर्य और बल को बढ़ाता है। दस्तावर है। तिल्लीरोग, रक्तपित्त, बवासीर, कृमिरोग और क्षयी का विनाशक है।

जीवाख्यशाक के नाम और गुण

जीवाख्यशाक के जीवन्तक, शाकवीर, रक्तनाल और प्रणालक, ये चार नाम हैं। यह वातहारी और खारी है। पाक में मीठा है। त्रिदोषों का विनाशक है।

चिल्लीशाक के नाम और गुण

चिल्लीशाक के बृहद्दला, रक्ता, चिल्लिका और गौड-वास्तुका, ये चार नाम हैं। यह सारक है। हलकी, ठंढी, और रूखी है। भोजन में रुचि को बढ़ाती है। बुद्धिवर्धक है। अग्नि को जगाती है। बल देती है। तापतिल्ली, रक्तरोग, त्रिदोष और क्रिमियों को नष्ट करती है।

नारीशाक के नाम और गुण

नारीशाक के कालशाक, कालिका, चुञ्चुका और चुञ्चुक, ये चार नाम हैं। यह दस्तावर और रोचक है। वात को उत्पन्न करता है। कफ और सूजन को मिटाता है। पितरों के कर्म में उत्तम और पवित्र है। आयु को बढ़ाता है। पित्त को अत्यन्त कुपित नहीं करता। ठंढा, रूखा और स्वादिष्ठ है। त्रिदोष को दूर करता है।

चौलाई के नाम और गुण

चौलाई के तण्डुलीयं, मेघनाद, काण्डीर, तण्डुलीयक, विषघ्न, कवर, मारीष और मार्षिक, ये आठ नाम हैं।

यह हलकी, ठंढी और रूखी है। पित्त, कफ और रक्त-पित्त को हितकारी है। मूत्र और मल को उपजाती, रुचि को बढ़ाती और मन्द अग्नि को जगाती है। रक्तपित्त का विनाश करती है।

फोग के नाम और गुण

फोग के मरुद्भव, शृङ्गी, सूक्ष्मपुष्प और शशादन, ये चार

नाम हैं। यह ग्राही और ठंढा होता है। रक्तपित्त और कफ का विनाश करता है।

सफ़ेद मरसा व लाल मरसा के नाम और गुण

मरसा के मारिष, बाष्पक और मार्ष, ये तीन नाम हैं। यह सफ़ेद और लाल दो प्रकार का होता है। दस्तावर है। ठंढा, भारी और भेदी है। त्रिदोषों को हरता है।

परवल के नाम और गुण

परवल के पटोल, पाण्डुक, जातीकल्क, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजीमान और अमृतफल, ये आठ नाम हैं। दूसरे परवल के तिक्तोत्तमा, बीजगर्भा, राजपटोलिका, ज्योत्सी, पटोलिका, जाली, नादेयी और भूमिजम्बुका, ये आठ नाम हैं।

यह पाचक है। हृदय को ताक़त देता है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। हलका है। मन्द अग्नि को जगाता है। चिकना और गरम है। वातरक्त, ज्वर, त्रिदोष और क्रिमियों का विनाशक है। इसका पत्ता पित्त को शान्त करता है। ठंढा है। इसकी बेल कफ को शान्त करती है। जड़ दस्तावर है। इसका फल तीनों दोषों को दूर करता है।

चिचेंड़ा के नाम और गुण

चिचेंड़ा के चञ्चुड, वेशमकूल, श्वेतराजी और बृहत्फला, ये चार नाम हैं। इसमें परवल की अपेक्षा अल्प गुण होते हैं। विशेष रूप से शोषक और हितकारी है।

पालक के नाम और गुण

पालक के पालक्या, वास्तुकाकारा, क्षुरिका और चीरितच्छदा, ये चार नाम हैं। यह वात को उत्पन्न करती

है। ठंढी है। भेदनी है। भारी है। कफवर्धक और विष्टम्भी है। मद, दमा, रक्तपित्त और विष का विनाश करती है।

पोय के नाम और गुण

पोय के पोतकी, पोतका, मत्स्या, काली और सुरङ्गिका, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढी और चिकनी होती है। कफ को उपजाती है। वातपित्त को शान्त करती है। कण्ठ को बिगाड़ती है। पिच्छिल है। आलस्य और वीर्य को बढ़ाती है। रक्तपित्त का विनाश करती है। दूसरी पोय के पोतक्या, पोदिका और दिव्या, ये तीन नाम हैं। यह वीर्यवर्धक है। रक्तपित्त को शान्त करती है।

लोनियाँ के नाम और गुण

लोनियाँ के लोणिका, बृहच्छोटी, कुटिर, कुटिञ्जर, दन्दुर, गुडीरक, पिण्डी और पिण्डीतक, ये आठ नाम हैं। यह रूखी, भारी, ठंढी, दस्तावर, नमकीन और विष्टम्भी है। दोषों को उत्पन्न करती है। पाक में स्वादिष्ठ है। ये ही गुण कुटीर में भी हैं। यह हृदय के रोगों को ह ती है। भारी है। वात को बढ़ाती है। दमा, खाँसी, कफ और विष का विनाश करती है।

फञ्जी के नाम और गुण

फञ्जी के सुषेण, स्वस्तिक, बलद, तिलपर्णिका और सुनिषण, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढी है और मल को बाँधती है। प्रमेह और त्रिदोषों को हरती है। तिलपर्णी ठंढी होती है। रुचि को बढ़ाती है। मल को बाँधती है और कफपित्त को दूर करती है।

रुंटिया के नाम और गुण

रुंटिया के सूक्ष्मपत्र, तीक्ष्णशाक, धनुष्पुष्प, सुबोधक और चौरक, ये पाँच नाम हैं। यह कफ और वात का विनाश करता है। बड़ा तीखा है और अधिक पित्त को नहीं उपजाता।

टुण्टुक के नाम और गुण

टुण्टुक के विटप, रूक्ष, स्वरपत्र और अरण्डज, ये चार नाम हैं। यह वातवर्धक, रूखा और विष्टम्भी है। कफ का विनाशक है।

नसिया के नाम और गुण

नसिया के घनागमभवा, वल्लीप्रसिद्ध और बस्तिज, ये तीन नाम हैं। यह त्रिदोष का विनाशक है। इसका फूल मीठा और दस्तावर है। पक्का फल पुरुषार्थ को बढ़ाता है। दस्तावर है। कच्चा फल मीठा है और वात को उपजाता है।

कुरण्ड और नलवा के नाम और गुण

कुरण्ड के शीतवार और कुरण्डी, ये दो नाम हैं। नलवा के नाडी और नलिका, ये दो नाम हैं। कुरण्ड दस्तावर और हलका है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। सूजन को मिटाता है। वात और पित्त को उपजाता है। नलवा दस्तावर, हलका और ठंढा होता है। पित्त को हरता है। कफ और वात को उपजाता है।

सरसों और कुसुम्भ के नाम और गुण

सरसों शाक के सार्षप और सर्षपोद्भूत, ये दो नाम हैं। कुसुम्भ शाक के कौसुम्भ और कुंकुमोद्भव, ये दो नाम हैं। सरसों का शाक मलमूत्रावरोध करता है। भारी और गरम है। तीनों दोषों को पैदा करता है। कुसुम्भ का शाक मीठा, रूखा, हलका और गरम है। कफ को जीतता है। पित्त को हरता है।

चना और मटर शाक के नाम और गुण

चना शाक के चणक और शाक, ये दो नाम हैं। यह देर में पचता है। कफ और वात को दूर करता है। कलाय

(मटर) का शाक भेदी और हलका होता है। पित्त और कफ को शान्त करता है।

चूकाशाक के नाम और गुण

चूकाशाक के चांगेरी, आम्लिका, चुक्रा, क्षुद्राम्लिका और चतुश्छदा, ये पाँच नाम हैं। यह मन्द अग्नि को जगाता है। भोजन में रुचि उपजाता है। हलका और गरम है। कफ वात को दूर करता है। पित्त को बढ़ाता है। संग्रहणी, बवासीर, कोढ़ और अतीसार का विनाश करता है।

कसौंदी के नाम और गुण

कसौंदी के कासमर्द, कर्कश, जरण और अगज़र, ये चार नाम हैं। यह हलकी है। बिगड़े कण्ठ को सुधारती है। खाँसी, त्रिदोष, विष और रक्तपित्त का विनाश करती है।

गाजर के नाम और गुण

गृञ्जन (गाजर) विशेष कड़वी, चर्फरी, हलकी, तीखी और गरम है। मन्द अग्नि को जगाती है। मल को बाँधती है। रक्तपित्त, बवासीर, ग्रहणी, कफ और वात को शान्त करती है।

मूली के नाम और गुण

मूली के मूलक, हस्तिदन्त, बालमूल और कफान्तक, ये चार नाम हैं। यह बादी है। भोजन में रुचि को बढ़ाती है। बिगड़े स्वर को सुधारती है। गरम, पाचक और हलकी है। त्रिदोष से उत्पन्न श्वास, नेत्ररोग, गलरोग और पीनस का विनाश करती है। घृत में सिद्ध की हुई मूली त्रिदोषों को हरती है। सूखी मूली सूजन को मिटाती है। हलकी है। त्रिदोषों को दूर करती है। इसका फूल कफ पित्त को हरता है और फल वात कफ का विनाशक है।

करीर के नाम और गुण

करीर के करीरक, गूढपत्र, क्रकच और ग्रन्थिल, ये चार नाम हैं। यह कड़वा, भेदी, तीखा और गरम है। कफ वात को शांत करता है। घाव, सूजन, विष और बवासीर का विनाशक है। इसका फूल कफ पित्त को शान्त करता है। फल ग्राही, कसैला, गरम और मीठा है। कफ और पित्त को पैदा करता है

सहिंजना के नाम और गुण

सहिंजना के शिग्रु, सौभाञ्जन, कृष्णगन्ध और बहुलच्छद, ये चार नाम हैं।

दूसरा लाल सहिंजना होता है। तीसरा मधुशिग्रु और हरितच्छद कहाता है। यह तीखा, हलका, ग्राही और गरम है। आँखों को हितकारी है। अग्नि को बढ़ाता है। कफ और वात को दबाता है। गरम है। विद्रधि, तापतिल्ली और घावों का विनाश करता है। रक्तपित्त को उत्पन्न करता है। मीठे सहिंजना में भी ये ही गुण हैं। विशेषकर मीठा सहिंजना अग्निवर्द्धक और दस्तावर है। इसका फूल हलका होता है। मल को बाँधता है। वात को उत्पन्न करता है। पित्त, कफ और सूजन को मिटाता है। कसैला, गरम और मीठा होता है।

लहसुन के नाम और गुण

लहसुन के लशुन, उग्रगन्धी, यवनेष्ठ, रसोनक, गृञ्जन, महाकन्द, जर्जर और दीर्घपत्रक, ये आठ नाम हैं। यह धातु को पुष्ट करता है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। चिकना, गरम, पाचक और दस्तावर है। टूटे हुए को जोड़ता है। बालों को बढ़ाता है। भारी है। पित्तरक्तकारक और बुद्धि-

१—इसी का बीज श्वेत मिर्च है।

दायक रसायन है। कफ, दमा, खाँसी, बायगोला, ज्वर, अरुचि, सूजन, प्रमेह, बवासीर, कोढ़, शूल, वात और कृमियों का विनाश करता है। इसका पत्ता मीठा और खारी है। नाल भी मीठा है। पित्त को उपजाता है।

प्याज़ के नाम और गुण

प्याज़ के पलाण्डु, धवलाख्य, दुर्गन्ध और मुखदूषक, ये चार नाम हैं। इसमें लहसुन के समान गुण होते हैं। कफ पैदा करता है। पित्त को अधिक नहीं उपजाता। गरम नहीं है। पाक में स्वादिष्ठ है। केवल वात और रसों को शांत करता है।

जिमींकन्द के नाम और गुण

पहले जिमींकंद के सूरण, कन्दल, कन्द और गुदामयहर, ये चार नाम हैं। दूसरे जिमींकंद के वल्लकंद और सुरेन्द्र, ये दो नाम हैं। तीसरे जिमींकंद के वन्य और चित्रकन्दक, ये दो नाम हैं। यह दीपन, रूखा, कसैला, कड़वा, हलका, खाज उत्पन्न करनेवाला, विष्टम्भी, विशद और रुचिदायक है। कफ और बवासीर को दूर करता है। इसका नाल रुचिकारी है। कफ वात को हरता है और हलका होता है। यह बवासीरवालों को हितकारी है। कामाग्नि को बढ़ाता है। वन में पैदा हुए जिमींकंद में भी ये ही गुण होते हैं और वह 'वज्रकन्द' कहाता है। यह कफ का नाशक और पित्तरक्तवर्द्धक है।

हड़जोड़ या हड़संहारी के नाम और गुण

हड़संहारी के अस्थिशृङ्खलिका, वज्री, ग्रन्थिमान् और अस्थिसंहति, ये चार नाम हैं। यह पुरुषार्थ को बढ़ाती है। कफ उत्पन्न करती है। मीठी और ठंढी है। हड्डी को जोड़ती है। बलदायक है। पित्तरक्त और वात का विनाश करती है।

वाराहीकन्द के नाम और गुण

वाराहीकन्द के वाराही, मागधी, गृष्टि, वाराहीकन्द, सौकर और किटि, ये छः नाम हैं। यह पित्तवर्द्धक, वर्ण-कारक, स्वादिष्ठ और रसायन है। आयु, वीर्य तथा जठ-राग्नि को बढ़ाता है। प्रमेह, कुष्ठ, कफ और वात को दूर करता है।

मुसली के नाम और गुण

मुसली के मुसली, तालपत्री, खलिनी और तालमूलिका, ये चार नाम हैं। यह धातुओं को पुष्ट करती है। बलदायक है। वीर्य में गरम है। बवासीर और वात का विनाश करती है।

कञ्चुक के नाम और गुण

कञ्चुक के कञ्चुका, पीलुनी, पीलु, फेलुका और दलशालिनी, ये पाँच नाम हैं। यह वात को उत्पन्न करता है। मल को बाँधता है। मन्द अग्नि को बढ़ाता है और कफ पित्त का विनाशक है

धरती के फूल के नाम और गुण

धरती के फूल के भूच्छत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र और वल्लक, ये चार नाम हैं। यह ठंढा, बलकारी, भारी और भेदी है। त्रिदोषों को शान्त करता है।

स्थूलकन्द के नाम और गुण

स्थूलकन्द को ग्रामकन्द भी कहते हैं। स्थूलकन्द भारी है। कफ और वात को पैदा करता है। पित्त और सूजन को शान्त करता है।

मानकन्द के नाम और गुण

मानकन्द को महच्छद भी कहते हैं। मानकन्द ठंढा,

१—प्रायः बरसात में जमीन पर कहीं-कहीं छत्राकार का होता है। इसे कुकुरमुत्ता भी कहते हैं।

है; क्योंकि यह सब दोषों को हरता है। इससे विपरीत समुद्र का जल है; क्योंकि वह खारसमेत, नमकीन होता है और वीर्य तथा दृष्टि-बल का विनाश करता है।

गाङ्गजल (गङ्गाजी का जल) रसायन है, अर्थात् बुढ़ापे को दूर करता है। प्यास, मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह और ग्लानि को हरता है।

दिव्य जल (आकाश से बरसा हुआ पानी) भी अच्छा है। वह रसायन है। महानिद्रा और त्रिदोष को रोकता है। दमा की बीमारी उपजाता, आनन्द को देता और श्रम को हरता है। बुद्धि को बढ़ाता है। आकाश का जल भूमि में पड़कर भौम कहाता है। दिव्य पानी के अभाव में गुण और दोषों को विचारकर भूमि पर का पानी (भौम जल) लेना चाहिए।

कुएँ का पानी कफ को दूर करता है। खारी होता है। पित्त को उपजाता है। अग्नि को बढ़ाता है और भारी है।

तालाब का पानी मीठा, कसैला, बादी तथा पाक में कड़वा है। बावड़ी का पानी पित्तकारक, खारी, कड़वा और वात कफ का विनाशक होता है।

झरने का पानी भेदी है। हृदय को बल देता है। कफ का नाशक है। अग्नि को बढ़ाता है और हलका है।

कुण्ड का पानी हलका होता है। पित्त का नाश करता है। दाह नहीं पैदा करता। जठराग्नि को बहुत ही तेज करताहै।

चोवा का पानी अग्निवर्धक है। रूखा और मीठा है। कफ नहीं पैदा करना।

नदी का पानी दीपन, रूखा, बादी, हलका और भेदी होता है।

सरोवर का पानी मीठा होता है। बलदायक है, प्यास को बुझाता है। कसैला और हलका है।

जङ्गली सरोवर का पानी मीठा और अग्निवर्द्धक होता है। पाक में भारी है। दोषों को उत्पन्न करता है और बादी है।

तलैया का पानी अग्निवर्द्धक है। मीठा है। पाक में भारी होता है और बादी है। विशेष रूप से सब दोषों को उत्पन्न करता है।

ओस का पानी बादी है। शीतल और रूखा है। पित्त और कफ का नाशक है।

आकाश से बरसे पानी की धारा यदि भूमि पर न गिरे, किसी पात्र में ले ली जाय तो वह दिव्यजल सब दोषों को हरता है।

पहाड़ से झिरा पानी भारी और उज्ज्वल होता है। कफ और वात का विनाश करता है।

बर्फ़ का पानी बहुत भारी और ठंढा होता है। पित्त को हरता और वात को बढ़ाता है।

चन्द्रकान्त पानी रूखा और हलका होता है। पित्त, विष और रक्तरोग को शान्त करता है।

दिन में सूर्य की किरणों से तचे और रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से बसे हुए जल को 'हंसोदक' कहते हैं।

हंसोदक चिकना होता है। त्रिदोषों का विनाश करता है। अनभिष्यन्दी और दोषों से रहित है। यह आकाशीय जल के समान होता है। बलदायक और रसायन है। बुद्धिवर्द्धक, ठंढा और हलका है। यह हंसोदक जल अमृत के तुल्य है।

ऋतुओं में जल के गुण

वर्षाऋतु में आकाश का पानी (दिव्य) या भूमि का पानी उत्तम है।

शरद् ऋतु में अगस्त्य तारा का उदय होने पर विष-रहित हुआ पानी स्वच्छ और उत्तम है।

हेमन्त में सरोवर का पानी अथवा तालाब का पानी लाभदायक होता है।

वसन्त तथा ग्रीष्म में कुएँ, बावली और झरने का पानी उत्तम होता है। वर्षाऋतु में चोवा का पानी उत्तम है। यह क़ब्ज़ नहीं करता।

नदियों के जल का वर्णन

शीघ्र बहनेवाली या निर्मल जलवाली जो नदियाँ हैं, उन सबका जल हलका होता है। मन्द बहनेवाली, मैली और सेवारयुक्त जो नदियाँ हैं, उनका जल भारी होता है। पत्थरों से आहत हुए जलवाली नदियों और हिमालय से निकली नदियों का जल पथ्य होता है। गङ्गा, सतलज, सरयू और यमुना आदि नदियों का जल उत्तम गुणोंवाला होता है। कुछ पित्त को उपजाती हैं, स्वच्छ और पवित्र हैं। परन्तु वात का विनाश करती हैं।

मलयाचल से उपजी नदियाँ हलके जलवाली हैं। शीघ्र ही बहती हैं। हित करती हैं। कृतमाला और ताम्र-पर्णी आदि नदियाँ निर्मल जलवाली हैं। स्थिर जलवाली और मलयाचल से उपजी नदियों का जल फ़ीलपाँव, अपची, सूजन, पैररोग, शिरोरोग, कण्ठरोग, गलरोग गाँठ और क्रिमियों को पैदा करता है।

पर्वतों से निकली वेणी और गोदावरी आदि नदियों

का जल विशेषकर कोढ़ पैदा करता है, वात और कफ का विनाश करता है। विन्ध्याचल से निकली क्षिप्रा या नर्मदा आदि नदियों का जल पाण्डु और कोढ़ पैदा करता है। पारियात्रपर्वत से निकली चम्मल आदि नदियों का और जो तालाब से निकली नदियाँ हैं उनका जल पथ्य है, त्रिदोषों का विनाश करता है। बल को हरता है। जो कन्दराओं से निकली हैं, उनका जल कोढ़, मन्दाग्नि, कफ और फ़ील-पाँव पैदा करता है। पूर्व तथा अवन्तिदेश की नदियों का जल गुदा के रोगों को पैदा करता है। मरुदेश से निकली नदियों का जल मीठा, बलदायक और हलका होता है। अग्नि को बढ़ाता है। पश्चिम समुद्र में गिरनेवाली गोमती और नर्मदा आदि नदियों का जल पथ्य है। वातरक्त और पित्त का नाश करता है। बल को बढ़ाता है। खुजली और कफ को हरता है। दक्षिण समुद्र में गिरनेवाली नदियों का जल बलदायक होता है। पित्त को हरता है। कफ, वात को पैदा करता है। पूर्व समुद्र में गिरनेवाली नदियों का जल धीरे बहता है। भारी और घन है।

पृथ्वी से उपजे हुए समस्त जलों को प्रातःकाल ग्रहण करना उत्तम है। इनमें जो निर्मल और ठंढा हो, वह बहुत ही उत्तम होता है।

भोजन के समय पानी के गुण

भोजन के आदि में पिया हुआ जल दुर्बलता और मन्दाग्नि को उत्पन्न करता है। भोजन के मध्य में पिया हुआ जल अग्नि को बढ़ाता है, इसलिए अत्युत्तम है, भोजन के अन्त में पिया हुआ जल शरीर को मोटा करता और कफ को बढ़ाता है।

पानी से जीवन रहता है। समस्त जगत् जलरूप है। इसलिए चतुर मनुष्य जल पीने का कभी अत्यन्त निषेध (मना) न करे; क्योंकि प्राणियों का प्राण पानी ही है। यह विश्व जलमय है। इसलिए अत्यन्त निषेध करने पर भी पानी पीना कभी बिलकुल मना नहीं किया जाता कहीं गरम, कहीं ठंढा, कहीं औटाया हुआ पानी पीने के लिए दे।

अजीर्ण और आमरोग में औटाया पानी पीने को दे। पके हुए अजीर्ण में नितरा (निर्मल) पानी पीने को दे। विदग्ध अजीर्ण में प्यासा मनुष्य ठंढे पानी को पिये तो उसके हृदय का दाह शान्त हो जाता है और शेष अन्न पच जाता है।

अनूपदेश के जल के गुण

अनूपदेश का जल दोषों को पैदा करता है। कफ को उत्पन्न करता है। अतएव निन्दित है।

जाङ्गलदेश के जल के गुण

यह जल समस्त दोषों को दूर करता है और अग्नि को जगाता है।

साधारण देश के जल के गुण

यह जल ठंढा और मीठा होता है। प्यास को बुझाता है। आनन्द देता है और हलका है।

वर्षा के पानी के गुण

जो बरसाती पानी में स्नान करता है, नवीन जल पीता है या पत्ते आदि के गिरने से बिगड़े जल को पीता है, उसके शरीर में भीतरी और बाहरी रोग उत्पन्न होते हैं।

मैले कमल के पत्ते, सेवार, तृणादि से आच्छादित और दुष्ट गन्ध आदि से दूषित या सूर्य और चन्द्रमा की किरणों से विकृत जल को व्यापन्न जाने। यह जल समस्त दोषों को कुपित करता है। कुऋतु की वर्षा के जल को कभी न पिये।

तपाये लोहे से बुझाया हुआ, सूर्य की किरणों से गरम किया हुआ, बालू-रेत आदि से बुझाया हुआ, कपूर, केसर या पाटल आदि से सुगन्धित निर्मल जल अथवा सोने, मोती आदि से युक्त ठंढा जल कहीं भी दोषों को नहीं उत्पन्न करता। औटाया हुआ, फेने से रहित, वेगवर्जित निर्मल जल समस्त दोषों का शमन करता है। वह अग्नि को बढ़ाता है, पाचक और हलका है। गरम पानी के गुण

गरम किया जल हलका होता है। यह अग्नि को बढ़ाता है। शोधन है। पसली-शूल, पीनस, अफरा, हिचकी और वातकफ का विनाश करता है। औटाने से चौथाई भाग जल जाने पर पानी वात का विनाश करता है। आधा जल जाने पर पानी पित्त को हरता है। तीन भाग जल जाने पर अर्थात् चौथाई रहने पर पानी कफ का नाश करता है, मल को बाँधता है, अग्नि को बढ़ाता है और हलका होता है। रात्रि में गरम पानी पीने से कफ दूर होता है। वह वात का नाश करता और अजीर्ण को शीघ्र ही पचाता है।

ऋतुओं में गरम पानी के गुण

औटाने पर चौथाई भाग शेष रहा जल ग्रीष्म और शरद् ऋतु में उत्तम कहा गया है। अर्धभाग शेष रहा जल हेमन्त, शिशिर और वर्षाकाल में उत्तम है। गरम करके ठंढा किया हुआ जल सदैव पथ्य है, हलका है, त्रिदोषों का विनाश करता है। वही रात्रिभर रक्खा हुआ जल भारी होता है, खट्टा है, त्रिदोषों को उत्पन्न करता है। दिन में गरम किया हुआ जल रात्रि में भारी हो जाता है। रात्रि में गरम किया हुआ पानी दिन में पिया जाय तो भारी होकर दोषों

को उत्पन्न करता है। एक साथ बहुत पानी पीने से जठराग्नि कम होती है, और पानी न पीने से रोग उत्पन्न होते हैं। इसलिए जठराग्नि को बढ़ाने के लिए थोड़ा-थोड़ा जल पीना चाहिए।

दूध के नाम और गुण

दूध के दुग्ध, प्रस्रवण, क्षीर, सौम्य, संजीव और पयः ये छः नाम हैं। यह बलकारी, ठंढा और मीठा होता है। वात-पित्त को शान्त करता है। चिकना, रसायन, बुद्धिवर्द्धक और पुरुषार्थ को बढ़ानेवाला है। धातु को पुष्ट करता है। स्तनों में दूध पैदा करता है। बालक, युवा, वृद्ध, कृश, स्त्री, पुरुष अर्थात् प्राणिमात्र के लिए समान गुणकारी है। स्त्रियों में आसक्त पुरुषों के लिए अत्यन्त बलदायक है। बिगड़े पित्त, रक्तरोग, दमा, क्षयी, बवासीर और भ्रम को हरता है। भारी है।

गाय के दूध के गुण

गाय का दूध मीठा, ठंढा, भारी और चिकना होता है। बुढ़ापे को दूर करता है। धातु को बढ़ाता है। स्तनों में दूध को उपजाता और वर्ण को निखारता है। जीवनरूप है। वातपित्त को हरता है। काली गौओं का दूध बहुत अच्छा है। सफ़ेद गौओं का दूध कफ को उपजाता है, भारी होता है। छोटे बछड़ेवाली और मरे बछड़ेवाली गौओं का दूध त्रिदोषों को पैदा करता है। खली आदि के खिलाने से उपजा दूध भारी होता है, कफ का विनाश करता है।

बकरी के दूध के गुण

बकरी के दूध में गाय के दूध के समान गुण होते हैं। यह विशेषकर मल को बाँधता है, अग्नि को बढ़ाता है और हलका है। क्षयी, बवासीर, अतीसार, प्रदर, रक्तपित्त;

भ्रम और ज्वर का विनाश करता है। बकरियों का शरीर छोटा होने से, उनके कड़वा, तीखा आदि खाने से, थोड़ा पानी पीने से और बहुत घूमने से बकरियों का दूध सब रोगों को हरता है।

भेंड़ी के दूध के गुण

भेंड़ी का दूध मीठा होता है, बालों को बढ़ाता है और चिकना होता है। वातकफ को दूर करता है, भारी है, वात की खाँसी और केवल वातरोग में उत्तम है।

भैंस के दूध के गुण

भैंस का दूध मीठा और गाय के दूध के समान होता है। चिकना, भारी और बलदायक है। नींद और वीर्य को उपजाता है। ठंढा है। मल को बाँधता और अग्नि को मंद करता है।

स्त्री के दूध के गुण

नारी का दूध हलका होता है। ठंढा है। अग्नि को बढ़ाता है। वातपित्त को शान्त करता है। अक्षिशूल और नेत्राघात का शमन करता है। नस्य और आश्च्योतनकर्म में हितकारी है, अर्थात् नेत्र की बीमारी में नेत्र में छोड़ने के लिए उत्तम है।

हथिनी के दूध के गुण

हथिनी का दूध भारी, ठंढा, स्वादिष्ठ और बलकारी है। नयनों के लिए हितकर है।

ऊँटनी के दूध के गुण

ऊँटनी का दूध मीठा, रसीला, सलोना, दस्तावर और हलका होता है। अग्नि को बढ़ाता है। कृमि, कोढ़, कफ, अफरा, सूजन और उदररोग को हरता है।

घोड़ी के दूध के गुण

घोड़ी का दूध गरम, रूखा, स्वादिष्ठ, सलोना, खट्टा, हलका और बलदायक है। वातकफ का नाशक है। एक

खुरवाले सब चौपायों के दूधों में ये ही गुण होते हैं।

सामान्य दूधों के गुण

धारोष्ण दूध के गुण

धार से निकला गरम दूध दीपन, बलदायक, हलका और ठंढा होता है। त्रिदोषों का विनाश करता है।

रखे हुए दूध के गुण

तीन मुहूर्त (छः घड़ी) के बाद रखा हुआ दूध खाने के योग्य नहीं रहता, और बारह घड़ी के उपरान्त रखा हुआ दूध विष के समान मनुष्य को हानिकारक है। इसलिए तत्काल के निकाले हुए दूध को पिये। वह अमृत के समान गुणकारी है।

यदि धार का निकाला ठंढा दूध पिया जाय तो वह त्रिदोषों को उत्पन्न करता है। धार से निकला गरम गाय का दूध अच्छा होता है, और धार से निकाला ठंढा किया हुआ भैंस का दूध उत्तम होता है।

गरम किये हुए दूध के गुण

भेंड़ी का दूध गरम किया हुआ गरम ही पीना उत्तम है। गरम करके ठंढा किया हुआ बकरी का दूध पीना अच्छा है। गरम करके ठंढा किया हुआ दूध पित्त को शान्त करता है। गरम करके गरम ही पिया गया दूध वात-कफ का विनाशक है। बहुत ही पकाया हुआ दूध भारी हो जाता है। चिकना होता है। पुरुषार्थ और बल को बढ़ाता है।

कच्चे दूध के गुण

कच्चा दूध आमवात और कफ को शान्त करता है और भारी होता है। स्त्रियों का कच्चा ही दूध पथ्य होता है। यदि स्त्रियों का दूध गरम किया जाय तो दोषों को पैदा करता है।

प्रातःकाल के दूध के गुण

रात में चन्द्रमा के गुणों की अधिकता और परिश्रम न करने से प्रातःकाल का दूध विष्टम्भी और भारी होता है।

सायंकाल के दूध के गुण

सूर्य की किरणें लगने से तथा परिश्रम और वायु का सेवन करने से सायंकाल का दूध थकावट को दूर करने-वाला, बल बढ़ानेवाला, आँखों के लिए हितकर और वात-पित्त को हरनेवाला है। बिगड़ा, खट्टा, दुर्गंधित, नमकीन तथा नीले रंग का दूध रोगों को पैदा करता है।

मलाई के गुण

पके दूध पर आई हुई मलाई रूखी, भारी और ठंढी होती है। पुरुषार्थ को बढ़ाती है। पित्तरक्त और वात का विनाश करती है।

सात रात्रि तक रक्खा हुआ दूध निन्दित हो जाता है। जैयट ने फटे या देर के रखे हुए दूध को 'मोरट' कहा है।

तत्काल ब्याई गौ आदि का दूध 'पीयूषघन' (खीस) कहाता है, और जो दही के बराबर दूध डालकर पकाया जाता है, उसे 'दधिकूर्चिका' कहते हैं। यदि मट्ठे के बराबर दूध मिलाकर पकाया जाय तो उसे 'तक्रकूर्चिका' कहते हैं। छाछ या मट्ठे के कारण फटे हुए दूध को निचोड़ने पर उसे पिंड या तक्रपिंड कहते हैं। औटाया हुआ दूध गाढ़ा (खोवा) हो जाता है। उसे 'किलाट' कहते हैं। जो विना औटाये ही दूध फट जाय, उसे 'क्षीरशाक' कहते हैं।

पीयूषसहित 'मोरट' होता है। मोरट, पीयूषघन, दधि-कूर्चिका, तक्रकूर्चिका, क़िलाट और क्षीरशाक मिसरी

मिलाकर खाने से स्वादिष्ठ, निद्रा लानेवाले, आमवर्द्धक और बलदायक होते हैं। ये सब भारी हैं, कफ पैदा करते हैं।हृदय को बल देते हैं। दही तथा मट्ठे की 'कूर्चिका' होती है। 'किलाट' और क्षीरशाक के साथ ये निद्रा, आम और पुष्टि को देते हैं। ये सब भारी हैं, कफ उत्पन्न करते हैं। हृदय को बल देते हैं। 'तक्रकूर्चिका' वाताग्नि का विनाश करती है, वात को उपजाती है, विलम्ब में पचती है, रूखी है और मल को बाँधती है।

दही के नाम और गुण

दही के दधि, स्त्यान, पयस्सम्यक्, ईषत्स्त्यान और मन्दक, ये पाँच नाम हैं। मीठा, खट्टा, अत्यन्त खट्टा और मिठखट्टा, ये दही के चार भेद हैं। दही गरम, दीपन और चिकना है। पीछे से कसैलापन लाता है। भारी है। पाक में खट्टा है। मल को बाँधता है। पित्तरक्त, सूजन, मद और कफ को बढ़ाता है। ताज़ा मीठा दही[1] मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय (ज़ुकाम), शीतज्वर, विषमज्वर, अतीसार, अरुचि और कार्श्यरोग में लाभदायक होता है और बल को बढ़ाता है। विना जमा दही त्रिदोष उत्पन्न करता है। मीठा दही वात-पित्त को शान्त करता है। खट्टा दही पित्तरक्त और कफ पैदा करता है। बहुत खट्टा दही रक्तपित्त को बढ़ाता है। खट्टे-मिट्ठे दही में ये ही मिश्रित गुण होते हैं।

गाय के दही के गुण

गाय का दही उत्तम और बलदायक है। पाक में मीठा है। रुचि को बढ़ाता है। पवित्र, दीपन और चिकना है। पुष्टता करता है और वात का विनाश करता है।

१—दही ताज़ा मीठा ही स्वादिष्ठ और लाभदायक है।

बकरी के दही का गुण

बकरी का दही उत्तम और बलदायक होता है। मल को बाँधता है। हलका है, त्रिदोषों का विनाश करता है। दमा, खाँसी, बवासीर, क्षय और कार्श्यरोग को हरता है। मन्द अग्नि को बढ़ाता है।

भेंड़ी के दही का गुण

भेंड़ी का दही पुरुषार्थ को बढ़ाता है। कफ और वात को कुपित करता है। अभिष्यन्दि रसवाला है। पाक में मीठा होता है। प्रायः दोषों को उपजाता है।

भैंस के दही का गुण

भैंस का दही अतीव चिकना और कफकारी है। वात-पित्त को हरता है। वीर्य को पुष्ट करता है। पाक में मीठा और भारी है। रक्त को दूषित करता है।

नारी के दही का गुण

नारी का दही त्रिदोषों को हरता है। आँखों के लिए हित-कर है। तृप्ति को पहुँचाता है और भारी है। बलकारी है। पाक में मीठा और चिकना है। अग्नि को बढ़ाता है।

हथिनी के दहीं का गुण

हथिनी का दही वीर्य में गरम और पाक में कड़वा है। अग्नि का विनाशक है। देर तक रखने से कसैला हो जाता है। मल को बढ़ाता है और कफवात को शान्त करता है।

ऊँटनी के दही का गुण

ऊँटनी का दही पाक में कड़वा, भेदी, खारी और खट्टा होता है। उदररोग, कुष्ठ, बवासीर, शूल, बाँझपन, वात-रोग और कृमियों का विनाश करता है।

घोड़ी आदि के दही का गुण

घोड़ी आदि एक खुरवाले पशुओं का दही रूखा और अभिष्यन्दी है। दोषों को उत्पन्न करता है। मन्द अग्नि को जगाता है। मीठा है, आँखों के लिए हितकर है। वात को उत्पन्न करता है। कफ और मूत्ररोग को दूर करता है।

गौ के दही का गुण

सब दहियों में गौ का ही दही उत्तम और गुणकारी है। कपड़े में छाना हुआ दही बहुत चिकना और वातनाशक होता है। कफ को उत्पन्न करता है। भारी है। बलकारक है। शरीर को पुष्ट करता है। रुचि को बढ़ाता है। स्वादिष्ठ है।

पकाये हुए दूध के दही का गुण

यह रुचिवर्द्धक, चिकना और बहुत लाभदायक है। सब प्रकार का दही पित्त-वात को शान्त करता है। धातु, अग्नि और बल को बढ़ाता है।

मलाई रहित दही के गुण

यह दही मल को बाँधता है। कसैला है। वात को उत्पन्न करता है। हलका है। विष्टम्भी, दीपन और रोचक है। संग्रहणीरोग का विनाश करता है। शक्कर के साथ खाया हुआ दही गुणकारक होता है। प्यास, पित्तरक्त और दाह को मिटाता है। गुड़समेत दही वात को शान्त करता है। पुरुषार्थ और वीर्य को बढ़ाता है। तृप्ति करता है और भारी होता है।

वसन्त आदि ऋतुओं में दही के गुण

चैत्र, वैशाख (वसंत), ज्येष्ठ, आषाढ़ (ग्रीष्म), आश्विन और कार्त्तिक (शरद्), इन महीनों में विशेषकर दही न खाना

चाहिए। अगहन, पौष (हेमंत), माघ और फागुन (शिशिर), इन महीनों में दही खाना उत्तम है। श्रावण और भादों (वर्षा) में दही लाभदायक है। मूत्रकृच्छ्र, अरुचि, दुर्बलता, शीतज्वर, अतीसार और प्रतिश्याय में तथा दिन में दही खाना उत्तम है। रात्रि में दही न खाना चाहिए। पानी और घी से मिला हुआ दही खाना अच्छा होता है।

दहीसर के नाम और गुण

दहीसर के दध्युत्तर, दधिस्नेह, दध्यग्र, कटुक और सर, ये पाँच नाम हैं। यह भारी है। धातु को बढ़ाता है। वात और अग्नि को कम करताहै। बस्ति को शोधताहै। खट्टा है। पित्त और कफ को बढ़ाता है।

दही के पानी का गुण

दही का पानी (तोड़) ग्लानिहारी, बलकारी और हलका है। भोजन में रुचि पैदा करता है। स्रोतों को शोधता है। हर्ष को बढ़ाता है। कफ, प्यास और वात का विनाश करता है। वीर्य को फाड़ता है। तृप्तिकारक है। शीघ्र ही मलसंचय को भेदता है।

मट्ठे के नाम

मट्ठे के दण्डाहत, कालशेय, गोरस और विलोड़ित, ये चार नाम हैं। रससमेत और पानी से रहित दही को 'घोल' कहते हैं। रस से हीन दही 'मथित' कहलाता है। समान पानीवाला दही सफ़ेद होता है। जिस दही में आधा पानी मिला होता है, उसको 'उदश्वित्' कहते हैं। चौथाई पानीवाला दही 'तक्र' होता है। कुछ वैद्यों ने आधे पानीवाले दही को 'तक्र' कहा है।

मट्ठे के गुण

मट्ठा मल को बाँधता है। कसैला खट्टा और स्वादिष्ठ है।

अग्नि को बढ़ाता है। हलका होता है। वीर्य में गरम, बलदायक, रूखा और तृप्तिकारी है। वात का विनाशक है। सूजन, कृत्रिम विष, छर्दि, प्रसेक, विषमज्वर, पाण्डु, मेद, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रावरोध, भगन्दर, प्रमेह, बायगोला, अतीसार, शूल, तिल्लीरोग, कफ, कृमि, सफ़ेद कोढ़, प्यास, उदररोग और अपची का विनाश करता है। गरमी के समय, आश्विन और कार्त्तिक में कमजोरी, भ्रम, मूर्च्छा, पित्तरक्त, मद और शोथ में तक्र का खाना वर्जित है।

शीतकाल में तथा ग्रहणी, बवासीर, कफरोग, वातरोग, स्रोतों का रुकना और मन्दाग्नि रोगों में 'तक्र' का खाना अमृत-सेवन के समान होता है। सब प्रकार का मट्ठा स्वादिष्ठ होता है। कफ को बढ़ाता है। वात-पित्त को शान्त करता है। खट्टा तक्र वातहारी है। रक्तपित्त को कुपित करता है। सेंधानमक मिला हुआ तक्र वातरोग में हितकारी है। खाँड़ मिला हुआ तक्र पित्त में हितकर है। कफरोग में सोंठ, मिरच और पीपल के खार से युक्त रूखे तक्र को पीना लाभदायक होता है। घी निकाला हुआ तक्र पथ्य है। विशेष हलका है। कुछ घी निकाला हुआ तक्र वीर्य को पुष्ट करता है। भारी है, कफ का विनाश करता है।

घी निकाले हुए तक्र के गुण

जिस तक्र का घी न निकाला गया हो, वह ठंढा है। भारी और कफकारी है।

तक्र के नाम, भेद और गुण

गाय, भैंस, बकरी आदि पशुओं के जो आठ प्रकार के दही पीछे कहे जा चुके हैं, उन्हींके समान गुणवाले आठ

प्रकार के तक्र होते हैं। परन्तु घोल और मथित, दोनों दही के समान ही होते हैं; क्योंकि इन दोनों में थोड़ा ही जल होता है। इनके भी चार नाम हैं। मण्डल तक्रा, लघु तक्रा, कूर्चिका और दधिसंभवा। इनमें भी गुण तक्र के समान ही होते हैं।

मक्खन क नाम और गुण

मक्खन के हैयङ्गवीन, सरज, नवनीत और मन्थन, ये चार नाम हैं। यह हलका होता है। मल को बाँधता है। ताजा मक्खन स्वादिष्ठ, गुणकारी और ठंढा होता है। थोड़े दिनों का निकाला हुआ मक्खन (नैनू) कसैला और खट्टा होता है। वीर्य को पुष्ट करता ह। पित्त और वात का विनाश करता है। अविदाही है (जलन नहीं पैदा करता)। अग्नि को बढ़ाता है। आँखों के लिए हितकारी है। क्षयी, बवासीर, घाव और खाँसी को अच्छा करता है।

बहुत दिनों का निकाला हुआ मक्खन भारी होता है। कफ और मेदा को बढ़ाता है। सूजन को मिटाता है। बलकारक और वीर्यवर्द्धक है। विशेषकर बालकों के लिए यह अमृत के समान है। दूध से निकाला हुआ नवनीत बहुत चिकना होता है। आँखों के लिए हितकर है। रक्तपित्त को दबाता है। वीर्य को पुष्ट करता है। बल को बढ़ाता है और मल को बाँधता है। स्वादिष्ठ और बड़ा ठंढा होता है।

घी क नाम और गुण

घी के घृत, आज्य, हवि, सर्पिस्, आधार और अमृताह्वय, ये छः नाम हैं। यह रसायन है अर्थात् बुढ़ापे को दूर करता है। स्वादिष्ठ है। आँखों के लिए हितकर और भारी होता है। अग्नि को बढ़ाता है। वीर्य में शीतल है। विष,

अलक्ष्मी, वातपित्त और वात का विनाश करता है। महाभिष्यन्दी है। कान्ति, ओज, तेज, सुन्दरता और बुद्धि को बढ़ाता है। उदावर्त, ज्वर, उन्माद, शूल, अफरा और घावों को अच्छा करता है। चिकना, कफकारक और रूखा है। क्षयी, विसर्प, रक्तपित्त को शान्त करता है। बिगड़े स्वर को सुधारता है और घावों को भरता है। विशेषकर बालक और वृद्धों के लिए बलदायक है। दूध से निकाला हुआ घी ग्राही और ठंढा होता है। नेत्ररोगों का विनाशक है। पित्त, दाह, रक्तपित्त, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वात को दूर करता है।

पुराना घी पाक में कड़वा होता है। त्रिदोषों का नाशक है। कर्णरोग, नेत्ररोग, शिरशूल, कोढ़, मिरगी और सूजन को दूर करता है। योनिरोग, ज्वर, दमा, कोढ़, बवासीर, बायगोला और पीनसरोग का विनाशक है। मन्द अग्नि को जगाता है। बस्तिकर्म और नस्यकर्म में उत्तम है। घी के मण्ड (छाँछ) में भी घी के ही समान गुण होते हैं। परन्तु वह तीखा, हलका और फैलनेवाला होता है।

दस वर्ष रक्खे हुए घी के गुण

दस वर्ष तक के रखे हुए पुराने घी को वैद्यों ने 'कौम्भ' कहा है। यह राक्षसदोषों को हरता है। हलका है। अत्यंत गुणकारी होने से यह 'महाघृत' कहाता है। घी के गुण और दोष दूध के ही समान हैं। सब घृतों में गौ का घी गुणकारी होता है और भेड़ का घी निन्दित है।

तेल के गुण

तेल गरम और भारी होता है। स्थिरता में हितकर है। बल और वर्ण को पैदा करता है। पुरुषार्थ बढ़ाता है। दस्ता-

वर और फैलनेवाला है। रस और पाक में स्वादिष्ठ है।

गरम किये हुए तेल के गुण

गरम किये हुए तेल का रस कसैला होता है। तीखा है। कफ वात का विनाशक है। पाक में मीठा और तेज़ है। धातु को बढ़ाता है। रक्तपित्त को जीतता है। कफकारी और कड़वा है। मल, मूत्र, त्वचा और गर्भाशय को शोधता है। मन्द अग्नि को जगाता है। बालों को बढ़ाता है। बुद्धिवर्द्धक है। परिश्रम को मिटाता है। घाव और प्रमेहों को अच्छा करता है। कर्णरोग, योनिरोग, शिर-शूल और नेत्ररोग का विनाशक है। किसी अंग के मथित होने पर, गिर पड़ने पर, कोई अंग कट जाने या टूट जाने पर तथा सर्पादि के विष में, चोट लगने पर और अग्नि से जल जाने पर पीने और मालिश करने में तेल सदैव पथ्य है।

पकाये हुए घी के गुण

पका हुआ घी एक साल के बाद हीन वीर्य हो जाता है।

पुराने या पके हुए तेल के गुण

पका हुआ या न पका हुआ अथवा बहुत दिनों का रखा हुआ तेल उत्तम गुणों से युक्त होता है।

एरण्ड तेल के गुण

एरण्ड का तेल मीठा, गरम, दीपन और शोधन है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। बिगड़ी खाल को सुधारता है। अवस्था को स्थिर रखता है। बुद्धि, कान्ति और बल को बढ़ाता है। कसैले रसवाला है। हलका है। योनि और वीर्य को शोधता है। वात, उदररोग, अफरा, बायगोला, अष्ठीला, कटिग्रह, वातरक्त, शूल, घाव,

सूजन, आम और विद्रधिरोगों का विनाश करता है।

कड़वे तेलों के गुण

इलायची, पीपरामूल, देवदाली, जमालगोटा की जड़, किवाँच, सहिंजना, नींब, अलसी, करंजवा, आक, लाल एरण्ड, हस्तिकन्द और हींगन का तेल, शङ्खिनी का तेल, कदम्ब का तेल, मालकाँगनी का तेल, कुसुम्भ का तेल, सरसों का तेल और सुवर्चला का तेल, ये सब पाक में चर्फरे, तेज़, गरम, फैलनेवाले तथा हलके और कड़वे होते हैं। कुष्ठ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा और कृमियों को विनाशते हैं।

नींब, अलसी, सरसों और कुसुम्भतेल के गुण

नींब का तेल कोढ़, घाव, कफ, ज्वर और कृमियों को दूर करता है।

अलसी का तेल अग्निरूप (तेज) है। चिकना और गरम है। कफ पित्त को हरता है। पाक में कड़वा है। नयनों के लिए हितकारी है। बल को बढ़ाता है। वात को हरता है और भारी होता है।

सरसों का तेल कृमियों को मारता है। कोढ़ और खुजली को मिटाता है और हलका है। पित्तरक्त को दूषित करता है। प्रमेह, कर्णरोग और शिररोगों का नाशक है।

कुसुम्भ का तेल कड़वा होता है। आँखों को हानि पहुँ-चाता है। बल को बढ़ाता है। बात को हरता है। तीखा, विदाही और गरम है। द्वन्द्वज दोषों को पैदा करता है।

मालकाँगनी और अखरोट आदि के तेलों के गुण

मालकाँगनी का तेल पित्त को पैदा करता है। स्मृति और बुद्धि को बढ़ाता है।

अखरोट, साँप की काँचली, बहेड़ा और नारियल के तेल के गुण

इनका तेल पित्तवात को हरता है। कफ और बालों को बढ़ाता है। भारी और ठंढा है।

शीशम, अगर, थूहर, ईख और देवदारु के तेल के गुण

इनका तेल कसैला, कड़वा और तीखा होता है। बिगड़े घावों को सुधारता है। वातरक्त, विष, कफ, खुजली, कोढ़ और वात को दूर करता है।

भिलावाँ के तेल के गुण

यह कसैला, वीर्य में गरम, मीठा और कड़वा होता है। कोढ़, ऊर्ध्वदोष, अधोरोग, त्रिदोष, रक्तरोग, मेदरोग, प्रमेह और कृमियों को दूर करता है *।

पलाश आद और कूष्माण्ड आदि के तेलों के गुण

टेसू, महुआ और पाटलाफल का तेल कसैला और मीठा है। दाह, पित्त और कफ को शान्त करता है।

कुम्हड़ा, ककड़ी, ख़रबूज़ा, लौकी, तरबूज़, परवल, चिरौंजी, जीवन्ती और लसोड़े के तेल के गुण

इनका तेल भारी, पाक में मीठा तथा ठंढा होता है। मूत्र को उपजाता है। जठराग्नि को मन्द करता है। अभिष्यन्दी और कफदायक है। वातपित्त को शान्त करता है।

पाठा के तेल के गुण

इसका तेल ठंढा है। पित्त का हरता है। कफ और वात पैदा करता है।

शंखाहूली के तेल के गुण

शङ्खाहूली का तेल कुछ कड़वा होता है। बुढ़ापे को दूर

---

* अनुभवी वैद्य की युक्ति के बिना सेवन करने से शोथ, कोढ़, खाज, चर्मरोग आदि अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं।

करता है। मन्द अग्नि को जगाता है। लेखन, बुद्धिवर्धक और पथ्य है। त्रिदोषों का विनाश करता है।

आम के तेल के गुण

यह कुछ कड़वा और मीठा है। पित्त को अत्यन्त नहीं पैदा करता। कफ वात को हरता है। रूखा है। यह सुगन्धि-युक्त होने से बहुत उत्तम है। वृक्षादि के तेल भी अन्य तेलों की भाँति वात को शान्त करनेवाले हैं। इनमें तेल का होना गौण है। ये मुख्यतः बल बढ़ाते और वर्ण को निखारते हैं।

मांस के नाम

मांस के मांस, पिशित, क्रव्य, आमिष, पलल और पल, ये छः नाम हैं।

मांस के गुण

मांस वातहारी, धातुवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक, तृप्तिकारी, भारी और हृदय को प्रिय है। रस और पाक में मीठा है।

देशभेद से मांस के गुण

ग्राम्य, अनूप और औदक इन देशों में रहनेवाले जीवों की मेदा, मज्जा और वसा भारी, मीठी और गरम होती है। वात का विनाश करती है।

जाङ्गलदेश में बसनेवाले, एक खुरवाले और मांस खाने-वाले जीवों की मेदा, मज्जा और वसा कसैली, हलकी और ठंढी होती है। रक्तपित्त को हरती है।

पक्षियों के मांस के गुण

चोंच से चुगनेवाले (प्रतुद) तोता, परेवा, खञ्जन, कोयल आदि और विष्किर अर्थात् बत्तक, लवा, मुर्गा और चकोर आदि जीवों की मेदा, मज्जा और वसा कफ को शान्त करती है।

घी, तेल, वसा, मेदा और मज्जा वात को हरती हैं। ये वस्तुएँ पाक में यथोत्तर बहुत स्वादिष्ठ होती हैं।

मदिरा के नाम और गुण

मदिरा के मद्य, हाला, सुरा, शुण्डा, मदिरा, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, कल्पा, देवसृष्टा और वारुणी, ये दस नाम हैं। यह प्रायः पित्त को पैदा करती है, फैलनेवाली है, रुचि को उपजाती है। मन्द अग्नि को जगाती, दाह पैदा करती और मलमूत्र को बढ़ाती है। तीखी है, वात और कफ का विनाश करती है। विधि से भोजन के साथ उचित मात्रा (दवारूप) में पी हुई मदिरा रोगों को दूर करके अमृत के समान गुणकारी होती है। पर बहुत पी हुई मदिरा विष के समान है।

दाख की मदिरा के गुण

दाख की मदिरा दाह नहीं पैदा करती, इसलिए पित्तरक्त के रोग में उत्तम है। बल पैदा करती है और पोषक है। यह खूनी बवासीर को शान्त करती है। मन्द अग्नि को जगाती है।

महुआ की मदिरा के गुण

महुआ की मदिरा कम गुणोंवाली होती है।

खजूर की मदिरा के गुण

यह वात को बढ़ाती है। विशद और रुचिवर्द्धक है। कफ का विनाश करती है। दोषों को निकालती है और हलकी है।

शाली, साठी और पिट्ठी आदि की मदिरा के गुण

शाली चावल और साठी चावल तथा पिट्ठी आदि की बनाई मदिरा को वैद्यों ने 'सुरा' कहा है। यह भारी होती है। बल, दुग्ध, पुष्टता, मेदा और कफ को पैदा करती है। मल को बाँधती है। सूजन, बायगोला, बवासीर, ग्रहणी और मूत्रकृच्छ्र को दूर करती है।

वारुणी मदिरा के भेद और गुण

पुनर्नवा (साठी की जड़) और नये शाली चावलों की पीठी से बनाई हुई मदिरा को वैद्यों ने 'वारुणी' कहा है। इसमें सुरा के समान गुण होते हैं। हलकी होती है। पीनस, आध्मान (पेट का फूलना) और शूल का विनाश करती है।

'सुरा' का मण्ड 'प्रसन्ना' होती है। 'सुरामण्ड' से घन-रूप 'कादम्बरी' बनती है। कादंबरा से बनी हुई को 'जगल' कहा है। इससे घनरूप 'मेदक' होता है। जगल का सार 'पक्कश' है और सुरा का बीज 'किण्वक' होता है।

प्रसन्ना आदि (मदिराओं) के गुण

प्रसन्ना अफरा, गोला, बवासीर, छर्दि, अरोचक और वात को दूर करती है। मन्द अग्नि को जगाती है। कुक्षिपीड़ा और शूल का विनाश करती है।

कादम्बरी मदिरा के गुण

कादम्बरी भारी होती है। पुरुषार्थ को बढ़ाती है। मन्द अग्नि को जगाती और बादी पैदा करती है। दस्तावर होती है।

जगल मदिरा के गुण

जगल मदिरा कफ को मिटाती और मल को बाँधती सूजन, बवासीर और संग्रहणी को दूर करती है।

मेदक, पक्कश और किण्वक मदिरा के गुण

मेदक मीठी और बलदायक है। वीर्य का स्तम्भन करती है। ठंढी और भारी है। पक्कासार (हीर) के निकल जाने से क़ाबिज़ होकर वायु को बढ़ाती है।

किण्वक वात को शान्त करती है। हृदय को हानि पहुँचाती है। विलम्ब में पकता और भारी है।

आक्षिकी मदिरा के गुण

बहेड़े की छाल या शाली चावलों से जो मदिरा बनाई जाती है, उसे 'आक्षिकी' कहते हैं। यह पाण्डुरोग, सूजन, बवासीर, पित्तरक्त, कफ और कोढ़ को हरती है। कुछ बादी पैदा करती है। रूखी है। मन्द अग्नि को जगाती है। दस्तावर और हलकी होती है।

यवसुरा मदिरा के नाम

यवों की पीठी से बनाई गई मदिरा को वैद्यों ने 'यवसुरा' कहा है। इसे काकोलिकी, हली, मैरेय और धान्यजासव भी कहते हैं। आसव और सुरा इन दोनों के बनाने का पात्र तथा साधन एक ही है। दोनों का 'मैरेय' होता है। कहीं धाय के फूल, गुड़ और अन्न के जल से बनाया हुआ मद्य 'मैरेय' कहाता है।

यवसुरा के गुण

यवसुरा भारी और रूखी है। क़ब्ज़ और त्रिदोषों को पैदा करती है।

काकोली मदिरा के गुण

काकोली धातु को बढ़ाती है। पुरुषार्थ को पैदा करती है। दृष्टि को मन्द करती है और भारी होती है।

मैरेय मदिरा के गुण

मैरेय धातुवर्धक है। स्त्रीरमण में हित है। भारी और तृप्तिकारक है। फैलनेवाली और दस्तावर होती है।

मधूलक मदिरा के गुण

सब रसों से बनी मदिरा को वैद्यों ने 'मधूलक' कहा है। यह भारी, मीठी और चिकनी होती है। वीर्य और कफ को बढ़ाती है।

आसव के गुण

आसव दीपन, स्वादिष्ठ, पाचक, रोचक और हलका होता है। स्त्रीसंग में आनन्द देता है। बादी, क्षयी और बस्तिविकार को हरता है।

मध्वासव के गुण

मध्वासव हलका और रूखा होता है। कोढ़, प्रमेह और विष का विनाश करता है।

गुड़ की मदिरा के गुण

यह मन्द अग्नि को बढ़ाती है। वर्ण और बल को पैदा करती है। तृप्ति देती है। कड़वी, तीखी, धातुवर्धक और मीठी होती है। मल, मूत्र और बादी पैदा करती है।

सीधु या पक्करस के गुण

ईख का पका हुआ रस 'सीधु' होता है। इसी को वैद्यों ने 'पक्करस' कहा है। इसी के आसव से बने हुए रस को पण्डितों ने 'शीतरस' माना है। सीधु और पक्करस श्रेष्ठ है। स्वर, अग्नि, बल, वर्ण तथा वातपित्त को पैदा करता है। हृदय को प्यारा, चिकना और रोचक है। अफरा, प्रमेह, सूजन, बवासीर, उदररोग और कफ के रोगों को शान्त करता है। 'शीतरस' में इससे कम गुण होते हैं। यह विशेषकर दस्तावर, फैलनेवाला और भली भाँति लेखन होता है।

जाम्बव मदिरा के गुण

शहद से बनी हुई मदिरा को 'जाम्बव' कहते हैं। जामुन का रस और गुड़ से बनी हुई मदिरा भी 'जाम्बव' कहाती है। यह नयनों को मूँदती है। कसैली है। वात को कुपित

करती है। अरिष्ट, आसव * और सीधु के गुणों और कामों को कुशल वैद्य बुद्धि के द्वारा विचारकर जिस प्रकार मद्य बनी हो, उसका वैसा ही गुण बतावे। चिकनी, दाह करनेवाली, दुर्गन्धवाली, रसरहित, कीड़ों से युक्त, हृदय का अहित करनेवाली, ताजी, रूखी, बुरे पात्र में रखी, अल्प औषधोंवाली, बहुत दिनों की रखी और झागोंवाली मदिरा कफ को कुपित करती है। विशेष विलम्ब में पचती है। बहुत तीखी, गरम और विशेष दाह करनेवाली मदिरा पित्त को कुपित करती है। हृदय को अहित, कोमल, दुर्गन्धवाली, कीड़ों से युक्त, रसरहित, भारी तथा बासी मदिरा वात को कुपित करती है। दोषों से बनी अनेक दोषों को प्रकोपित करती है।

चिरस्थित मदिरा के गुण

बहुत समय की रखी हुई, उत्पन्न रसवाली मदिरा मन्द अग्नि को जगाती है, कफवात को शान्त करती है। रुचिदायक, प्रसन्न करनेवाली, सुगन्धित और बुद्धि को बढ़ानेवाली मदिरा सदैव सेवन करनी चाहिए। इसलिए एक भाँति की मदिरा के रस और वीर्य को जानकर दूसरी को बिना जाने सेवन न करे। वह मदिरा सूक्ष्म होने से गरम होती है। वात से और अविकासी होने से अग्नि को मन्द नहीं करती, अपितु हृदय को भली भाँति धमनियों के ऊपर पहुँचकर मदिरा इन्द्रिय और मन को चलायमान करती और वीर्य में शीघ्र ही मद पैदा कर देती है।

---

* यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं च आसवः।
आसवस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः॥

कफ, वात, पित्तप्रकृतिवाले पुरुषों में मद की उत्पत्ति

कफप्रकृतिवाले पुरुषों में गिरानेवाला मद (नशा) बहुत देर में उत्पन्न होता है।

वातप्रकृतिवाले पुरुषों में मद कुछ देर में होता है।

पित्तप्रकृतिवाले पुरुषों में शीघ्र ही मद हो आता है।

नवीन, अरिष्ट और पुरानी मदिरा के गुण

नवीन मदिरा अभिष्यन्दी होती है। त्रिदोषजनक और फैलनेवाली है। 'अरिष्ट' धातुवर्धक, दाहकारी, दुर्गन्धवाला, विशद तथा भारी होता है।

पुरानी मदिरा भोजन में रुचि पैदा करती है। कृमि, कफ और वात का विनाश करती है। हृदय को प्रिय, सुगन्धित, सुन्दर गुणोंवाली और हलकी होती है। नाड़ी के स्रोतों को शोधती है।

सात्त्विक आदि मद्यपों के लक्षण

सतोगुणी प्रकृति का पुरुष मद्य पीने से गीत गाता व हँसता है। रजोगुणी स्वभाव का पुरुष मदिरा पान करके साहस, हठ आदि के कार्य करता है। तमोगुणी प्रकृति-वाले पुरुष मदिरा पीकर निन्दित कर्म में सदैव रमते हैं। सो जाते हैं।

चुक्र और गौड़ी आदि रसयुत मद्य के गुण

'चुक्र' कफहारी, तीखा, गरम, हलका, रोचक और पाचक है। पाण्डु और क्रिमिरोग को हरता है। रूखा है। भेदी है। रक्तपित्त पैदा करता है। मद्यों में गौड़ी आदि रसयुक्त जो मदिरा हैं, वे पूर्व-पूर्व क्रम से भारी हैं। अभिष्यन्द रोग को पैदा करती हैं।

काँजी के नाम और गुण

काँजी के काञ्जिक, सौवीर और आरनाल, ये तीन नाम हैं। यह दोषों को पैदा करती है। स्पर्श में ठंढी है। पाचक, रोचक और हलकी है।

तुषोदक

कच्चे जवों से बनाया हुआ पेय 'तुषोदक' कहाता है।

सौवीर

तुषों समेत कच्चे जवों से या तुषरहित पक्के जवों से बनाया हुआ पेय "सौवीर' कहाता है।

रसाम्ल, सौवीरक

सब रसों से बनाया हुआ रसाम्ल होता है। कोई इसे सौवीरक कहते हैं।

तुषोदक मन्द अग्नि को जगाता है। हृदय को लाभ-दायक है। पाण्डु और क्रिमियों को हरता है। 'सौवीरक' संग्रहणी और बवासीर का विनाशक है। भेदी है। अग्नि को बढ़ाता है। छूने से दाह पैदा करता है। पीने से दोषों को पचाता है। कुल्ला (गरारा) करने से मुख की विरसता व दुर्गन्ध को हरता है। कफ का विनाशक है।

गौ, हस्ती आदि के मूत्र के गुण

गौ, हाथी, भैंसा, घोड़ा, बकरी, भेड़, गधा, ऊँट और मनुष्य, इन सबका मूत्र पाचक होता है। मन्द अग्नि को जगाता है। हलका है। नुनखरा, कड़वा और रूखा है। नाड़ियों के स्रोतों को शोधता है। पित्त को उपजाता है चर्परा, हृदय को प्रिय और भेदी है। वात को अनुलोमित

१—धान्यादि का मण्ड दो-तीन दिन रखा रहने से जब खट्टा हो जाय, तब काँजी कहाता है।

करता है। बायगोला, बवासीर, सूजन, उदररोग, कफ, कृमिरोग, कोढ़, पाण्डु, अफरा, विष, शूल और अरुचि का विनाश करता है। इन सब मूत्रों में गोमूत्र श्रेष्ठ होता है।

हाथी का मूत्र विष और बवासीर को अच्छा करता है। कोढ़, बायगोला और क्रिमियों को दूर करता है।

भैंसे का मूत्र सूजन, बायगोला, बवासीर, पाण्डु और प्रमेह का विनाशक है। घोड़े का मूत्र विशेष रूप से भेदी है। कफ, दाह और क्रिमियों को हरता है।

बकरी का मूत्र बायगोला, विष, दमा, कामला और पाण्डुदोषों का विनाश करता है। भेड़ का मूत्र शोथ, कोढ़, बवासीर, प्रमेह और मलबन्ध को दूर करता है।

गधे का मूत्र संग्रहणी, प्रमेह, कोढ़, उन्माद और कृमियों का विनाशक है। ऊँट का मूत्र उन्माद (पागलपना), सूजन, बवासीर, कृमि, शूल और उदररोगों को दूर करता है।

मनुष्य का मूत्र रोगनाशक है। बुढ़ापे को नहीं आने देता। गौ, बकरी, भेड़ी, भैंस, इन स्त्रीजाति के पशुओं का मूत्र श्रेष्ठ होता है। गधा, ऊँट, हाथी, मनुष्य और घोड़ा, इनमें पुरुषजातियों का मूत्र वैद्यों ने हितकर माना है।

नवाँ वर्ग

ईख आदि के नाम और गुण

ईख के इक्षु, महारस, वेणु, निस्सृत, गुडपत्रक, तृणराज, मधुतृण, गण्डीर, अमृतपुष्पक, ह्रस्वमूल, लोहितेक्षु और पौण्ड्रक, ये बारह नाम हैं।

ईख के पाँच भेद

ईख के पौण्ड्रक, रसाल, सुकुमार, कृष्णेक्षु और भीरुक, ये पाँच भेद हैं। यह मीठी, भारी और ठंढी होती है। पुरुषार्थ को बढ़ाती है। चिकनी होती है। बल पैदा करती है। जीवनीय है। वातपित्त को हरती है। मूत्र, कफ और कृमि पैदा करती है। जड़ में बहुत मीठी, मध्य में कम मीठी, अग्रभाग में नुनखरे रसवाली होती है और मूत्र को उपजाती है।

लाल ईख व पौंड़ा आदि के गुण

लाल ईख भारी और ठंढी होती है। दाह, पित्तरक्त और मूत्रकृच्छ्र का विनाश करती है। पौंड़ा ठंढा और चिकना है। धातु को बढ़ाता है। कफ को पैदा करता है और फैलनेवाला होता है।

काली ईख पौंड़े के समान गुणोंवाली होती है। वंशनामक ईख में भी पूर्वोक्त गुण होते हैं। परंतु कुछ खारी है। 'शतपोर' नामक ईख 'वंशेक्षु' के समान ही गुण रखती है। कुछ गरम है। वात को शान्त करती है।

'कान्तार' और 'तापस' नामक ईख में भी ये ही गुण होते हैं। काष्ठ नामक ईख वात को उपजाती है और ठंढी है। 'कासकार' नामक ईख भारी और ठंढी होती है। रक्तपित्त और क्षयी को हरती है।

नैपाली ईख के नाम और गुण

नैपाली ईख के सूचीपत्र, नीलपर, नैपाल और दीर्घपत्रक, ये चार नाम हैं। यह बादी को बढ़ाती है। कफ और पित्त को शान्त करती है। कसैली है और बड़ी जलन पैदा करती है।

ईख के रस का गुण

दाँतों से चूसा हुआ ईख का रस पित्तरक्त का विनाश

करता है। खाँड़ (चीनी) के समान वीर्यवाला है। दाह को हरता है। कफकारक और भारी है। यन्त्र (कोल्हू) से निकाला ईख का रस भारी होता है। दाह को पैदा करता है और विष्टम्भी होता है।

राब आदि के नाम और गुण

राब, खाँड़ और गुड़ आदि के सिता, मत्स्यण्डिका, पल्ली, ममाण्डी, बलक, विषपल्लद्गन्धा, शिशुका, कृत्तिका, अमला, खण्ड, खण्डसिता, माधवी, मधुशर्करा, यवासशर्करा, यवासक्काथसंभवा, पुष्पसिता, पुष्पसंस्कृतशर्करा, फाणित, क्षुद्रगुड़क, गुड़ और इक्षुरसोद्भव, ये इक्कीस नाम हैं। राब मल को बाँधती है। बल पैदा करती है। भारी है और पित्त तथा वात का विनाश करती है।

मिसरी के नाम और गुण

मिसरी के सितोपला और सहा, ये दो नाम हैं। यह भारी है। वातपित्त को हरती है। ठंढी है। खाँड़ में भी ये ही गुण होते हैं। वह विशेषकर भोजन में रुचि उपजाती है। पुष्टि और बल को देती है।

शहद की खाँड़ रूखी होती है। बादी को जीतती है। कफ और पित्त को शान्त करती है और भारी होती है। गुड़ को औटाकर बनाई हुई खाँड़ ठंढी होती है। वात को उपजाती है और कफपित्त को जीतती है।

चीनी खाँड़ के नाम और गुण

चीनी खाँड़ के सिता और पुष्पसिता, ये दो नाम हैं। यह हृदय को प्रिय है। रक्तपित्त को हरती है और भारी होती है।

मधुक (राब के भेद सीरा) के नाम और गुण

मधुक (राब) भारी और अभिष्यन्दी है। दोषों को उपजाता है। मूत्र को शोधता है। बस्ति को दूषित करता है और वातपित्त को उपजाता है।

गुड़ के गुण

गुड़ खारी, भारी और मीठा होता है। वात, पित्त और अग्नि को बढ़ाता है। दस्तावर होता है। बलदायक है। कृमि और कफ पैदा करता है। मूत्र और रक्त को शोधता है।

पुराने गुड़ के गुण

पुराना गुड़ हृदय को हित, हलका, पथ्य, अग्निवर्द्धक और पुष्टिकारक होता है। अभिष्यन्दी नहीं है।

ईखरस के विकारों का गुण

ईख के विकार जितने ही विमल (साफ़) बनाये जायँ, उतने ही गुणकारी होते हैं। प्यास, दाह, मूर्च्छा, पित्तरक्त, विष और प्रमेह आदि रोगों को हरते हैं। ठंढे होते हैं। भारी, मीठे, बलदायक और चिकने हैं। वात को हरते और दस्तावर होते हैं।

शहद के नाम और गुण

शहद के मधु, पुष्पासव, पुष्परस और माक्षिक, ये चार नाम हैं। शहद के माक्षिक, पौत्तिक, क्षौद्र और भ्रामर, ये चार भेद हैं। तेल के समान कान्तियुक्त शहद को 'माक्षिक' कहते हैं। घृत के समान प्रकाशवाला शहद 'पौत्तिक' है। कपिल रंगवाले को 'क्षौद्र' और स्फटिकमणि की कान्तिवाले शहद को 'भ्रामर' कहते हैं। शहद ठंढा, हलका, मीठा और रूखा होता है। मल को बाँधता है। लेखन है। आँखों को हितकारी है। भेदन है। मन्द अग्नि को जगाता, बिगड़े स्वर को सुधारता और घावों को शोधता और भरता है। वर्ण को निखारता है। बुद्धि और पुरुषार्थ को बढ़ाता है।

१—श्लेष्माणमाशु विनिहन्ति सुदार्द्रकेण पित्तं निहन्ति च तदेव हरीतकीभिः।
शुण्ठ्या समं हरति वातमशेषमित्थं दोषत्रयक्षयकराय नमो गुडाय॥

विशद और रोचक है। कोढ़, बवासीर, खाँसी, पित्तरक्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि और क्रिमियों का नाश करता है। मद, प्यास, छर्दि, दमा, हिचकी, अतीसार, हृद्रोग, दाह, क्षत, क्षय और रक्तरोग को शान्त करता है। यह योगवाही है और स्वल्प वात उपजाता है।

माक्षिक शहद के गुण

माक्षिक शहद[1] सब शहदों में उत्तम है। यह आँखों के रोगों को हरता है और हलका होता है।

पैत्तिक शहद के गुण

पैत्तिक शहद रूखा और गरम होता है। पित्त, दाह और रक्तवात को पैदा करता है।

क्षौद्र शहद के गुण

क्षौद्र शहद में गुण माक्षिक के समान ही हैं। यह विशेषरूप से प्रमेह को अच्छा करता है।

भ्रामर शहद के गुण

भ्रामर शहद रक्तपित्त को हरता है। मूत्र और जड़ता पैदा करता है। भारी होता है।

नये शहद के गुण

नवीन शहद अभिष्यन्दी और चिकना होता है। कफ को हरता है और दस्तावर होता है।

पुराने शहद के गुण

पुराना शहद ग्राही और रूखा होता है। मेदरोग का विनाश करता है और अतीव लेखन होता है।

विषसमेत व घाम से तपाये हुए शहद के गुण

विषयुक्त फूलों से विषैली मक्खी या भौंरा आदि मधु-

१–सब पाकों को ठण्ढा करके शहद मिलाना चाहिए। यह सिद्धान्त चरक आदि ऋषियों का है।

संचय कर जो शहद बनाते हैं, उसको वैद्यों ने विष के समान कहा है। इसलिए अग्नि और घाम से तपाया हुआ शहद यदि खाया जाय तो प्राणी को मार डालता है, क्योंकि शहद को तपाने से विष का पूर्ण रूप शहद ही में आ जाता है। बिना तपाये शहद का यह दोष मोम और छत्ते में रह जाता है। गरम देश में गरमी के समय गरम द्रव्यों से बनाया हुआ शहद गरम प्रकृति के मनुष्य को विष के समान है। उस (विषैले) शहद को निरूहबस्ति और वमन के कार्य में वैद्यों ने मना नहीं किया है, क्योंकि वह शहद परिपाक को प्राप्त नहीं होता अर्थात् वमन और निरूहबस्ति से उलटा निकल जाता है।

मोम के नाम और गुण

मोम के मदन, मधुज, सिक्थ, मधूच्छिष्ट, मधूलित, मयन, मधुशेष, मध्वाहार और मदनक, ये नव नाम हैं। यह कोमल और बहुत चिकना होता है। भूतविकार का विनाश करता है। घावों को भरता है। टूटे हुए को जोड़ देता है। वात, कोढ़, विसर्प और रक्तरोग को शान्त करता है।

दसवाँ वर्ग

धान आदि के नाम और गुण

लाल शालि आदि चावलों को 'शालि' कहते हैं। साठी आदि चावल 'ब्रीहि' कहाते हैं। मूँग आदि को 'वैदल' और 'शैल' कहते हैं। ककुनी आदि को 'तृणधान्य', 'क्षुद्रधान्य' और 'कुधान्य' भी कहते हैं। जव आदि को 'शूकधान्य'

१—शालिधान्यं व्रीहिधान्यं शूकधान्यं तृतीयकम्।
शिम्बीधान्यं क्षुद्रधान्यमित्युक्तं धान्यपञ्चकम्॥

कहा है। लाल शालि लाल रंग का होता है। शालि चावल के गरुड़, शकुनीहृत, सुगन्धिक, महाशालि, कलम, कलामक, रक्तशालि, दीर्घशूक, पुण्डू, महिषमस्तक, पूर्णचन्द्र, महाशालि, पुण्डरीक, प्रमादक, पुष्पाण्डक, शीतभीरु, काञ्चन, शकुनीहृत, पाण्डुगौर, शारिवाख्य, रोध्रपुष्प, सुगन्धक, हायन, दीर्घलात, महादूषक और दूषक, ये छब्बीस भेद हैं।

ये मीठे, चिकने और बलकारी हैं। मल को बाँधते हैं। पित्त का विनाश करते हैं। अल्पवात, अल्पकफ और मूत्र को उत्पन्न करते हैं। हलके और ठंढे हैं। उनमें से लाल शालि उत्तम है। बल को पैदा करता है। वर्ण को निखारता है। त्रिदोषों को जीतता है। आँखों के लिए हितकारी है। मूत्र को उत्पन्न करता, बिगड़े स्वर को सुधारता, वीर्य को पैदा करता, प्यास और ज्वर का विनाश करता है। विष को हरता और घावों को भरता है। अन्य शालि इससे कुछ कम गुणवाले होते हैं।

महाशालि पुरुषार्थ को उपजाता है। बल को बढ़ाता है। इसमें लाल शालि के से गुण होते हैं।

साठी (धान) आदि के नाम और गुण

कार्मुक, पीत, आमोद और मुकुन्दक, ये चारों हलके हैं। पुरुषार्थ को बढ़ाते हैं। महाषाष्टिक, केदार, पुष्पांकुर और बक आदि साठी चावल के भेद हैं। ये मीठे, ठंढे और हलके होते हैं। मल को बाँधते हैं। वातपित्त को शान्त करते हैं। शालिधान के समान गुणवाले होते हैं। साठी

१—"गर्भस्था एव ये पाकं यान्ति ते षष्टिका मताः।
षष्टिरात्रेण पच्यन्ते षष्टिकास्ते उदाहृताः॥" बोने के समय से लेकर साठ रात में जो धान पकते हैं, उनको आचार्यों ने साठी कहा है।

चावल उत्तम, हलका और चिकना होता है और त्रिदोषों को जीतता है। पाक में मीठा है। मल को बाँधता है। स्थिरता करता है। बल देता है। इससे कम गुणवाले साठी के चावल लालशालि के समान होते हैं।

व्रीहि (धान) के नाम और गुण

व्रीहि के कृष्णव्रीहि, तुरितक, कुक्कुटाण्डक, पाटल, शालायु, राजीवाक्ष, नन्दी और जन्तुमुख आदि भेद हैं। ये मीठे और ठंढे होते हैं। इनमें साठी चावलों के समान गुण होते हैं। कृष्णव्रीहि (धान) उत्तम होता है। दूसरे व्रीहि अल्पगुणवाले होते हैं।

भुने हुए शालि हलके और रूखे होते हैं। कफ को निकालते हैं।

स्थूलजशालि मीठे होते हैं। पित्त और कफ को हरते हैं। वात और अग्नि को बढ़ाते हैं। केदारशालि वातपित्त-नाशक और भारी होते हैं। कफ और पित्त को पैदा करते हैं।

रौप्य और अतिरौप्य, ये दोनों हलके होतेहैं। मूत्र को उपजातेहैं। उत्तम गुणवाले होतेहैं। छिन्नरूढ़शालि ठंढे होतेहैं। रूखे हैं। पित्त का नाश करतेहैं। शीघ्र ही दोषों को पचाते हैं।

पुराना चावल अन्धों का नेत्र कहाता है। बड़े यत्न से पानी में भिगोया, भली भाँति घाम में सुखाया चावल रूखा और हलका होता है। मन्दअग्नि को जगाता है। पाचक है। बुद्धिवर्धक है। वात और कफ को हरता है। साठी चावल को भी व्रीहिधान में कहा है। परन्तु शीघ्र पाक होने से यह उससे अलग है।

गेहूँ के नाम और गुण

गेहूँ के गोधूम, सुमन, क्षुद्र, मधूली, रूपशीतला, नन्दी-

मुख, अल्पगोधूम, लोकेशी और पासिका, ये नव नाम हैं। यह मीठा, ठण्ढा, वातपित्तहारी और भारी होता है। कफ और वीर्य को बढ़ाता है। बलदायक और चिकना है। टूटे हुए को जोड़ता है। दस्तावर होता है। जीवनरूप और धातुवर्धक है। वर्ण को निखारता है। झिरनेवाला है। रुचि को उपजाता है। स्थिरता लाता है।

मधूली गेहूँ ठंढा और चिकना होता है। पित्त का विनाश करता है। हलका होता है। नन्दीमुख गेहूँ वीर्य और धातु को बढ़ाता है। पथ्य होता है। बड़े गेहूँ से छोटे गेहूँ में थोड़े गुण होते हैं।

जौ के नाम और गुण

जौ के यव, शुचि, तीक्ष्णशूक, निशूक और अतियव, ये पाँच नाम हैं। यह कसैला, मीठा और ठंढा है। पित्त, कफ और रक्त को जीतता है। घावों में तिलों के समान पथ्य है। रूखा है। बुद्धि और मन्द अग्नि को बढ़ाता है। लेखन है। मल को बाँधता है। बिगड़े स्वर को सुधारता है। प्रमेह को अच्छा करता है और प्यास को हरता है। बहुत वात तथा मल पैदा करता है। स्थिरता लाता और वर्ण को उज्ज्वल करता है। पिच्छिल है। अतियव में इससे कुछ कम गुण होते हैं।

शिम्बी के नाम और गुण

शिम्बी, मूँग, चना, उड़द, मटर, मोठ, मसूर, चौला, ग्वार और त्रिपुट आदि 'वैदल' कहाते हैं। ये मीठे, रूखे, कसैले और पाक में कड़वे होते हैं। बादी उपजाते हैं। कफ पित्त का विनाश करते हैं। मलमूत्र में अवरोध पैदा करते हैं। ठंढे होते हैं।

मूँग और मसूर को छोड़कर अन्य सब वैदल अफरा

पैदा करते हैं। शिम्बीधान्य विष्टम्भी (क़ाबिज़) हैं। प्रमेह में लाभदायक हैं और दृष्टि को क्षीण करते हैं। वातपित्त को बढ़ाते हैं। विशद, भारी, हृदय के लिए हितकारक और रूखे हैं। पाक में कड़वे होते हैं। सफ़ेद, काले, लाल आदि इनके कई भेद होते हैं।

मूँग और वनमूँग के नाम

मूँग के मुद्ग, बलाढ्य, मङ्गल्य, हरित, शारद, पीत, प्रचेत, बलाक और माधव, ये नव नाम हैं। वनमुद्ग, तुबरक, राजमुद्ग और खण्डक, ये चार नाम वनमूँग के हैं।

वनमूँग और मूँग के गुण

यह रूखी और हलकी है। मल को बाँधती, कफ पित्त को शान्त करती है। ठंढी होती है। यही गुण मूँग में भी होते हैं। परन्तु वह स्वादिष्ठ होती है। अल्प वात को पैदा करती है। आँखों के लिए हितकारी है। बिगड़े वर्ण को सुधारती है। इनमें हरी मूँग उत्तम होती है। इसका साग भी बहुत ही तीखा होता है। पर उत्तम है।

उड़द के नाम और गुण

उड़द के माष, वीर्यकर, धारी, धवल और राजमाषक, ये पाँच नाम हैं। यह भारी, पाक में मीठा और चिकना होता है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। वात को हरता है। गरम है। तृप्तिकारी और बलदायक है। वीर्य को उपजाता है। धातु को बढ़ाता है। मूत्र, कफ और स्तनों को भेदता है। पित्त कफ को पैदा करता है। गुदकील, लकवा, दमा और प्रक्तिशूल का विनाश करता है।

लोबिया के गुण

राजमाष (लोबिया) स्वादिष्ठ, रूखा, कसैला और हलका होता है। मल को बाँधता है। वात, कफ, दूध, मल और रक्त को बहुत बढ़ाता है।

मसूर के नाम और गुण

मसूर के मकुष्टक, मकुष्ट, मसूरिका, मसूर, निष्पाव और वल्लक, ये छः नाम हैं। यह बादी को बढ़ाता, मल को बाँधता और कफपित्त को हरता है। भारी होता है। छर्दि को दबाता है। पाक में मीठा है। कृमि उत्पन्न करता है और ज्वर का विनाश करता है।

मोठ के गुण

निष्पाव (मोठ, भटवाँसु) वात, पित्तरक्त, मूत्र और दूध को उत्पन्न करता है। दस्तावर होता है। विदाही, गरम और भारी है। कफ और सूजन को बढ़ाता है। वीर्य का विनाश करता है।

मटर के नाम और गुण

मटर के वर्तुल, सतीन, हरेणु और स्वल्पवर्तुल, ये चार नाम हैं। यह ठंढा है। मल को बाँधता है। कफ पित्त को दूर करता है। हलका है। पाक में मीठा और रूखा होता है। ये ही गुण हरेणु में भी होते हैं।

चटरी (दुबिया) के नाम और गुण

चटरी के कलाय, खण्डिक, त्रिपुट और क्षुद्रखण्डिक, ये चार नाम हैं। यह कफ और पित्त को मिटाती है। मल को बाँधती है। ठंढी है। बादी बहुत बढ़ाती है। ये ही गुण त्रिपुट में भी होते हैं। इसका साग कफ और पित्त को शान्त करता है।

चना के नाम और गुण

चना के चणक, हरिमन्थ, वाजिमन्थ और जीवन, ये चार नाम हैं। यह ठंढा और रूखा है। रक्तपित्त और कफ का विनाशक है। हलका है। कसैला और विष्टम्भी है। वात को उत्पन्न करता है और कोढ़ को मिटाता है।

मसूरभेद के नाम और गुण

मसूर के मसूकारि, मसूरि, मङ्गल्या और पाण्डुरापल, ये चार नाम हैं। यह पाक में मीठी, मल को बाँधनेवाली, ठंढी और हलकी होती है। कफ और पित्तरक्त को शान्त करती है। बलवर्द्धक है। इसका साग भी हलका और तीखा होता है।

कुलथी के नाम और गुण

कुलथी के कुलत्थ, चक्रक, चक्र, कुलाल, वनज, अपरा, दृक्प्रसादा, चक्षुष्या, कुलत्थिका, कुलाली, लोचनहिता, कुम्भकारी और मलापहा, ये तेरह नाम हैं। यह पाक में कड़वी और कसैली है। रक्तपित्त को दूर करती है। हलकी, दाहकारिणी और वीर्य में गरम है। दमा, खाँसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, वीर्यरोग, नेत्ररोग, अफरा और पीनस को अच्छा करती है। पसीने को रोकती है। बायगोला, मेदोरोग और कृमियों को दूर करती है। दस्तावर होती है।

वनकुलथी विशेष रूप से ठंढी होती है। नेत्ररोग और विष का विनाश करती है।

तिल, वन्यतिल के नाम और गुण

तिल और वन्यतिल के तिलपुष्प, तैलफल, तिलपिञ्ज, सित, जातिल और वनज़ात, ये छः नाम हैं। यह कसैला, मीठा और तीखा होता है। रस में कड़वा है। मल को बाँधता है। भारी, स्वादिष्ठ और चिकना है। रक्त, कफपित्त और बल पैदा करता है। बालों को बढ़ाता है। स्पर्श में ठंढा है। बिगड़ी खाल को सुधारता है और घावों को अच्छा करता है। वन्यतिल अल्पमूत्रकारी और धातुनाशक है। मन्द अग्नि को जगाता और बुद्धि को बढ़ाता है।

काले तिल सब तिलों में उत्तम होते हैं। वीर्य को उत्पन्न करते हैं। सफ़ेद तिल मध्यम होते हैं।

लाल आदि रंगों के और तिल अत्यन्त हीनगुण होते हैं।

अरहर के नाम और गुण

अरहर के आढकी, तुवरी और शणपुष्पिका, ये तीन नाम हैं। यह मल को बाँधती है। ठंढी और हलकी है। कफ, विष और रक्तरोग को शान्त करती है।

अलसी के नाम और गुण

अलसी के अतसी, मसृणा, नीलपुष्पा, चेलूत्तमा और क्षुमा, ये पाँच नाम हैं। यह वीर्य और दृष्टि को क्षीण करती है। चिकनी है। वातरक्त को जीतती है और भारी होती है।

कुसुम्भ के नाम और गुण

कुसुम्भ के वार्धकी, पीत, अलक्त और वस्त्रराञ्जिनी, ये चार नाम और हैं।

कुसुम्भ-बीज के नाम और गुण

कुसुम्भबीज के किरटा, लघ्वी और शुद्धपयोत्तरा, ये तीन नाम हैं। यह वात को उपजाता है। मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त और कफ का विनाशक है। इसके बीज में अलसी के समान गुण होते हैं। वह विशेष रूप से विष को दूर करता है।

सरसों, राई के नाम और गुण

सरसों के सर्षप, कटुक, स्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, तुतुभ, सिद्धार्थ और श्वेतसर्षप, ये आठ नाम हैं।

राई के राजिका, वासुरी, राजी, सुतीक्ष्ण और कृष्ण-सर्षप, ये पाँच नाम हैं।

सरसों कफवातहारी, रूखी, तीखी और गरम होती है

रक्तपित्त उत्पन्न करती है। अग्नि को बढ़ाती है। खुजली, कोढ़ और कोठे के कृमियों को नष्ट करती है। ये ही गुण राई में भी जानना चाहिए। परन्तु राई विशेष रूप से तीखी और तेज होती है।

सन के नाम और गुण

सन के शण, मातुलानी, जन्तुतन्तु और महाशण, ये चार नाम हैं। यह ठंढा और भारी है। मल को बाँधता है। इसका फूल भी प्रदर और रक्तरोग को शान्त करता है।

तृणधान्य के नाम और गुण

तृणधान्य के कंगू, श्यामाक, नीवार, वरक, उद्दाल, नर्तक, वरट्टिका, तोदपर्णी, कोद्रव, मधूलिका, नन्दीमुख, वेणुयवा, प्रियंगु, कोरदूषक, गवेधुका, नल, नाली, मुकुन्द और वारिकादि, ये उन्नीस नाम हैं। यह हलका, मीठा और पाक में कड़वा है। लेखन, रूखा और गरम है। मलमूत्र को बाँधता और वातपित्त को कुपित करता है।

काकुन के भेद और नाम

काकुन के पीततण्डुलिका, कंगु, प्रियंगु, कर्कटी, सितकंगु, मुसटी, रक्तकंगु, शोधिका, चीनाक, काककंगु, श्यामाक, शणकंगुक, शालि आदि तेरह नाम हैं।

ककुनी पित्त को दबाती, पुरुषार्थ को जगाती और टूटे हुए को जोड़ती है। भारी होती है।

कोदों के नाम

कोदों के कोद्रव, कुरस, कोरदूष, उद्दाल और वनकोद्रव, ये पाँच नाम हैं। कोदों ठंढा होता है। मल को बाँधता है। विष, पित्त और कफ को शान्त करता है।

सावाँ के गुण

सावाँ ठंढा, रूखा और सुखानेवाला है। पित्त, कफ और वात का विनाशक है।

तिन्नी के नाम और गुण

तिन्नी के नीवार, उटिका, नाड़ी, मुनिव्रीहि और मुनिप्रिय, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढी और ग्राही है, पित्त का विनाश करती है और कफ-वात को पैदा करती है।

ज्वार के नाम और गुण

ज्वार के यावनाल, देवधान्य, जुह्लोलि, जुह्लल और अनल, ये पाँच नाम हैं। यह ठंढी और मीठी होती है। बादी को उपजाती है। कफ-पित्त को जीत लेती है।

गोहुवाँ, सहुवाँ के नाम और गुण

गोहुवाँ के गवेधुका, कर्षणी, गोजिह्वा और आकर्षिणी, ये चार नाम हैं। यह कड़वा और मीठा है। शरीर को दुबला करता है। कफ का विनाशक है।

धान्यों में विशेषता

सामर्थ्यरहित, व्याधिपीड़ित, बिना समय भूमि से अन्य जगह में उपजा हुआ, नया और कीड़े आदि से युक्त अन्न गुणकारी नहीं होता। नया अन्न अभिष्यन्दी, भारी और मीठा होता है। कफ को पैदा करता है। एक साल के बाद समस्त धान्य भारीपन को छोड़ देते हैं। परन्तु अपने-अपने वीर्य को नहीं त्यागते। बरन् क्रम से दो वर्ष के बाद बिदाहीपन, गुरुता, विष्टंभता, विरूढता (पाचन न होकर जिससे ज्वरादि उत्पन्न होते हैं) और दृष्टिदूषण आदि को त्यागकर हलके और अत्यन्त पाचक हो जाते हैं। धान्यों में भी जौ, गेहूँ

तिल और उड़द नये ही लाभदायक होते हैं। पुराने, विरस और रूखे हो जाने पर यथार्थ गुण को नहीं करते*।

ग्यारहवाँ वर्ग

भोजन आदि के नाम और गुण

भोजन के आहार, भोजन, जग्धि और नित्यशोजीवन ये चार नाम हैं। यह शीघ्र ही बल देता है। तृप्ति करता है। देह को धारण किये रहता है। पराक्रम, तेज, स्वर, उत्साह, धैर्य स्मरणशक्ति और बुद्धि को बढ़ाता है।

भात के नाम और गुण

भात के भक्त, अन्धस्, भिस्सा, अहंकर, दीदिवि और ओदन, ये छः नाम हैं। यह अग्निवर्धक, तृप्तिकारी और पथ्य है। मूत्र को उपजाता है। हलका होता है। भली भाँति धोया और पसाया हुआ भात गरम, स्वच्छ, गुणकारी है। न धोया और न पसाया हुआ भात ठंढा और भारी होता है। वीर्य का पोषक है। कफ को पैदा करता है।

भूना हुआ चावल रुचिकारी और सुगन्धित होता है। वह कफ को दबाता है। हलका होता है। परन्तु मांस, फल, दूध, वैदल (उड़द, मूँग आदि अन्न), खट्टा रस और स्नेह तथा साग डालकर पकाया हुआ भात बहुत भारी होता है। वह वीर्यवर्द्धक, बलकारक और पुष्टिदायक होता है। कफ को बढ़ाता है। मांस के रस में पकाया हुआ भात भारी होता है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है। वीर्य को पुष्ट करता है। बलकारक है। वातज्वर का विनाश करता है।

---

* "पुराणयवगोधूमक्षौद्रजाङ्गलशूल्यभुगिति" यह वाग्भट ने कहा है।

घोलसंज्ञक भात ग्रहणी, बवासीर और परिश्रम को दूर करता है। पाचक और ठंढा होता है। बहुत गरम अन्न खाने से बल को हरता है। ठंढा भात देर में पचता है। बहुत गला हुआ भात ग्लानिकारक होता है। किनकी से युक्त भात बड़ी देर में पचता है। पका हुआ भात मन को प्रसन्न करता है। बल, पुष्टि, उत्साह, हर्ष और सुख को उपजाता है और मीठा होता है। कच्चा भात हानिकारक होता है। कठिनाई से पचता है।

पेय आदि के लक्षण और गुण

यवागू—छः गुने जल में पकाये हुए (जिसमें अन्न और पानी अलग रहे) पतले पेय को यवागू कहते हैं। यवागू मल को बाँधती है। प्यास और ज्वर का विनाश करता है। वस्ति को शोधती है। विलेपी—चौगुने पानी में पकाई हुई (अन्न और पानी जिसमें मिल जाय) गाढ़ी (विलेपी=लप्सी) होती है। यह अग्नि और बल को बढ़ाती है। हृदय को शक्ति देती है। मल को बाँधती है और हलकी होती है। घायल और नेत्र-रोगियों के लिए पथ्य है। तृप्ति करती है। प्यास और ज्वर का विनाश करती है।

पेया—चौदह गुने पानी में पकाई हुई, जो किनकों समेत होती है, उसे पेया कहते हैं। यह कोख के शूल, मतली, ज्वर, स्तम्भ और अतीसार को दूर करती है। भोजन की रुचि और अग्नि को बढ़ाती है। पित्तज्वर, कफ और परिश्रम को दूर करतीहै। माड़—चौदह गुने पानी में पकाया हुआ, जो किनकों से रहित हो, उसे माड़ कहते हैं। यह ग्राही, हलका और ठंढा होता है। अग्नि को बढ़ाता है। धातुओं को समान

और नाड़ी के स्रोतों को नरम करता है। पित्तज्वर, कफ और परिश्रम का विनाशक है।

याव्यमण्ड और लाजमण्ड के गुण

भुने यवों से सिद्ध किये हुए पेय को 'याव्यमण्ड' और भुने हुए शालि चावलों से सिद्ध किये हुए पेय को 'लाज-मण्ड' कहते हैं। इन दोनों में 'याव्यमण्ड' हलका होता है। मल को बाँधता है। शूल, अफरा और त्रिदोषों को हरता है। परवल और पीपल पड़ने से यह याव्यमंड नवीन ज्वर में भी पथ्य होता है। 'लाजमण्ड' हलका होता है। मल को बाँधता है। शीघ्र ही पाचन और दीपन करता है।

अठगुने माड़ के गुण

कुछ भुने हुए चावलों के साथ आधी मूँग को पकावे। उसमें हींग, सेंधानमक, धनिया, तेजपात, सोंठ, मिरच और पीपल मिलावे। इसको अष्टगुण जानना चाहिए। यह ज्वर और त्रिदोषों को हरता है। राग (स्नेह) को उपजाता है। भूख को बढ़ाता है। प्राणदायक है। मन्द अग्नि को जगाता है। ठंढा और हलका होता है।

मूँग आदि के यूष के गुण

अठारह गुने जल में पकाये हुए मूँग आदि वैदल अन्नों को यूष कहते हैं। यह उत्तम, अग्निवर्द्धक, ठंढा और हलका होता है। घाव, ऊर्ध्व जत्रुरोग, दाह, कफ, पित्तज्वर और रक्तरोग को हरता है।

अनार और आमलायूष के गुण

अनार और आमला का यूष पित्तवात को हरता है और हलका होता है।

मूँग और आमलायूष के गुण

मूँग और आमला का यूष भेदी और कफ, पित्त को दबानेवाला होता है। प्यास और दाह को शान्त करता है। ठंढा होता है। मूर्च्छा, परिश्रम और मद को दूर करता है।

कुलथी के यूष का गुण

कुलथी का यूष बायगोला, बवासीर, कफ, वात, पथरी, शर्करा, तूनी, प्रतूनी और मेदोरोग को नष्ट करता है। अग्नि को बढ़ाता है और दस्तावर होता है।

दाल और मूलीयूष के गुण

दाल (मूँग) और मूली का यूष गलग्रह, कफ, ज्वर, दमा, पीनस, खाँसी, मेदोरोग, अरुचि और कृमियों को हरता है।

चना के यूष का गुण

चना का यूष गरम नहीं होता। कसैला और हलका होता है। रक्तपित्त, पीनस, खाँसी और पित्त कफ का विनाश करता है।

मोठ के यूष का गुण

मोठ का यूष ग्राही, पित्तविदारक, कफज्वरहर और हलका होता है। तृप्तिदायक और पथ्य है। हृदय को प्रिय है। पीनस और खाँसी को दबाता है।

कृत और अकृत यूष के गुण

नमक और तेल के साथ सिद्ध किया हुआ कृतयूष भारी होता है। नमक और तेल से रहित सिद्ध किया हुआ अकृतयूष हलका होता है।

यूषों के सामान्य गुण

गोरस, काँजी और खट्टे रसादिक से मिले हुए यूष उत्तरोत्तर बहुत भारी होते हैं। बादी को हरते हैं। रुचि को बढ़ाते हैं।

अथवा जिन अन्नों और औषधों से वैद्यों ने मण्डादि बनाये हों, उनके गुणों को विचारकर उनमें वे ही गुण जानने चाहिए।

दाल के नाम और गुण

दाल के सूप्य, सूप्यक, ये दो नाम हैं। भुने और छिले अरहर, मूँग और उड़द आदि से दाल बनती है। यह विष्टम्भी और रूखी होती है। खटाईरहित बहुत रूखी और छिलकारहित भूनकर पकाई हुई अत्यन्त हलकी हो जाती है।

खिचड़ी और चिप्रा (तहरी) के गुण

कहीं उड़दों के साथ, कहीं तिलों के साथ चावलों को मिलाने से खिचड़ी होती है। यह बल को पैदा करती है। मल को बाँधती है। चावल और मूँग आदि दालों से सिद्ध हुई खिचड़ी वीर्य को उपजाती, बल को बढ़ाती और भारी होती है। पित्त और कफ पैदा करती है। देर में पचती है। पोषक होती है। विष्टम्भ और मल पैदा करती है। बादी का विनाश करती है। ये ही गुण क्षिप्रा (तहरी) में भी होते हैं। तहरी बहुत स्वादिष्ठ होती है और अच्छे धान्यों के समान गुण करती है।

खीर के नाम और गुण

खीर के क्षीर, परमान्न, पायस और क्षैरेयी, ये चार नाम हैं। इसके बनाने की विधि यह है—निसोत अधौंटे दूध में घी के भुने चावल डालकर पकावे। इसमें सफ़ेद शकर और गौ का स्वच्छ घी मिलावे तो वह क्षीरिका (खीर) होती है। यह विलम्ब में पचती, बल को करती और धातु का पोषण करती है। भारी और विष्टम्भिनी होती है। रक्त-पित्त, प्यास, अग्नि और बादी को हरती है।

राजखाण्डव आदि के गुण

गुड़ आदि को पकाकर क्वाथ बनावे। उसमें कच्चा आम का फल या कच्ची इमली, स्नेह (घृत), इलायची और सोंठ मिलावे। यह 'राजखाण्डव' है।

मिसरी, काला नमक, सेंधा नमक, बिजौरा, फालसा, नींबू का रस और राई, इनसे तैयार किया हुआ 'राग' कहलाता है। मीठे, खट्टे आदि रसों के मेल से जो खाण्डव बनते हैं, वे मन्द अग्नि को जगाते, धातु को बढ़ाते और रुचि को पैदा करते हैं। तीव्र होते हैं। हृदय को हितकर हैं। परिश्रम को दूर करते हैं।

खण्डाम्र और खण्डामलक के गुण

आम तथा आँवले के बनाये हुए लेह हृदय को लाभ पहुँचाते हैं। बुद्धिदायक और बलकारक हैं। तृप्तिकर और रुचिवर्धक होते हैं। चिकने, मीठे और भारी हैं।

सिखरन[1] के नाम और गुण

मिसरी, दही, शहद, घी, मिरच और इलायची आदि से युक्त तथा चतुर नारी की मथी और कपूर से सुवासित की हुई सिखरन 'रसाला' कहाती है। रसाला, शिखरा, मार्जिका और माज्ञिका, ये चार नाम इसी (रसाला) के हैं। यह वीर्य को उपजाती, बल को बढ़ाती, भोजन में रुचि पैदा करती

१—आदौ माहिषमम्लमम्बुरहितं दध्याढकं शर्करां
शुभ्रां प्रस्थयुगोन्मितां शुचिपटे किञ्चिच्च किञ्चित्क्षिपेत् ।
दुग्धेनार्धघटेन मृण्मयनवस्थाल्यां दृढं स्रावये-
देलाबीजलवङ्गचन्द्रमरिचैर्योग्यैश्च तद्योजयेत् ॥ १ ॥
भीमेन प्रियभोजनेन रचिता नाम्ना रसाला स्वयं
श्रीकृष्णेन पुरा पुनः पुनरियं प्रीत्या समास्वादिता ।
एषा येन वसन्तवर्जितदिने संसेव्यते निस्पृश-
स्तस्य स्यादतिवीर्यवृद्धिरनिशं सर्वेन्द्रियाणां बलमिति ॥ २ ॥

और वातपित्त का विनाश करती है। चिकनी और भारी होती है। विशेषरूप से नासिका के रोगों को दूर करती है।

पना के गुण

दाख, इमली और फालसा आदि के रस में खाँड़ आदि से संयुक्त तथा मिरच, अदरक, कपूर, दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेसर आदि से सुवासित पेय 'पना' कहाता है। पना दो भाँति का होता है, खट्टा और मीठा। दाख, खजूरिया, कम्भारी, महुआ और फालसा के मेल से बना तथा सूर्य और चन्द्रमा की किरणों से अधिवासित किया हुआ पना पञ्चसार कहाता है।

यह मूत्र लानेवाला और हृदय को प्रिय है। तृप्ति को पहुँचाता है। परिश्रम (थकावट) को हरता है। पना जिन-जिन द्रव्यों से बनाया गया हो, उन्हीं के गुरु या लघु गुण उसमें भी होंगे।

पञ्चसारनामक पना पिड़िका, प्यास, दाह और परिश्रम का विनाश करता है।

दाखों (मुनक्कों) का पना परिश्रम, दाह, रक्तपित्त, ग्लानि और प्यास को हरता है। रूखी प्रकृतिवालों के लिए कोमल और हृदय को लाभदायक है। पाचक और बलदायक है।

इमली का पना प्यास, कृमिरोग, दाह और परिश्रम को विनाश करता है।

शर्बत के गुण

घी से रहित दही को मथे और खाँड़ मिलाकर पकावे। फिर सोंठ, मिरच, पीपल, अनार और ज़ीरा मिलादे। वैद्यों ने इसे 'सदक' 'शर्बत' कहा है। यह भोजन की रुचि बढ़ाता है,

बिगड़े स्वर को सुधारता है। पित्त-वात को हरता है। भारी होता है। मन्द अग्नि को जगाता, तृप्तिकारक और बल-दायक है। परिश्रम, ग्लानि और प्यास को दूर करता है।

मण्डक (डबलरोटी) के गुण

तुष की अग्नि, पुराने कपड़े, दाख और कटेली में पकाये हुए मण्डक आदि क्रम से भारी हैं और धातु को बढ़ाते हैं।

सुन्दर, महीन तथा कपूर आदि में पकाया हुआ 'मण्डक' उत्तम होता है। यही यदि कुछ मोटा हो जाय तो उसे विद्वानों ने 'पूपालिका' कहा है।

वही अङ्गारों पर पकाया हुआ 'अङ्गारकर्कटी' (बाटी या लिट्टी) कहलाता है।

बहुत ही गरम मण्डक पथ्य होता है। वही ठंढा किया हुआ भारी होता है। 'अङ्गारमण्डक' मल बाँधनेवाला और हलका है। त्रिदोषों को हरता है।

पोलिका (पूरी, लुचुई) कफ को पैदा करती, बल को बढ़ाती, पित्त को उपजाती, बादी को हरती और भारी होती है।

अङ्गारकर्कटी[२] (लिट्टी भौंरिया) बल पैदा करती है। धातु को बढ़ाती और वीर्य को उपजाती है। हलकी होती है।

१—वारिणा कोमलां कृत्वा समितां साधु मर्दयेत् ।
हस्तलालनया तस्या लोप्त्रीं सम्यक् प्रसारयेत् ॥
अधोमुखघटस्यैतद्विस्तृतं प्रक्षिपेद्बहिः ।
मृदुना वह्निना साध्यस्सिद्धो मण्डक उच्यते ॥

२—शुष्कगोधूमचूर्णं तु साम्बु गाढं विमर्दयेत् ।
विधाय वटकाकारं निधूमेऽग्नौ शनैः पचेत् ॥

मन्द अग्नि को जगाती है। कफ, हृद्रोग, पीनस, दमा और बादी को दूर करती है।

शालिपिष्टरचित भक्ष्यों के गुण

शालीचावलों की पीठी से बने हुए भक्ष्य पदार्थ अत्यन्त बलदायक नहीं होते। दाह पैदा करते हैं। वीर्य को पुष्ट नहीं करते। भारी होते हैं। कफ और कफ पित्त को कुपित करते हैं।

गेहूँ आदि से बनाये हुए भक्ष्यों के गुण

गेहूँ से बनाये हुए भक्ष्य पदार्थ बलदायक होते हैं और पित्तवात का विनाश करते हैं।

वैदलसंज्ञक अन्नों से बने हुए भक्ष्य पदार्थ भारी, कसैले और ठंढे होते हैं।

उड़द की पीठी के बने भक्ष्य पदार्थ बलकारी होते हैं, पित्त और कफ को पैदा करते हैं।

गुड़ से मिले हुए भक्ष्यों के गुण

अन्नों के गुणों का विचार कर अन्य भक्ष्यों को भी बना ले। उनमें गुड़ के भक्ष्य भारा होते हैं, बादी को हरते हैं, कफ और वीर्य को उपजाते हैं।

घृतपक्क और तैलपक्क भक्ष्यों के गुण

घी में पकाये हुए भक्ष्य पदार्थ बलकारी होते हैं, पित्त और कफ का विनाश करते हैं।

तैल में पकाये हुए भक्ष्य पदार्थ दृष्टि को क्षीण करते और बादी को हरते हैं। गरम हैं और रक्तपित्त को दूषित करते हैं।

दूध के संयोग से बने हुए भक्ष्य के गुण

दूध में भिगोये हुए गेहूँ और शालीचावलों की पीठी से

बनाये हुए भक्ष्य पदार्थ वातपित्तहारी हैं। हृदय में बल बढ़ाते हैं, वीर्य और बल पैदा करते हैं।

घेवर के गुण

अन्न के गुणों का विचार करके अन्य भक्ष्यों को भी सिद्ध करे। गेहूँ की मैदा को भली भाँति छान दूध से मर्दित और घी से विस्तारित करके सफ़ेद खाँड़, कपूर और मिरच मिलाकर घेवर (घृतपूर) बनाया जाता है।

अथवा मैदा को दूध, नारियल और मिसरी आदि से मर्दित कर पके घी में भिगोवे तो वह दूसरी तरह का घेवर होता है। यह भारी, वीर्यपुष्टिकारी और हृदय को हितकारक होता है। पित्तवात का नाश करता है, शीघ्र ही प्राणदायक है। घावों को भरता और बल तथा धातुओं को बढ़ाता है।

गुझिया के गुण

मैदा को घी में भूनकर उसको मसल ले। फिर टिकिया बनाकर उसमें मिरच, इलायची, लौंग, कपूर का चूर्ण मिलावे। अच्छे घी में तले, फिर पकी हुई खाँड़ की चाशनी में डुबावे। इसको वैद्यों ने गुझियां[1] कहा है।

सुन्दर मैदा को राब और दूध से माड़, घी में भून और दुगनी खाँड़ मिला, पकाकर नये घड़े में रखे। तदनन्तर मिरचों का चूर्ण, इलायची और मिसरी का चूर्ण डालकर कपूर से धूपित करे। यह संयाव अमृत के समान होता है।

खाजा के गुण

मैदा को घी और पानी से माड़कर महीन पूरी बना घी में पका खाँड़ से गलेफे। यह खाजा[2] कहाता है।

१—समिता संयाव। २—मधुशीर्षिका।

मैदा को घी से कोमल माड़कर महीन पूरी बनावे। उसमें बिजौरा की छाल और अदरक भरे। गोल पुआ बनाकर सुगन्ध और केसर से युक्तकर घी में पकावे और खाँड़ से गलेफे। इसे मधुशीर्षक (पुआ) कहते हैं।

मालपुओं के गुण

मैदा में गुड़ और पानी मिला भली भाँति माड़कर, कोमल और गोल मालपुओं को घी में विस्तृतकर पकावे।

शालीचावलों की पीठी को दही से मथकर घी में पकावे। फिर खाँड़ की चाशनी में गलेफ ले। इसे दही का मालपुआ कहते हैं। मधुशीर्षिका, संयाव और दही के मालपुए आदि भारी, धातुवर्धक और हृदय को हितकारक हैं। पुरुषार्थ को बढ़ाते हैं, पित्तवात का विनाश करते हैं, संस्कार के भेद से अनेक प्रकार के होते हैं और पूर्वोक्त गुणों को पैदा करते हैं।

विस्यन्द के गुण

दही और दूध को समान भाग लेकर पकावे। जब आधा भाग शेष रह जाय तो लालशालि के चावल, तिल, पिस्ता और पनस आदि बीजों की मुष्टि मिलाकर पकावे।

दूध के समान घी, उतनी ही खाँड़ मिला सोंठ, मिरच और पीपल से संयुक्तकर कपूर से अधिवासित करे।

यह विस्यन्दननामक खाद्य देवलोक में भी दुर्लभ है, क्योंकि पके हुए में भी चारों तरफ घी झिरता रहता है। इसलिए सूपशास्त्र के विद्वानों ने विधि के समान विस्यंद कहा है। यह धातुवर्धक है, हृदय को बल देता है, पित्त और बादी को हरता है, भारी होता है।

लप्सी के गुण

मैदा को गरम घी में भून पीछे से बूरा मिलाकर पानी,

गिरी, दूध तथा इलायची आदि से युक्त करे। इसे वैद्यों ने 'लप्सी' कहा है। यह धातु को बढ़ाती है, पुरुषार्थ को उपजाती है, वातपित्त को हरती है, और भारी होती है।

फेनी के नाम और गुण

फेनी के फेनिका, पुटिनी और शुभ्रा, ये तीन नाम हैं। यह वातपित्त को हरती है, हलकी है। फेनी आदि के लक्षण सूपशास्त्र से जान लेना चाहिए।

लड्डू के नाम और गुण

लड्डुओं के मोदक और लड्डुक, ये दो नाम हैं। ये अनेक प्रकार के होते हैं। परन्तु जब अम्लत्व (खट्टेपन) को प्राप्त हो जायँ तो गेहूँ की मैदा मिलावे। दही, दूध, मुठिया, मैदा, उड़द की पीठी, ज़िमीक़न्द, अदरक, कुम्हड़ा, शालूक मांस और मछली आदि मिलाने से, सूपशास्त्र के विचार द्वारा, ये अनेक प्रकार के होते हैं। इसलिए बुद्धिमान् वैद्य द्रव्यों का विचारकर उनके गुणों को भी बतावें। ये विलम्ब में पकते हैं, पुरुषार्थ को बढ़ाते हैं, बलदायक हैं और पित्तवात को हरते हैं।

उड़दबड़े और मूँगबड़े का गुण

उड़द और मूँग आदि की पीठी (धोई) से बनाये हुए बड़े आदि कड़वे होते हैं, इसलिए उड़द, मूँग आदि की पीठी के गुणों को विचारकर बड़ों के गुण बतावें। उड़दों का बड़ा हृदय को बलदायक है, बादी को हरता है, भारी होता है। घोल बड़ा (मट्ठे का भीगा हुआ) विष्टम्भी है। विशेषकर दाह को पैदा करता है और बादी को मिटाता है।

काँजी के बड़े और यवकाँजी के बड़े का गुण

काँजी का बड़ा दृष्टि को हरता है, दोषों को उपजाता है, भारी होता है। रुचिदायक है, पित्त को उपजाता है, कफ-वात को जीतता है। पकौड़ी वीर्य को उपजाती है, रूखी है, विष्टम्भिनी है और कफवात को पैदा करती है।

सुहारी के गुण

सुहारी (पूरी) भारी है, पुरुषार्थ को उपजाती है, भोजन की रुचि पैदा करती है और पित्त का विनाश करती है।

जलेबी के गुण

एकसौ अट्ठाईस तोले शुद्ध मैदा लेकर चौंसठ तोले गेहूँ का आटा मिलाकर दूध से मथे। जब तक खट्टा न हो जाय तब तक रखा रहने दे। यदि खमीर अधिक खट्टा हो जाय तो उसमें और मैदा मिला लेना चाहिए। उस खमीर को छेद-सहित नारियल के साफ़ बर्तन में डालकर गरम घी की कढ़ाई में चक्कर से घुमाकर धीमी आँच से पकाकर कपूर से सुवासित किये हुए पात्र में रखे। फिर भली भाँति पकी हुई कङ्कण के समान आकारवाली जलेबी को खाँड़ की चाशनी में डाले। इसे वैद्यों ने 'राजवल्लभा' कहा है। यह नाम से ही पुष्टि, कान्ति और बल को देती, धातु को बढ़ाती और पुरुषार्थ को उपजाती है। हृदय को बल देती है और इन्द्रियों को तृप्त करती है।

कुल्माष के गुण

कहीं आधे पके हुए गेहूँ या यवादि को वैद्यों ने कुल्माष कहा है। यह भारी होता है, रूखा है, बादी को उपजाता है और मल को बाँधता है।

सत्तू के गुण

नये भूसीरहित भुनाये हुए जौ या चने आदि के चून को वैद्यों ने सत्तू कहा है। घी से भिगोये हुए या ठंढे पानी से विलोड़ित किये हुए भी सत्तू होते हैं। जवों के सत्तू ठंढे होते हैं, अग्नि को बढ़ाते हैं, हलके हैं, दस्तावर हैं, कफ को हरते हैं, रूखे और लेखन होते हैं। शीघ्र बल पैदा करते हैं, घाम आदि की गरमी से पीड़ित मनुष्यों के लिए पथ्य हैं। छिलकोंरहित भुने हुए चने या जव के सत्तू खाँड़ और घी के संयोग से बने गरमियों में पूजित हैं (अति ही उत्तम होते हैं)। लेहिका (गीले सत्तू) हलके होते हैं। पिंडाकार सत्तू खाने से भारी होते हैं। भोजन करके, रात्रि में, और दाँतों से चबाकर सत्तू न खाय। पानी से अन्तरित कर (गले से उतारकर) और बहुत सत्तू भी न खाना चाहिए। केवल सूखे सत्तू खाना हानिकारक है।

मन्थ के गुण

न बहुत पतला और न बहुत गाढ़ा हो, उसे सज्जनों ने मंथ कहा है। यह शीघ्र ही बल देता है, और परिणाम में भी बलकारक है। मोह, तृषा, क्षय, छर्दि, कुष्ठ, दाह और परिश्रम को दूर करता है।

दाख के गुण

मिसरी और ईख के स्वरस से मिली हुई दाख पित्तरक्त और दाह को जीतती है। शहद से मिली हुई दाख बल को पैदा करती है। कफ, परिश्रम और मद को हरती है। मिसरी, ईख के रस और शहद से मिली हुई दाख दोष और मल को अनुलोमित करती है।

खील और बहुरी के गुण

भुने हुए शालिचावल, जौ आदि की लाजा (लाई, खील, बहुरी) होती है। यह बहुत हलकी, ठंढी और बल-दायक होती है। पित्त, कफ को फाड़ती है। छर्दि, अतीसार, दाह, रक्तपित्त, प्रमेह और प्यास का विनाश करती हैं। धान की खील विष्टम्भिनी और रूखी है। कफ व मेदोरोग को हरती है। भारी होती है।

चिउड़े के गुण

जो पके और गीले चावल भुनाये जायँ, उनको वैद्यों ने 'चिउड़ा' कहा है। ये भारी और बलकारी हैं, कफ को उपजातें हैं, और बादी को नष्ट करते हैं।

होरा के गुण

अधपके 'शिम्बीसंज्ञक' अनाज को भली भाँति भुनावे। उसको वैद्यों ने होरा[१] माना है। यह अल्प वातवाला है। स्वभाव से मेद और कफ को पैदा करता है।

उलश्च, लम्बी और लम्बिका के गुण

अधपकी और नहीं पकी गेहूँ और जवों की बालियों को तिनकों से भूने। उसे उलश्च, लम्बी और लम्बिका कहते हैं। यह कफ को बढ़ाती, बल को पैदा करती और हलकी होती है। पित्त और बादी का विनाश करती है।

परिशुष्क और प्रदिग्ध मांस के गुण

हींग से पके घी में भूने हुए मांस को चलाकर प्रमाण से पानी डाल बुद्धिमान् वैद्य भली भाँति पकावे। उसमें मिरच और अदरक मिलाकर सुगन्धित द्रव्यों से वासित

१—"अर्द्धपक्वैः शमीधान्यैस्तृणभृष्टैश्च होलकः" फलियों के अधभुने दाना को, जिनका छिलका जल गया हो, 'हारा' कहते हैं।

करे। यह परिशुष्क अमृत के समान है। कड़े द्रव्यों से लपेटा हुआ मांस 'प्रदिग्ध' कहाता है। यह वात को जीतता है, बल को बढ़ाता है, भारी और वीर्यवर्द्धक होता है।

सरस और उल्लिप्तमांस के गुण

सरस मांस रस से संयुक्त हुआ मांस 'सरस' कहाता है। रखा हुआ मांस 'परिशुष्क' कहाता है। यह चिकना और रुचिदायक है। तृप्ति करता है। भारी है। बल, बुद्धि, अग्नि, मांस, पराक्रम और वीर्य को बढ़ाता है।

यही पीठी की तरह लपेटने में 'उल्लिप्त' कहाता है। यह भारी है। पथ्य है। गुणों में 'परिशुष्कमांस' के समान होता है।

प्रदिग्धमांस बादी को जीतता है। बलकारक और भारी है। वीर्य को बढ़ाता है। ये ही गुण 'सरसमांस' में भी होते हैं। परन्तु यह विशेष हलका है, और मन्दाग्नि को जगाता है।

शूल्यमांस और अङ्गारतप्त मांस के गुण

शूल से पिरोया, सुगन्धित पानी से भिगोया और धूम-रहित अंगारों पर पकाया हुआ मांस 'शूल्यमांस' कहाता है। यह सब मांसों में उत्तम और हलका होता है। इसे वैद्यों ने उत्तम पथ्य माना है। अंगार आदि में जो पकाया जाय, वह 'प्रतप्तमांस' कहाता है।

पिष्ट मांस

अनार, सेंधानमक और सुगन्ध आदि मिलाकर पीस-कर पुआ आदि की भाँति जो बनाया जाय उसका 'पिष्ट मांस' कहते हैं।

भर्जित मांस

घृत आदि में भूनकर जो बनाया जाय, उसे 'भर्जित मांस' कहते हैं।

तन्दुपक्क मांस

सुगन्ध से लिपटा और शहद के समान कान्तिवाला जो मांस होता है, उसे 'तन्दुपक्क मांस' कहते हैं।

प्रदिग्ध, सरस, पक्क, भर्जित, मृदुपाचित, प्रतप्त, परिशुष्क, शूल्य और ऐसे ही अन्य मांस तथा तैलपक्क मांस वीर्य में गरम और भारी होते हैं। पित्त को उपजाते हैं। घी से पकाया हुआ मांस हलका और रुचिदायक होता है। पित्त को नहीं बढ़ाता। बहुत गरम होता है। वीर्य और बल को बढ़ाता है। हृदय को बल देता और दृष्टि को निर्मल करता है।

तक्रादिपक्क व सुस्विन्न मांस के गुण

तक्र, स्नेह, काँजी, खट्टे और कड़वे रस आदि से बनाया मांस बलकारक और रुचिवर्द्धक है, अग्नि को बढ़ाता है और भारी होता है।

भली भाँति पकाया मांस बहुत रसवाला और रूखा होता है। वह बादी को बढ़ाता है और भारी होता है।

वेसवार मांस के गुण

हड्डियों से रहित मांस को भली भाँति सिझाकर पत्थर पर पीसे। उसमें सोंठ, मिरच और पीपल आदि मिलाकर घी में पकावे। इसे 'वेसवार' कहा है। यह बलदायक है, वात का विनाशक है और भारी होता है।

सिझाये हुए मूँग आदि के कल्क से बने हुए मांस को भी 'वेसवार' ही कहते हैं।

सौरभ मांस के गुण

यही हल्दी, सोंठ, मिरच, पीपल, सेंधा नमक, हींग धनिया, अनार और जीरा आदि मिला हुआ 'सौरभ'

मांस कहाता है। मूँग आदि के वेसवार में जैसा द्रव्य मिले, उसी के समान गुणोंवाला वह होता है।

पिसे हुए मांस से उपजा जो मांसरस है, उसे 'रस', 'सौरभ' और 'सौरस' कहते हैं।

स्वानिष्क मांस के रस का गुण

जो रस नमक से मिला हो या वेसवार से संयुक्त किया गया हो, उसे 'स्वानिष्क' कहते हैं। यह भारी है और दीप्ताग्निवालों के लिए विशेषकर पथ्य होता है।

मांसरस और अनारयुक्त मांसरस के गुण

मांस का रस हृदय को बलदायक है। परिश्रम, दमा, वात, पित्त और क्षय का विनाश करता है। घाव (व्रण) वाले पुरुषों, क्षीण और अल्पवीर्यवालों को तृप्त करता है। हड्डी उखड़े हुए, टूटी सन्धिवाले, शुद्ध हुए, शुद्धि की इच्छा-वाले, बिगड़े स्वरवाले और दृष्टि, आयु तथा सुनने की चाह रखनेवाले मनुष्यों के लिए इसका सेवन करना उत्तम है।

अनार आदि के रस से मिले हुए मांस का रस बल-दायक है। दोषों का विनाश करता है।

शोरवा, सौवीर आदि के गुण

शोरवा पुष्टिकारी है, ठंढा है, मुखशोष और परिश्रम को हरता है। मन्द अग्नि को जगाता है। ग्लानि और बादी का विनाश करता है। सब धातुओं को बढ़ाता है।

दलका मांसरस के गुण

अल्पमांस से युक्त जो नमक और पानी से पकाया जाय उसे 'दलका' और 'चणिका' कहते हैं। इनके रस को वैद्यों ने हलका माना है।

कढ़ी (क्वथिता) के गुण

पहले कढ़ाई में घी अथवा तेल डालकर हल्दी और हींग को भूने। फिर बेसन, सेंधानमक और मट्ठे को मिलाकर छौंक दे। उसको वैद्य लोग कढ़ी कहते हैं। यह पाचक है, हृदय को प्रिय है, रुचि को पैदा करती है, अग्नि को बढ़ाती है और हलकी होती है। कफ, वात और क़ब्ज़ को मिटाती है। पित्त को कुछ कुपित करती है।

पकौड़ी के गुण

चने की बिनी, छनी दाल को चक्की में पीसे। उस चून को 'बेसन' कहते हैं। इसकी फुलौड़ियों को 'पकौड़ी' कहते हैं। यह रुचि को उपजाती है, विष्टम्भिनी है, बल और पुष्टता पैदा करती है।

रायता (क्वथित) के गुण व साग बनाने की विधि

मट्ठे आदि से भली भाँति बनाया साग क्वथित (रायता) कहाता है। यह मन्द अग्नि को जगाता है, रुचि को बढ़ाता है। वात, कफ और परिश्रम को मिटाता है। साग अपने गुणों को छोड़कर उसी गुणवाला हो जाता है, जिसके योग से बनाया जाता है।

पापड़ के गुण

उड़द, मूँग आदि की पीठी (धोई) में हींग, हल्दी, नमक, सज्जी और ज़ीरा मिलाकर, उसे कड़ी कर मसल ले, फिर ओखली में कूटकर छोटी लोई बनाकर चकले (होरसा) पर बारीक बेले। इनको 'पापड़' कहते हैं। अंगारों पर अथवा घी में भूने। ये परम रुचि को उपजाते हैं और

१—न तक्रसेवी व्यथते कदाचित् न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः।
यथा सुराणाममृतं प्रशस्तं तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः॥

मन्द अग्नि को जगाते हैं। पाचक, रूखे और कुछ भारी होते हैं। मूँग के पापड़ हलके होते हैं, खाने की रुचि को उपजाते हैं। चने के पापड़ों में चने के समान गुण होते हैं। खार सहित पापड़ बहुत ही हलके होते हैं।

पीना के नाम और गुण

खली (पीना) के पिण्याक, तिलकिट्ट, पलल और तिलपिष्टक, ये चार नाम हैं। यह हलकी है, रूखी है, मल को बाँधती है और आँखों की ज्योति को दूषित करती है।

तिलकुट (पलल) के गुण

तिलों में गुड़ या शक्कर आदि मिलाकर कूट डाले। उसको वैद्यों ने पलल (तिलकुट) कहा है। यह मल को बढ़ाता, पुरुषार्थ को जगाता, बादी को मिटाता और कफ-पित्त को पैदा करता है। धातुवर्द्धक, भारी और चिकना होता है। अधिक मूत्र उतरने को दूर करता है। जिनके गुण यहाँ नहीं कहे हैं, उनके विषय में बुद्धिमान् वैद्य औषध, समय, क्रिया, योग और देहादि का विचार करके गुण कहे।

बारहवाँ वर्ग

हाथी के नाम

हाथी के हस्ती, मतङ्गज, दन्ती, मातङ्ग, अनेकप, करी, सिन्धुर, कुञ्जर, पद्मी, वारण, द्विरद, द्विप, इभ, दन्तावल, नाग, कुम्भी, स्तम्बेरम और गज, ये अठारह नाम हैं।

हथिनी के नाम

हथिनी के हस्तिनी, धेनुका, करेणु और करिणी, ये चार नाम हैं।

हाथी के मांस के गुण

हाथी का मांस कफवात को उत्पन्न करता है। गरम होने के कारण रक्तपित्त को कुपित करता है।

घोड़ा के नाम

घोड़े के घोटक, सैन्धव, वाजी, तुरङ्ग, तुरग, हय, तुरंगम, अश्व, गन्धर्व, वाह, सप्ति, यजुः और जवी, ये तेरह नाम हैं।

घोड़ी के नाम

घोड़ी के घोटिका, बडवा, वामी, प्रसूता, अश्वा और वाजिनी, ये छः नाम हैं।

घोड़े के मांस के गुण

घोड़े का मांस पचने के समय कड़वा होता है, मन्द अग्नि को जगाता है, कफपित्त को पैदा करता है। बादी को हरता, धातुओं को बढ़ाता, बल को देता और आँखों को हित पहुँचाता है। मीठा और हलका होता है।

खच्चर के नाम और मांस के गुण

घोड़ी में गधे या अन्य प्रकार के घोड़े से उत्पन्न बच्चे को अश्वतर, शीघ्रवेग और अङ्गपूजित (खच्चर) कहते हैं। इस का मांस बलकारी और धातुवर्धक होता है। कफ-पित्त का विनाश करता है।

ऊँट के नाम और मांस के गुण

ऊँट के उष्ट्र, क्रमेलक, वक्रग्रीव, शाखाशन, मय, शृंखल, करभ, दीर्घजङ्घ, धूम्र और मरुत्प्रिय, ये दस नाम हैं। इसका मांस हलका और मीठा है। आँखों को हित पहुँचाता, बादी को मिटाता और मेद को शान्त करता है। पित्त और कफ को बढ़ाता है।

गधे के नाम और मांस के गुण

गधे के गर्दभ, रासभ, भारवाही, दूरगम और खर, ये पाँच नाम हैं। इसका मांस पित्तकारी, बलदायक और धातुवर्धक है। कफपित्त को पैदा करता है, पाक में कड़वा और हलका है। जंगली गधे का मांस इससे उत्तम होता है।

भैंसे के नाम और मांस के गुण

भैंसे के महिष, सौरभ, शृङ्गी, वाहवैरी, घनाघन, कासर, गवल, दंशी, ललाय और कालवाहन, ये दस नाम हैं। इसका मांस मीठा, चिकना व गरम होताहै। बादी का विनाश करता है। निद्रा, वीर्य, बल, दूध और दृढ़ता को पैदा करता है और भारी होता है। ये ही गुण बनैले भैंसे के मांस में भी हैं; परन्तु वह विशेषकर शोष (क्षयी) वालों के लिए लाभदायक है।

रीछ के नाम और मांस के गुण

रीछ के ऋक्ष, अच्छ, भल्लू और भल्लूक, ये चार नाम हैं। इसका मांस चिकना, भारी, धातुवर्धक, स्वादिष्ठ और गरम है। बादी का विनाश करता है।

गैंड़े के नाम और मांस के गुण

गैंड़े के खड्गी, खड्ग और गण्डक, ये तीन नाम हैं। इसका मांस मल और मूत्र बहुत लाता है। पवित्र है। बादी को हरता है।

सिंह, शार्दूल के नाम और मांस के गुण

सिंह के पञ्चानन, दृप्त, मृगेन्द्र, केसरी और हरि, ये पाँच नाम और हैं। शार्दूल के पञ्चनख, मृगनाथ और सकृत्प्रज, ये तीन नाम और हैं। इन दोनों का मांस गरम है, नेत्ररोग और वात का विनाश करता है।

बाघ के नाम

बाघ के व्याघ्र, मृगारि, मृगहा, व्याल और भीमपराक्रम, ये पाँच नाम हैं।

चीता के नाम

चीते के चित्रक, वेगवान्, चित्री, द्वीपी और दीर्घदंष्ट्रक, ये पाँच नाम हैं।

भेड़िये के नाम

भेड़िये के वृकदेह, वृक, कोक और इहामृग, ये चार नाम हैं।

हुंडार (तेंदुवे) के नाम

हुंडार या तेंदुवे के तरक्षु और मृगादन, ये दो नाम हैं।

कुत्ते के नाम

कुत्ते के कुक्कुर, शुनक, श्वा, कौलेय, सुननक, शुन, सारमेय, कृतज्ञ, भक्षण और मृगदंशक, ये दस नाम हैं।

बाघ, चीते, भेड़िये, हुंडार और कुत्ते के मांस के गुण

इन सबका मांस भारी है, गरम है, बादी को हरता है, बिगड़े स्वर को सुधारता है। नेत्ररोगियों के लिए हितकारक है।

सुअर के नाम और मांस के गुण

सुअर के सूकर, रोमश, पोत्री, कोल, घोणि, किरि, किटि, दंष्ट्री, क्रोष्टु, ऊर्ध्वरोमा, भूदार और वराहक, ये बारह नाम हैं। इसका मांस स्वादिष्ठ, बलदायक, वातनाशक, भारी और चिकना होता है। वीर्य को पैदा करता, रुचि को उपजाता, निद्रा, बुढ़ापे और दृढ़ता को लाता है।

बकरी और बकरे के नाम

बकरी के छागी, गलस्तनी, मण्डा, सर्वभक्ष्या, अजा और भृजा, ये छः नाम हैं। बकरे के बर्कर, छागल, छाग, बस्तेय, कालक और पशु, ये छः नाम हैं।

बकरा, बकरी के मांस के गुण

इसका पका हुआ मांस भारी, चिकना और हलका होता है। त्रिदोषों का नाशक है। दाहरहित और धातुवर्धक है। बहुत ठंढा है। पीनसरोग को हरता है। देह और धातु की समानता से अभिष्यन्दी नहीं है। वीर्य को पुष्ट करता है।

भेड़ व मेढ़े के नाम और मांस के गुण

मेष, भेड़ी, हुड़, मेढ़, उरभ्र, उरण, आविक, ऊर्णायु, एडक, वृष्णि, मेदःपुच्छ और दुम्बक, ये बारह नाम भेड़ और मेढ़े के हैं। इसका मांस भारी, चिकना और बलकारी है। पित्त और कफ को पैदा करता है। मेद समेत पूँछवाले मेढ़े का मांस पुरुषार्थ को जगाता, कफपित्त को बढ़ाता और भारी होता है।

हिरन के नाम और मांस के गुण

हरिण, ताम्रवर्ण, ये दो नाम हिरन के हैं। काले हिरन के कुरङ्ग, चारुलोचन, सारङ्ग, जिनयोनि, वातायु, चपल और मृग, ये सात नाम हैं। दूसरा काले वर्णवाला 'एण' कहाता है। कृष्णकुरङ्ग और कृष्णसार, ये भी दो नाम मृग-भेद के हैं। इसका मांस ठंढा है, रुचिदायक है, मल को बाँधता है, त्रिदोषों का विनाश करता है। यह छः रसवाला है, बलदायक है, पथ्य और हलका है। हृदय को हित है। ज्वर और रक्तदोष को दूर करता है।

गोकर्ण, शाबर मृग के नाम और मांस के गुण

गोकर्ण और शाबर मृग के गोकर्ण, अविकट, शृङ्गी, विडवद्ध और शम्बर, ये पाँच नाम हैं। इन दोनों का मांस ठंढा, भारी, चिकना और कफकारक है। रस और पाक में मीठा है। रक्तपित्त का विनाश करता है।

नीलगाय के नाम और मांस के गुण

नीलगाय के रूक्ष, मीलाण्डक, नील, गवय और चारुदर्शन, ये पाँच नाम हैं। इसका मांस मीठा, वीर्यपुष्टिकारी, चिकना और गरम होता है। कफ और पित्त को उपजाता है।

कस्तूरी, मुण्डनी मृग के नाम और मांस के गुण

कस्तूरी और मुण्डनी मृग के कस्तूरी, हरिणी, गन्धी, मुण्डनी और मृगमातृका, ये पाँच नाम हैं। इन दोनों में से कस्तूरी मृग का मांस स्वादिष्ठ, मलबन्धी, मन्द अग्नि को जगानेवाला और हलका होता है। मुण्डनी मृग का मांस ज्वर, खाँसी, रक्तरोग, क्षयी और दमा का विनाश करता है और ठंढा होता है।

चीतल व छिक्कार मृग के नाम और मांस के गुण

चितले मृग के कृतमाल, वर्णचर, पृषत और बिन्दुचित्रक, ये चार नाम हैं। छिक्कार (बहुत जल्द चलनेवाले) मृग के वातप्रमी, वातमृग, छिक्कार और कृष्णपुच्छक, ये चार नाम हैं। इन दोनों का मांस मीठा और ग्राही है। मन्द अग्नि को जगाता है। हृदय को बल पहुँचाता है। ठंढा और हलका है। दमा, ज्वर और त्रिदोषों को दूर करता है।

बारहसींगा के नाम और मांस के गुण

रुरु व न्यंकु मृग के रुरु, शरन्मुक्तमृग, न्यंकु और बहुविषाणक, ये चार नाम हैं। इन दोनों में से रुरु का मांस भारी और स्वादिष्ठ होता है। वीर्य को पुष्ट करता है। पित्तवात को हरता है। न्यंकु का मांस मीठा और हलका होता है। बल को बढ़ाता है और त्रिदोषों का विनाश करता है।

खरगोश, महामृग के नाम और मांस के गुण

खरगोश के शश, शूली, रोमकर्ण, लम्बकर्ण और बिलेशय, ये पाँच नाम हैं। इसका मांस ठंढा, हलका, स्वादिष्ठ, ग्राही और पथ्य है। मन्द अग्नि को जगाता है। सन्निपात, ज्वर, दमा, रक्तपित्त और कफ को हरता है।

काश्मीर देश में उपजा, सरस, आठ पैरोंवाला, उत्साही, ऊपर को चार पाँवोंवाला, ऊँट के समान बहुत बड़े सींगोंवाला और वन में रहनेवाला 'महामृग' कहाता है। इसका भी मांस पूर्वोक्त गुणवाला और उत्तम होता है।

साही, सेधा के नाम और मांस के गुण

साही, सेधा के शल्लक, शलली, श्वावित्, सेधा, सूचिनी और खरा, ये छः नाम हैं। इनमें से साही का मांस खाँसी, रक्तरोग, सूजन और त्रिदोषों का विनाश करता है। ये ही गुण सेधा के मांस में भी होते हैं। परन्तु वह विशेषकर बल को बढ़ाता है।

बिलार और नेवले के नाम

बिलार के बिडाल, मार्जार, विषदंशक और आखुभुक्, ये चार नाम हैं।

नेवले के नकुल, पिङ्गल, बभ्रु, सर्पारि और सर्पभक्षक, ये पाँच नाम हैं।

बिलार और नेवले के मांस के गुण

इन दोनों में से बिलार का मांस मीठा, चिकना और वीर्य में गरम है। कफवात को जीतता है। कृशता (दुबलेपन), दमा और खाँसी का विनाश करता है। ये ही गुण नेवले के मांस में भी होते हैं।

बंदर के नाम और मांस के गुण

बंदर के वानर[1], मर्कट, कीश[2], वनौकस, बलीमुख, हरि, शाखामृग, प्लावी, प्लवङ्ग, प्लवग और कपि, ये ग्यारह नाम हैं। इसका मांस बादी है। दमा, मेद, पाण्डु और कृमियों को नष्ट करता है।

गीदड़ के नाम और मांस के गुण

गीदड़ के शृगाल, जम्बुक, फेरु, गोमायु, फेरव, शिव, शिवेश, वञ्चक, क्रोष्टु, नेपाल और स्वल्पजम्बुक, ये ग्यारह नाम हैं। इसका मांस बलदायक है। वीर्य को पुष्ट करता है। सब वातव्याधि और क्षयी को भी हरता है।

चूहे के नाम और मांस के गुण

चूहे के मूषक, खनक, स्तेयी, वृष, उन्दुरु और आखुक, ये छः नाम हैं। इसका मांस मलमूत्रावरोधक और बलदायक है। पुरुषार्थ को बढ़ाता है और बादी का विनाशक है।

चिड़ियों के नाम और मांस के गुण

पक्षियों के पक्षी, विहङ्गम, पत्री, शकुन्ति, विहग, खग, अण्डज, विपत्त्ररथ, पतत्री, शकुनि और द्विज, ये बारह नाम हैं। इनमें जो धान व अंकुरों को खाते हैं, उनका मांस हलका और उत्तम होता है। जलसंचारी पक्षियों का मांस बलकारी, हलका और अत्यन्त भारी होता है।

बत्तक, बटेर, लवा के नाम और मांस के गुण

बटेर या बत्तक के वर्त्तिर, वर्तिका, चित्र और वर्त्तका, ये चार नाम हैं। इसका मांस अग्निवर्धक व ठंढा है। ज्वर और त्रिदोषों का विनाश करता है।

लवा के लाव, चित्र और चित्रतनु, ये तीन नाम हैं।

१—वने भवं फलादिवानं तद्रातीति वानरः वा किञ्चिन्नरो वेति।

२—की इति शब्दमीष्टे कीशः कस्य वायोरपत्यं किर्हनुमानीशो यस्येति वा।

परन्तु पांशुल, गौरिक, पौण्ड्रक और दर्भर, इन भेदों से पण्डितों ने लवा चार प्रकार का माना है। इसका मांस हृदय के लिए बलदायक, ठंढा और चिकना है। मल को बाँधता है, मन्द अग्नि को जगाता है।

पांशुल का मांस कफ पैदा करता है। वीर्य में गरम है और बादी को मिटाता है।

गौरिक का मांस कफवातहारी, रूखा और अत्यन्त अग्निदायक होता है।

पौण्ड्रक का मांस पित्तकारी, कुछ हलका और कफ-वात का नाशक है।

दर्भर का मांस रक्तपित्तहारी है। हृदय के रोगों को हरता है और ठंढा होता है।

तीतर के नाम और मांस के गुण

तीतर के तित्तिरि, तित्तिर ये दो नाम हैं। यह चित्र पंखों-वाला तथा काला दो भाँति का होता है। सफ़ेद वर्णवाला 'कपिञ्जल' कहाता है। इसका मांस वर्णदायक और मल-बन्धी है। हिचकी और त्रिदोषों का विनाशक है तथा दमा और खाँसी को हरता है। पथ्य है। इससे अधिक गुणोंवाला कपिञ्जल तीतर का मांस होता है।

चटक (घर की चिड़िया) के नाम और मांस के गुण

गौरैया (घरूचिड़िया) के चटक, कलविङ्क, ग्राम्य और पुण्ड्रक, ये चार नाम हैं। इसका मांस ठंढा, चिकना और स्वादिष्ठ होता है। वीर्य और कफ को बढ़ाता है तथा सन्निपात को हरता है।

घर में बसनेवाली चिड़ियों का मांस वीर्य को बहुत ही उप-

जाता है। वार्तिक (बगेरा=बत्तक) का मांस मीठा, ठंढा और रूखा है। कफपित्त का विनाश करता है।

परेवा के नाम और मांस के गुण

परेवा के पारावत, कलरव, मञ्जुघोष और मदोत्कट, ये चार नाम हैं। इसका मांस भारी, चिकना, रक्तपित्त और बादी का नाशक होता है। मल को बाँधता है, वीर्य को उपजाता है और ठंढा होता है।

कबूतर के नाम और मांस के गुण

कबूतर के कपोत, घुवुकृत्, पाण्डु, काण और कपोतक, ये पाँच नाम हैं। कबूतर का मांस चिकना, भारी और बादी है। रक्तपित्त को हरता है। वीर्य को बढ़ाता है और ठंढा होता है। परन्तु काण कबूतर (लघु कबूतर) का मांस कुछ हलका है। यह समस्त दोषों को पैदा करता है।

मोर के नाम और मांस के गुण

मोर के मयूर, चन्द्रक, केकी, मेघराव, भुजङ्गभुक्, शिखी, शिखावल, बर्ही, शिखण्डी, नीलकण्ठक, शुक्लापाङ्ग, कलापी, मेघनाद और लासक, ये चौदह नाम हैं। इसका मांस धातुओं को बढ़ाता है। कर्णरोग, शिरोरोग, बादी और क्षयी को हरता है। गरम है। बल, आयु, बुद्धि, अग्नि, बालदृष्टि और श्रेष्ठ वर्ण पैदा करता है। हेमन्त, शिशिर और वसन्त में इसका मांस सेव्य है। शरद् तथा ग्रीष्म में और आषाढ़-सावन-भादों में मोर सर्पाहारी होता है, अतः इसका मांस वर्षाकाल में पथ्य नहीं है।

मुर्गा, वनमुर्गा के नाम और मांस के गुण

मुर्गा और वनमुर्गा के कुक्कुट, विकिर, शौण्डी, कालज्ञ,

चरणायुध, कृकवाकु, ताम्रचूड़ और अरण्यकुक्कुट, ये आठ नाम हैं। इसका मांस धातुवर्धक, चिकना और वीर्य में गरम है। बादी को जीतता है। भारी तथा आँखों के लिए हितकारक है। वीर्य और कफ को पैदा करता है।

वनमुर्गा का मांस रूखा, कसैला, चिकना और धातुवर्धक होता है। कफ को पैदा करता है और भारी होता है।

तोता व मैना के नाम और मांस के गुण

तोता के शुक, रक्तमुख, कीर, वाग्मी और सुन्दरदर्शन, ये पाँच नाम हैं।

मैना के सारिका, रसिता, दूती, सुमति और प्रियवादिनी, ये पाँच नाम हैं। तोते का मांस ठंढा, हलका और मलबन्धी है। क्षत की खाँसी और क्षयी का नाशक है, रूखा है। यही गुण मैना के मांस में भी होते हैं; परन्तु वह विशेष रूप से चिकना है, बुद्धिबल और अग्नि को बढ़ाता है।

कोयल के नाम और मांस के गुण

कोयल के कोकिल, कलकण्ठ, परपुष्ट, वनप्रिय, पिक, परभृताहारी, ताम्राक्ष और मधुदूतक, ये आठ नाम हैं। इसका मांस मन्द अग्नि को जगाता, मल को बाँधता और आँखों के लिए हितकारक है। क्षयी और खाँसी का विनाश करता है।

कौए के नाम

कौए के काक, ध्वांक्ष, गूढ़कामी, बलिपुष्ट, सकृत्प्रज, वायस, बलिभुक्, काण, करट, चतुर और द्विज, ये ग्यारह नाम हैं।

भास के नाम

भास (सफ़ेद चीलह) के सिखाभ्रसत, गृद्ध्राकार और रज १ प्रज, ये तीन नाम और हैं।

१—कृकेन गलेन वक्तीति।

कौए और भास के मांस के गुण

इनका मांस आँखों की ज्योति को बढ़ाता, मन्दाग्नि को जगाता और हलका होता है। यह आयु को बढ़ाता, धातुओं को पोषता और बल देता है। व्रणदोष और क्षयी को हरता है।

गीध के नाम और मांस के गुण

गीध के गृध्र, सुदृष्ट, शकुनि, वक्रदृष्टि और दूरदृक्, ये पाँच नाम हैं। इसके मांस में काकमांस के समान गुण होते हैं। विशेषकर नेत्ररोगों को जीतता है।

हंस के नाम और मांस के गुण

हंस के श्वेतगरुत, चक्राङ्ग, मानसौकस, ये तीन नाम और हैं। जिनकी देह सफ़ेद, चोंच और चरण लाल होते हैं, उनको 'राजहंस' कहते हैं।

काले पंखवाले हंस को धार्तराष्ट्र और मालिक भी कहते हैं। मलिन पङ्खवाले हंस को कलहंस कहते हैं। पीले पंखवाले हंस को कादम्बकारण्डव[1], प्लव[2] और मद्गु[3] कहते हैं। हंसिनी को 'वरटा' कहते हैं।

इनका मांस चिकना और भारी है, वीर्य को पुष्ट करता है, वीर्य में गरम है। स्वर और वर्ण को सुधारता है। बादी और रक्तपित्त को हरता है। धातुपोषक, बलकारक और अग्निवर्द्धक है।

सारस के नाम और मांस के गुण

सारस के लक्ष्मण, रक्तमूर्द्धा और पुष्कराह्वय, ये तीन नाम और हैं। इसकी स्त्री को 'लक्ष्मणा' कहते हैं। इसका मांस चिकना, भारी, ठंढा, मीठा, मूत्र और मल को पैदा

१—यह काक के समान चोंच, दीर्घपाद और कृष्णवर्णवाला होता है।
२—बत्तक के समान। ३—जलमुर्ग़ा या जलकाक।

करनेवाला होता है। बादी है और रक्तपित्त का विनाश करता है।

चकवा के नाम और मांस के गुण

चकवा के चक्रवाक, पत्ररथ, चक्र, चक्री, सुकार्मुक, रथाङ्गनामा और कोक, ये सात नाम हैं। इसका मांस ठंढा, मीठा और भारी है। मलमूत्र को बढ़ाता है। रक्तपित्त और बादी का विनाश करता है। कङ्क और लोहपृष्ठक, ये दो नाम उजली चील्ह के हैं।

बगला आदि के नाम और मांस के गुण

बगले के बक, बकोट, धवल, बलाका और बिस-कण्ठिका, ये पाँच नाम हैं। आडि, शिरारि, आति और विचित्र जलचारिणी, ये चार नाम आडि (देशान्तरीय तीतर) या पक्षीविशेष के हैं।

इनका मांस चिकना, ठंढा, भारी और मीठा है। मल, मूत्र को उपजाता है। बादी और पित्तरक्त का विनाशक है।

देशान्तरीय सारस के नाम और मांस के गुण

करेटु के कर्करेटु, करेटु, कर्कराटु, कुरट, कृकण और कृकर, ये छः नाम हैं। इसका मांस धातुवर्धक, बलदायक, वात-पित्तहारी और हलका होता है।

खञ्जन के नाम

खँडरैचा के खञ्जरीट, खञ्जनक, चाषनामा और किकी-दिवि, ये चार नाम हैं।

पपीहे के नाम

पपीहे के चातक, घनरव, सारङ्ग, तोकक और भ्रम, ये पाँच नाम हैं।

भर्दूल के नाम

भर्दूल के भरद्वाज, कर्कराट, व्याघ्राट और आहिकुटि, ये चार नाम और हैं।

खञ्जन, पपीहा और भर्दूल के मांस का गुण

खञ्जन और पपीहे का मांस कफवात को हरता है। भर्दूल का मांस बादी को बढ़ाता, वातपित्त को मिटाता और कफरक्त को जीतता है।

बाज, चील्ह के नाम और मांस के गुण

बाज (शिकरे) के श्येन, समादन और पत्री, ये तीन नाम हैं। चील्ह के चीरि, चिल्ली और चिरिल्लिका, ये तीन नाम हैं। इन दोनों का मांस विशेष रूप से दोषों को पैदा करता है और भारी होता है।

उल्लू के नाम और मांस के गुण

उल्लू के उलूक, कौशिक, काकवैरी, घूक और निशाचर, ये पाँच नाम हैं। इसका मांस भ्रान्ति को पैदा करता है और वात को कुपित करनेवाला है।

चकोर के नाम और मांस के गुण

चकोर के चन्द्रिकापायी, जीवंजीव और सुलोचन, ये तीन नाम और हैं। इसका मांस धातुवर्धक, बलदायक, चिकना और गरम है। बादी का विनाश करता है।

कराकुल (क्रौञ्च) के नाम और मांस के गुण

कराकुल के क्रौञ्च, क्रौञ्चक और क्रुङ्, ये तीन नाम हैं। कराकुल का मांस पित्त और बादी का विनाश करता है।

घुग्घू के नाम और मांस के गुण

घुग्घू का पेचक नाम है। इसका मांस कफवात को जीतता है।

कुरर के नाम और मांस के गुण

कुरर के पुच्छाधोभाग; लोहित, क्रोश और कुरर, ये तीन नाम हैं। कुरर का मांस पित्त और बादी का विनाशक है।

टिटहरी के नाम और मांस के गुण

टिटहरी के कोयष्टिक और टिट्टिभ, ये दो नाम हैं। इसका मांस कुछ बादी पैदा करता है।

हरियल के नाम और मांस के गुण

हरियल के हारीत, हरियल और हरित, ये तीन नाम हैं। इसका मांस रूखा, गरम, रक्तपित्तहारक और कफ-नाशक है। पसीना लाता है, स्वर को सुधारता है और कुछ बादी है।

पिढ़ुकियों के मांस का गुण

पिढ़ुकियाँ दो भाँति की होती हैं। पहली चित्ररंगवाली और दूसरी सफ़ेद रंगवाली। पहली का मांस कफहारक, वातनाशक है। संग्रहणी को हरता है। दूसरी का मांस ठंढा है, रक्तपित्त का विनाशक है। पक्षियों के अंडे चिक-नाई से रहित, धातुवर्धक, वातनाशक, अत्यन्त वीर्यकारी और भारी होते हैं।

मछलियों के नाम

मछलियों के मत्स्य, झष, तिमि, मीन, कण्ठी, वैसा-रिण, द्रव, पृथुरोमा, अभिसार, विसार, शकुली, रक्तोदर, रक्तमुख, रोहित, मत्स्यपुङ्गव, सहस्रदंष्ट्र, पाठीन, कृष्णवर्ण और महाशिरा, ये उन्नीस नाम हैं।

शफरी मछली के नाम

शफरी के शफर, क्षुद्रमत्स्य, प्रोष्ठी और शफरी, ये चार नाम हैं।

मछलियों के भेद

नलमीन, चिलिचिम, तिम और समुद्रज, ये चार मछली के भेद हैं।

मछलियों के मांस के गुण

मछली बलवीर्य को बढ़ाती है। भारी है, कफपित्त का

विनाश करती है। गरम, अभिष्यन्दिनी और चिकनी है। धातुओं को पुष्ट करती और बादी को हरती है।

मत्स्यभेदों के गुण

जलभेद से मछलियों के गुण

धातुओं को बढ़ाती हैं, भारी हैं, बादी को हरती हैं।

कुएँ की मछली के गुण

वीर्य को पोषती है। कफ, अष्ठीला (गिलटी), मूत्र, कोढ़ और कब्ज को पैदा करती है।

तालाब की मछली के गुण

भारी है, वीर्य को पुष्ट करती है, ठंढी है, बल और मूत्र को उपजाती है।

झरने की मछली के गुण

ठंढी है, भारी है, वीर्य को पुष्ट करती है। बल और मूत्र को बढ़ाती है। पचती है। विशेषकर बल, आयु, बुद्धि और दृष्टि को निर्मल करती है।

सरोवर की मछली के गुण

मीठी है, चिकनी है, बलदायिका है, बादी को दूर करती है।

समुद्र की मछली के गुण

भारी है, अत्यन्त पित्त को उपजाती है और बादी का विनाश करती है।

कुण्ड की मछली के गुण

बल को पैदा करती है। निर्मल पानी में पैदा हुई मछलियाँ बलवर्द्धक नहीं होतीं।

ऋतुभेद से मछली के मांस के गुण

हेमन्त में कुएँ की मछलियाँ हितकारक होती हैं।

शिशिर में सरोवर की मछलियाँ गुणकारी होती हैं।

बसन्त और ग्रीष्म में नदी, झरना व तालाबों की मछलियाँ बलदायक होती हैं।

शरत्काल में झरने की सब मछलियाँ हितकारक हैं।

वर्षाकाल में बसांती मछलियाँ समस्त दोष पैदा करती हैं।

इन सब मछलियों में रोहित मछली उत्तम होती है। यह अत्यन्त पित्त को नहीं पैदा करती, हलकी होती है। कसैले रसवाली है, बल को बढ़ाती है।

पढ़ना मछली कफ को उपजाती है और भारी होती है।

छोटी मछलियों और अण्डों के गुण

छोटी मछलियाँ स्वादिष्ठ रसवाली होती हैं। त्रिदोषों का विनाश करती हैं। बहुत ही छोटी मछलियाँ पुरुषार्थ को जगाती और रुचि को उपजाती हैं। खाँसी और बादी को हरती हैं।

चिमचिम नामक मछलियाँ त्रिदोषों को पैदा करती हैं। परम बलदायक हैं। मछलियों का गर्भ (अण्डा) वीर्य को अत्यन्त पुष्ट करता है। चिकना, स्थिरकारी और भारी है। कफ और मेद को बढ़ाता है। बलदायक है। ग्लानि को पैदा करता है, और प्रमेहों का विनाश करता है।

शिशुमार मछली के नाम और मांस के गुण

शिशुमार मछली के शिशुमार, दतितुल्य, मकर और तिमिदंष्ट्रक, ये चार नाम हैं। यह भारी है। वीर्य को पोषती, कफ को पैदा करती और बादी को मिटाती है। धातुओं को बढ़ाती है। बल देती है और चिकनी होती है।

मकर (मगर) के मांस का गुण

मगर का मांस भारी है। कफ और वीर्य को बढ़ाता है। वातहारी है। धातु को बढ़ाता है। बादी का विनाशक और चिकना होता है।

कछुए के नाम और मांस के गुण

कछुए के कच्छप, गूढ़पात्, कूर्म, कमठ और दृढ़पृष्ठक, ये पाँच नाम हैं। इसका मांस बलदायक और चिकना है। बादी को जीतता है और पुरुषार्थ को बढ़ाता है।

मेढक के नाम और मांस के गुण

मेढक के मण्डूक, प्लवग, भेक, वर्षाभू, दर्दुर और हरि, ये छः नाम हैं। इसका मांस कफ को उपजाता है। अत्यन्त पित्तकारी नहीं है और बल को बढ़ाता है।

केंकड़े के नाम और मांस के गुण

केंकड़े के कर्कट, कुरुचिल्ल, कुलीर और षोडशाम्बिक, ये चार नाम हैं। इसका मांस धातुओं को बढ़ाता, वीर्य को पुष्ट करता और ठंढा होता है। प्रदररोग का विनाश करता है।

साँपों के नाम और मांस के गुण

साँप के सर्प, भुजङ्ग, भुजग, फणी, भोगी, भुजङ्गम, कुण्डली, कञ्चुकी, चक्री, पन्नग, पवनाशन, गूढ़पात्, उरग, नाग, जिह्मग, सरीसृप, चक्षुःश्रवा, दीर्घपृष्ठ, व्याल, आशीविष, अहि, दर्वीकर, विषधर, दन्दशूक, विलेशय, कुम्भीनस, पृदाकु, दंष्ट्री, काकोदरी और विषी, ये तीस नाम हैं।

डुण्डुभ[1] (डिण्डिभ), राजिल, अजगर[2], वाहस, शयु,

१—डुण्डुभ और राजिल, ये दो नाम दुमुहा साँप के हैं।

२—अजगर, वाहस और शयु, ये तीन नाम अजगर साँप के हैं।

जलसर्प[1], अलगर्द, तिलत्स्य[2] और गोनस, ये नव नाम डुण्डुभ आदि साँपों के हैं। इनका मांस चिकना होता है। आँखों के लिए हितकर, धातुवर्धक और भारी है। दोषीविष और क्रिमियों को हरता है। बुद्धि, अग्नि और बल को बढ़ाता है।

गोह के नाम और मांस के गुण

गोह के गोधा, घोरफटा, पञ्चनखरा और जनिप, ये चार नाम हैं। काले साँप से जो गोह में पैदा हुआ हो, उसे 'गौधेय' और 'गौधेर' कहते हैं। इसका मांस अधिक गुणवाला है। मन्द अग्नि को जगाता है। बल को बढ़ाता है। पुरुषार्थ को उपजाता है। पित्त और बादी का विनाशक है।

तत्कालहत जीवों के मांस का गुण

तत्काल मारे हुए, अच्छी अवस्थावाले मोटे जीवों का मांस जो प्राणी सेवन करता है, उसका शरीर बलिष्ठ हो जाता है। व्याधि, पानी तथा विष से मरे हुए जीवों का मांस त्याग दे।

वृद्ध व बाल आदि जीवों के मांस का गुण

बूढ़े जीवों का मांस दोषों को उपजाता है। बालजीवों का मांस बलदायक होता है। भारी है। गिरे गर्भवाले व गर्भवाले स्त्रीसंज्ञक जीवों का मांस भारी होता है। आप ही मरे जीवों का मांस बलहीन है। अतिसार को पैदा करता है। भारी होता है। विष, जल और रोगों से मरे हुए जीवों का मांस मृत्यु, त्रिदोष और रोगों को पैदा करता है।

पुरुष व स्त्रीसंज्ञक जीवों के मांस का गुण

पक्षियों में नर पक्षियों और चौपायों में मादा पशु

१—जलसर्प और अलगर्द, ये दो नाम पनिहा साँप के हैं।

का मांस श्रेष्ठ है। नर जीवों का पिछला आधा भाग हलका होता है तथा मादा जीवों का पहला आधा भाग हलका होता है। बड़े डीलवाले, समान जातियों में मोटे डीलवाले जीव अच्छे होते हैं। छोटे डीलवालों में मोटी देहवाला जीव अच्छा माना है। आलसी जीवों के मांस से इधर उधर बिचरनेवाले जीवों का मांस बहुत ही हलका होता है।

प्रायः सब प्राणियों के डील का मध्यभाग भारी होता है। पङ्खों के हिलाने-चलाने से पक्षियों का मध्यभाग समान होता है। पक्षियों का गला और सब अङ्ग भारी होते हैं। जो मृग और पक्षी पानी से दूर बसते हैं, वे अभिष्यन्दी नहीं हैं। जो इनसे विपरीत हैं, वे 'अभिष्यन्दी' होते हैं। पानी और अनूपदेश में उपजे हुए, बिचरनेवाले, भारी पदार्थों के खानेवाले जीवों का मांस अत्यन्त भारी होता है। धन्वदेश (बागड़) में उपजे हुए, घूमनेवाले और हलके भोजन करनेवाले जीवों का मांस हलका होता है। उनके जाँघ, कन्धा, पेट, माथा, हाथ, पाँव, कमर, पीठ, खाल, यकृत् और आँत, ये क्रम से उत्तरोत्तर भारी होते हैं।

तेरहवाँ वर्ग

विभिन्न वस्तुओं के नाम और गुण

वातादि में पानी का अनुपान

वात में चिकना और गरम अनुपान करना हितदायक होता है। कफ में रूखा और गरम अनुपान हितकर है। पित्त में चिकना अनुपान हितकारी है। स्नेहपान में ठण्ढा

जल हितदायक नहीं होता। भिलावें के स्नेह से प्राप्त मूर्च्छावालों के लिए ठंडा जल उत्तम होता है। शालि-चावल और मूँग आदि भक्ष्यों का जूस और मांस का रस भी अच्छा है।

माषादिभोजियों का अनुपान

उड़द आदि भक्ष्य पदार्थ खानेवालों के लिए दही का पानी, काँजी या दही का अनुपान हितदायक है। शोष (क्षयी) रोगवाले, विषपीड़ित और मन्दाग्निवालों के लिए मदिरा का अनुपान भला होता है।

व्रत, मार्ग, बोझा, स्त्रीप्रसंग से पीड़ित और क्षीण तथा रक्तपित्तवाले प्राणियों के लिए दूध का अनुपान करना अमृत के समान है। प्रकृति के अयोग्य, दोषों का उपजाने-वाला, अधिक और भारी जो अन्न खाया गया हो, वह पूर्वोक्त अनुपान से भली भाँति पचता है। आदि में पिया हुआ प्राणी को दुबला करता है, मध्य में सेवन किया मनुष्य की आयु बढ़ाता है और पीछे से पान किया प्राणी को पुष्ट करता है। इस प्रकार विचारकर अनुपानों को प्रयुक्त करे। दमा, खाँसी, बवासीर, क्रिमिरोग और घावों से व्यथित हुआ रोगी न पिये अथवा पीकर अधिक बोलना, सोना और पढ़ना आदि कर्म न करे।

प्रभात जलसेवन के गुण

प्रातःकाल कफ, वात और पित्तप्रकृतिवाला रोगी क्रम से एक, दो, तीन पल पानी पिये [कफप्रकृतिवाला (एक पल) चार तोला। वातवाला (दो पल) आठ तोला। पित्तवाला (तीन पल) बारह तोला] तो वह जल दृष्टि की ज्योति को निर्मल करता है। बुढ़ापा नहीं लाता।

अथवा जो मनुष्य नित्य प्रातःकाल आठ अंजली पानी पीता है, उसके शरीर में झुर्री पड़ना, बालों का सफ़ेद होना, स्वर का बिगड़ना, पीनस, दमा और खाँसी आदि रोग नहीं होते।

धान्यादिकों में अनुक्त गुणों का विचार

अन्नों, मांसों और समस्त सागों के जो गुण नहीं कहे गये हैं, बुद्धिमान् वैद्यों को उचित है कि स्वाद और पृथ्वी आदि पञ्चमहाभूतों के गुणों को विचारकर उनके गुण कह दे।

धान्यों में श्रेष्ठ धान्य

साठीचावल, जौ, गेहूँ, लाल शालिचावल, मूँग, अरहर और मसूर, ये अन्नों में उत्तम होते हैं। इनका सेवन करनेवाला पुरुष बुढ़ापे और व्याधियों से छूटकर, सुखी होकर, सौ वर्ष तक जीता है।

भोजन के बाद बैठने आदि के गुण

भोजन करके बैठनेवाले का पेट तुँदीला हो जाता है। भोजन करके उत्तान सोनेवाले के बल बढ़ता है। भोजन करके बाईं करवट लेटनेवालों की आयु बढ़ती है और भोजन करके दौड़नेवालों की मौत हो जाती है।

जागने, सोने और नींद के गुण

दिन में सोने और रात में जागने का जिन्हें अभ्यास है, उनको सोने या जागने में हानि नहीं होती। भोजन के बाद जो नींद आ जाय तो वह बादी को मिटाती है। कफ और पुष्टि को पैदा करती है। कफ, मेद और विष से पीड़ित जनों को रात्रि में जागना हितकारक होता है। प्यास, शूल, हिचकी, अजीर्ण और अतीसारवालों को दिन में सोना अच्छा है।

दँतवन के गुण

दन्तधावन करना मुख में सुन्दरता पैदा करता है।

प्रसेक, अरुचि, दुर्गन्ध, मल, पित्त और कफ का विनाश करता है।

मद से पीड़ित, दुबला, थका हुआ, दन्तरोगी, तालु-रोगी, ओष्ठरोगी, हिक्कारोगी, छर्दिरोगी, शिरपीड़ावाले, मूर्च्छारोगी और शोषरोगी दँतवन न करें।

मुख धोने और पाँव धोने के गुण

ठंढे पानी से मुँह धोना रक्तपित्त को मिटाता है। मुख की फुन्सियाँ, शोष, नीलिका और व्यङ्ग को दूर करता है। पाँवों का धोना दृष्टि को निर्मल करता है, वीर्य को पुष्ट करता है और परिश्रम को दूर करता है।

पैरों पर मालिश के गुण

पैरों पर मालिश करना सदा पुष्टिकारी, बलदायक, उत्साहवर्धक है। नींद और सुख को पैदा करता है। सुप्ति, परिश्रम और नेत्ररोग को दूर करता है।

कुल्ले के गुण और अवगुण

स्नेह से कुल्ला करना मुखशोष, दन्तरोग, स्वरघात, ओठ का कड़ापन और रक्तवात को हरता है। सुखदायक गरम किये हुए जल का कुल्ला कफ, अरुचि और मल का विनाशक है। विष, मूर्च्छा, मद से पीड़ित, शोषवाले, रक्तपित्तवाले, कोपवाले, दरिद्री और रूखे लोगों के लिए कुल्ला हितकारक नहीं होता।

अञ्जन के गुण और अवगुण

अञ्जन (सुरमा) का लगाना आँखों को निर्मल करता है, दृष्टि को बढ़ाता है, रोगों को हरता है। परन्तु रात्रि में जागे हुए, परिश्रमवाले, छर्दिवाले, भोजन किये हुए, ज्वर से

पीड़ित और शिर को धोये हुए मनुष्य कदापि अञ्जन न लगावें।

व्यायाम (कसरत करने) के गुण

व्यायाम (कसरत करना) कर्मों में सामर्थ्य और दृढ़ता को पैदा करता है, दोषों का विनाशक है, अग्नि को बढ़ाता है। बलवान् और चिकने भोजन करनेवालों के लिए सदैव गुणदायक होता है। कसरत करने से दृढ़ (मज़बूत) चित्तवालों को कदापि व्याधियाँ नहीं आतीं। विरुद्ध, जला हुआ भोजन शीघ्र ही पचता है। कसरती पुरुष के शरीर में झुर्रियाँ पड़ना, शिथिल होना और बुढ़ापा, ये भी शीघ्रता से नहीं आते हैं। वसन्त और शीतकाल में कसरत करना हितदायक है और अन्य समय में भी अपनी आधी सामर्थ्य से बल व अबल के अनुसार कसरत करना चाहिए।

व्यायाम का प्रतिषेध

देह को देखकर या कण्ठ, ग्रीवा और ललाट में पसीनेवाला, शीघ्र भोजन किया हुआ, स्त्री में रमा हुआ, खाँसीवाला, दमावाला, क्षयी और दुबले शरीरवाला, रक्तपित्तवाला और शोषरोगवाला कसरत न करे। बहुत कसरत करने से भी खाँसी, ज्वर व छर्दि आदि रोग पैदा हो जाते हैं।

देह दबाने के गुण

देह का दबाना परिश्रम और बादी को नष्ट करता है। निद्रा, पुष्टि और बल को बढ़ाता है। बाल, दाढ़ी और नखों को कटाना शरीर में सुन्दरता लाता है।

मालिश के गुण

तेल आदि से मालिश करना बादी का विनाश करता है।

धातुओं की समता, बल, सुख, नींद, वर्ण, कोमलता, दृष्टि और पुष्टि को पैदा करता है।

बाल ऐंछने और शिर की मालिश के गुण

. कंघा, कंघी से बालों का ऐंछना बालों को बढ़ाता है। धूल, जूँ और मल का विनाश करता है। शिर में तेल आदि की मालिश शिर को तृप्त, बालों को दृढ़ और आँखों को पुष्ट करता है। ऊँचा सुनना, बधिरता, मल, मन्याग्रह और हनुग्रह को नष्ट करता है।

कानों में तेल डालने के गुण

कानरोगवालों के कानों में तेल आदि का पूरण करना उत्तम है। जैसे वृक्षों की जड़ में पानी सींचने से पत्ते आदि हरेभरे हो जाते हैं, वैसे ही तेल से सींचे हुए प्राणी के धातु बढ़ते हैं। स्नेह में गोता लगाना बादी को विनाशता है, धातुओं में पुष्टता लाता है। तीन, चार, पाँच, छः, सात व आठ, इन मात्राओं से गोता लगाना रक्त, मांस, मेदा, मज्जा और वीर्य को क्रम से पुष्ट करता है।

वमन किये, नये ज्वरवाले, अजीर्णवाले, जुलाब लिये हुए और केवल आमरोगवाले मनुष्य निरूहबस्ति, तर्पण और मालिश आदि न करें।

उबटन लगाने के गुण

उबटन का लगवाना बादी को विनाशता है, शरीर में सुन्दरता लाता है, भ्राजक अग्नि को बढ़ाता है। अङ्गों की स्थिरता, खाल की स्वच्छता, कोमलता और सुख को पैदा करता है।

नहाने के गुण और अवगुण

स्नान करना बादी, थकावट, अलक्ष्मी (दारिद्र्य), पामा और खुजली को दूर करता है। मल को हरता, हृदय को हित करता और खाँसी को मिटाता है। अग्नि और सब इन्द्रियों को जगाता है। गरम जल से शिर को न धोना चाहिए; क्योंकि यह आँखों के लिए हितदायक नहीं होता। कफ और वात के कोप में औषध के लिए गरम जल को दे।

अतीसार, ज्वर, कर्णरोग, वातरोग, अफरा, अरोचक और अजीर्ण, इन रोगों से व्यथित और भोजन किये हुए प्राणियों को नहाना हानिकारक है।

चन्दनादि लगाने के गुण

चन्दन आदि का अनुलेप प्यास, मूर्च्छा, दुर्गन्ध, परिश्रम और बादी का विनाशक है। तेज (सौन्दर्य), प्रीति, पराक्रम (बल) और खाल के रंग को बढ़ाता है।

पुष्पमालादि धारण करने के गुण

पुष्पमाला, वस्त्र और रत्नों का धारण करना कान्ति को पैदा करता है। पाप, राक्षसदोष और ग्रहदोषों को हरता है। काम, पराक्रम और शोभा को बढ़ाता है।

जूता पहनने के गुण

जूतों का पहनना आँखों को हित पहुँचाता है। आयु को बढ़ाता है और पैरों के रोगों को नष्ट करता है।

पगड़ी धारण करने के गुण

पगड़ी का बाँधना शुचिदायक है, बालों को बढ़ाता है। धूल, वायु और धूप से बचाता है।

छाता धारण करने के गुण

छाता लगाने से बल बढ़ता है। नयनों के लिए लाभ पहुँचाता है। ठण्ढा है और धूप से बचाता है।

पंखा धारण करने के गुण

बालव्यजन (छोटा पङ्खा) बल को पैदा करता है। मक्खी आदि को दूर करता है। पंखे की हवा शोष, मूर्च्छा, पसीना और थकावट को हरती है।

लाठी धारण करने के गुण

लाठी को धारण करना उत्साह, स्थिरता, अविष्टम्भ और बल को बढ़ाता है। राक्षस, साँप आदि के भय को भगाता है और विशेषकर बुढ़ापे में सहारा देता है।

चलने, फिरने के गुण

चलने, फिरने और टहलने से अङ्ग मोटे नहीं होते (शरीर में बादी आदि की स्थूलता नहीं होती)। यह भोजन में रुचि उपजाता है। कफ, सुकुमारता और सुख देता है। इसलिए जहाँ तक देह में पीड़ा नहीं हो वहाँ तक चलना-फिरना आयु, बल, बुद्धि, अग्नि को बढ़ाता है और इन्द्रियों में तेजी पैदा करता है।

पलँग पर सोने के गुण

पलँग त्रिदोष को शान्त करता है। बिछौना वातकफ को हरता है। यही गुण सुखशय्या में भी होते हैं। यह विशेषकर निद्रा, पुष्टि और इन्द्रियों को बलवान् करती है।

धूप के अवगुण

धूप पसीना, मूर्च्छा, रक्तरोग, प्यास, दाह, थकावट और ग्लानि को पैदा करती है।

छाया के गुण

छाया पित्त, वर्ण के बिगड़ने और पसीने का विनाश करती है।

अग्नि-सेवन के गुण

अग्नि-सेवन से जाड़ा, वात, स्तम्भ, कफ और कम्प का नाश होता है। रक्तपित्त को दूषित करता है। यह आम को गलाता और पकाता है।

धुएँ के गुण

धुआँ पित्त और बादी पैदा करता है।

ओस के गुण

ओस कफ और बादी पैदा करती है।

चाँदनी के गुण

चाँदनी ठण्ढी है। बादी और स्तम्भ को उत्पन्न करती है। प्यास, पित्त और दाह को जीतती है।

अँधेरे के गुण

अँधेरा भय बढ़ाता है। मोह, कफ, पित्त और ग्लानि पैदा करता है।

वर्षा के गुण

वर्षा पुष्टिकारक है। ठण्ढी है। निद्रा, अभिष्यन्द और आलस्य को पैदा करती है।

तेज हवा के गुण

बड़ी हवा रूक्षता, विवर्णता और स्तम्भ को बढ़ाती है। दाह और पित्त को हरती है। पसीना, मूर्च्छा और प्यास का विनाश करती है। इससे विपरीत हवा विपरीत फल पैदा करती है। ग्रीष्म और शरत्काल में सुख से हवा का

सेवन करे। अन्य ऋतुओं में आयु और आरोग्य के लिए सदैव अधिक वायु से रहित स्थान में रहना चाहिए।

शीघ्र प्राणकारक छः वस्तुएँ

तत्काल का मांस, नवीन अन्न, बाला[1] (सोलह वर्ष की स्त्री), दूध, घृत और गरम पानी से नहाना, ये छः शीघ्र ही प्राणों को बल देते हैं।

शीघ्र प्राणहर छः वस्तुएँ

दुर्गन्धित मांस, बूढ़ी स्त्री, कन्या राशि का सूर्य, ताजा दही, प्रभात में स्त्रीरमण और निद्रा, ये छः शीघ्र ही प्राणों को हरते हैं।

अन्न से पिष्टादिकों में विशेष गुण

अन्न से अठगुना चून, चून से अठगुना दूध, दूध से अठगुना मांस, मांस से अठगुना घृत गुणकारी होता है। घृत से अठगुना तेल मालिश करने में गुणदायक है, परन्तु खाने में गुण नहीं करता।

लंघन में गुण और प्रतिषेध

लङ्घन करना कफ, मेद और आमज्वर को हरता है। हलका करता है। पाचन है। मन्द अग्नि को जगाता है। बादी को हरता है। शूल और अतीसार को जीतता है।

नया रोगी, बालक, गर्भिणी, बूढ़ा और दुबला मनुष्य लंघन न करे। शोक, काम, भय, क्रोध, मार्गगमन और परिश्रम से उपजे हुए रोग और पुराने ज्वर में लंघन कराना हानिकारक होता है।

१—बालेति गीयते नारी यावद्वर्षाणि षोडश।
ततस्तु युवती ज्ञेया द्वात्रिंशद्वत्सरावधि॥

दिशाओं के वायु का गुण

पूर्व का वायु भारी है। स्वादिष्ठ और चिकना है। पित्तरक्त को बढ़ाता है। विषसेवी, क्षतरोगी और घायल मनुष्यों को गुणकारी नहीं है। दाह पैदा करता है। बादी बढ़ाता है। थके, कफी और शोथवालों को हितदायक है।

दक्षिण का वायु स्वादिष्ठ है। रक्तपित्त को हरता है। हलका होता है। अविदाही, बलदायक और आँखों को हितदायक है। बादी को नहीं उपजाता।

पश्चिम का वायु रूखा, तीखा और चिकना है। बल का नाशक है। हृदय को हित है। शोषक है। मनुष्यों के कफ और मेद को हरता है और हलका होता है।

उत्तर का वायु ठंढा और चिकना होता है। दोषों को कुपित करता है। गीलापन लाता है। स्वस्थ जनों को बल देता है। स्वादिष्ठ और कोमल है। विशेषता से क्षयी, क्षीण और विष-पीड़ित जनों के लिए गुणकारी है।

रसों के गुण

मीठा रस ठंढा होता है। धातु, दूध और बल को बढ़ाता है। आँखों को हित है। वातपित्त का नाशक है। मोटाई, कफ और क्रिमियों को पैदा करता है। अत्यन्त सेवन करने से ज्वर, दमा, गलगण्ड और अर्बुद आदि रोगों को पैदा करता है।

खट्टा रस पाचक है। रुचि को उपजाता है। पित्तकफ को बढ़ाता है और हलका होता है। लेखन, गरम और बाहरी ठंढा है। ग्लानि पैदा करता है। बादी का विनाशक है,

अत्यन्त प्रयुक्त खट्टा रस रक्तपित्त आदि रोगों को बढ़ाता है।

कड़वा रस पित्तकारी है। कफ, क्रिमि, खुजली और विष का विनाशक है। छर्दि (वान्त), कफपित्त को दूर करता है। जुलाब, वात और रक्तपित्त का नाशक है। स्वेद और अग्निमान्द्य में अपकारक होता है।

गरम रस बादी को उपजाता है। दूध, मेद, स्थूलता को हरता और भारी होता है। अधिक प्रयुक्त किया हुआ गरम रस भ्रम, दुर्बलता, तालुशोष और बड़ी दाह पैदा करता है। तिक्त रस ठंढा है। प्यास, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त और कफ को जीतता है। बादी को उपजाता, अग्नि को बढ़ाता, दूध को शोधता, हलका और शोषक होता । बहुत प्रयुक्त किया हुआ तीखा रस शिरशूल, मन्यास्तम्भ और घुमनी पैदा करता है।

नमकीन रस शोधक, रोचक और पाचक है। कफ और पित्त को पैदा करता है। यही अत्यन्त प्रयुक्त किया हुआ पुरुषत्व और बादी को हरता है। देह में शिथिलता लाता है। आँखों को पकाता है। रक्तपित्त, कोष्ठ और आँखों में दाह पैदा करता है।

कसैला रस घावों को भरता, मल को बाँधता, शोषता और वात को कुपित करता है। अतीव प्रयुक्त किया हुआ कसैला रस ग्रहरोग, पेट का फूलना, हृद्रोग और आक्षेप आदि रोगों को पैदा करता है।

वमन के गुण

जो प्राणी वमन करके कोठा शुद्ध करता है, वह निर्मल दृष्टिवाला, दृढ़ दाँतों और बालोंवाला, चन्द्रमा के समान

मुखवाला, सफ़ेद बालों से रहित, कोयल के समान कण्ठवाला और मुख में कमल के समान गन्धवाला हो जाता है। कफ का मुँह में लिपटना, स्वरभेद, नींद, मुख की गंध, खाँसी, कफ का आना, ग्रहणी के दोष और विषजन्य उपद्रव नष्ट होते हैं। परन्तु बूढ़े व गर्भवती आदिकों को वमन (छर्दि) नहीं कराना चाहिए।

जुलाब लेने के गुण

भली भाँति लिया हुआ जुलाब बुद्धि को प्रसन्न करता है, इन्द्रियों को बल देता है, स्थिरता, बल और अग्नि को बढ़ाता है, और जल्दी बुढ़ापे को नहीं आने देता।

बस्तिकर्म के गुण

वात, पित्त, कफ और रक्तरोग में बस्तिकर्म उत्तम है। दो दोषों और सन्निपात में तथा सब काल में भी बस्तिकर्म ही सुखदायक होता है। जैसे जड़ में पानी सींचने से वृक्ष नाल, पत्ते और कोमल पत्तोंवाला होकर समय पर अधिक फूल, फलों को देता है, वैसे ही अनुवासनबस्तिकर्म से मनुष्य सुन्दर शरीरवाला हो जाता है।

फस्त लन के गुण

दूषित रक्त के निकलवा देने (फस्त ले लेने) से गिलटियाँ, सूजन और रक्तरोग से उपजे हुए रोग नहीं होते।

वर्षाऋतु में सेवनीय वस्तुएँ

वर्षाकाल में पृथ्वी पर हर समय गीलापन होने से, वात आदि दोषों के कुपित हो जाने से मनुष्यों को आमाकार दोष (क्लेद) बढ़ जाता है और जठराग्नि कम हो जाती है। उस समय वैद्य को चाहिए कि दीपन, पाचन, क्लेद को

हरनेवाला, मल को दूर करनेवाला, गरम, रूखा हो, कड़वा-कसैला न हो किंचित् चिकना हो, ऐसे रस का भोजन दे।

वर्षाऋतु में व्यायाम, स्त्रीसंग, धूप, दिन में सोना और ओस आदि का सेवन त्याग दे, यानी साँप, डाँस, मच्छर से रहित स्थान में शयन करे। वर्षा का पानी गरम कर ठंढा हो जाने पर शहद मिलाकर पीना चाहिए; क्योंकि उस समय का जल ताज़ा (कच्चा) होने से दाह आदि पैदा करता है।

शीतकाल में सेवनीय वस्तुएं

जाड़े में जहाँ वायु और वर्षा अधिक न हो, अँगीठी बनी हो, हवा न लगती हो उस स्थान में धनिक लोग कुछ मीठे आसव को पीकर शयन करें। और केसर, अगर के लेप से शरीर को सुशोभित करके सुन्दरी स्त्रियों को प्राप्त हों। व्यजन, जलक्रीड़ा करना, स्त्रीसङ्ग और दिन में शयन छोड़ दें।

श्रावण और भादों में मीठे, कसैले सुन्दर रस का सेवन करें। जाङ्गलदेशीय द्रव्यों को त्याग दें। दाख, दूध, मिसरी, ईख, शालिचावल, मीठे पदार्थ, गेहूँ और मूँग आदि का सेवन करें। कुवाँर और कातिक में निर्मल हो जाने से सब प्रकार के जल, अत्यन्त हलके कपड़े, माला और चंदन का सेवन करें। प्रदोष के समय चंद्रमा की किरणों को सेवन करें और कमलोंवाले तालाबों में गोता लगाकर स्नान करें। श्रावण, भादों में संचित हुए पित्त को जुलाब की विधि से बुद्धिमान् वैद्य निकाले या फस्त को खुलावे तथा घी और कड़वे रस को पिलावे। रात्रि में जागना, स्त्री से रमना, घाम,

जाड़ा, दही, खारी, खट्टा, गरम, विदाही, तीखा, कड़वा, इनका सेवन और दिन में सोना त्याग दे।

हेमन्त में सेवनीय वस्तुएँ

हेमन्त[1] (मार्ग-पौष) में सलोना, खट्टा, कड़वा, चर्फरा, खारी, उत्कट, पुष्टिकारक, घी, तेलसमेत गरम भोजन और तीखा पान, इनका सेवन करे। अगर का लेप व तेल की मालिश कर ठंढे पानी से नहावे। रेशमी कपड़े पहने हुए शय्या पर बिरौसी रखकर शयन करे। केसर-अगर का लेपकर सुगन्धि तथा मोटे कुचों व जाँघोंवाली स्त्री (युवती) के साथ सोने के बाद यथेष्ट बलकारक पदार्थों रसों का सेवन करे। अधिक जाड़ा पड़ने से यही विधि माघ व फागुन में भी करना चाहिए।

वसन्त में सेवनीय वस्तुएँ

वसन्तकाल (चैत्र-वैशाख) में तीखे, खारे, कसैले, रूखे, चर्फरे और गरम भोजन, शहद, मूँग व जिसमें जाङ्गलदेश के जौ विशेषता से हों वह मद्य, कसरत और कोयलों की कूकों से आकुलित वन, बगीचे, सुन्दर स्त्री, स्नान, उबटन, चन्दन और रमणीय मालाओं को श्रेष्ठ पुरुष सेवन करें।

हेमन्त में सञ्चित कफ के शमन का उपाय

हेमन्त (मार्ग-पौष) आदि मासों में संचित और सूर्य की किरणों से घिरा हुआ कफ कुपित होता है। इसलिए शिरोविरेचन (शिर का जुलाब), छर्दि, कुल्ला और धूप आदि या नागरमोथे का क्वाथ पिये तथा गरम पानी से उसको

१—हसन्तीं[1] च हसन्तीं[2] च हसन्तीं[3] वामलोचनाम्।
हेमन्ते ये न सेवन्ते ते नरा मन्दभागिनः॥
१ रुई, २ बिरौसी, ३ हँसती हुई स्त्री।

दूर करे। ठंढा, चिकना, भारी, पतला, खट्टा, मीठा रस और दिन में शयन करना त्याग दे।

ग्रीष्म में सेवनीय वस्तुएँ

ग्रीष्म (ज्येष्ठ-आषाढ़) में ठंढे घर, सरोवर, नदी, बावली, वन, नाला, हार, ठंढे ताड़पङ्खे की हवा और दिन में शयन करना, इनका सेवन करे। साफ़, हलके कपड़े पहने। ठंढे, मीठे घृतसमेत पतले अन्न, मन्थ व मिसरी आदि से संयुक्त दूध और सुन्दर पने का सेवन करे। साफ़ किये, सफ़ेदी से पोते हुए मकानों के तहख़ानों में सुन्दर फूलों से रचित शय्या पर शयन करे। सुखदायक वायु का सेवन करे। चन्दनादि को लगावे।

बुद्धिमान् वैद्यों (डाक्टरों व हकीमों) के वचनों में परायण होकर कसरत, शोषक द्रव्य व स्त्रीप्रसङ्ग में मन, घाम, गरम पदार्थ व अग्नि के उपजानेवाले पदार्थ, इन सब को त्याग दे।

चौदहवाँ वर्ग

त्रिफला आदि के नाम

त्रिफला–हड़, बहेड़ा और आँवला।

त्रिकुटा–सोंठ, मिरच और पीपल।

त्रिदोष–वात, पित्त और कफ को 'त्रिदोष' कहते हैं। इनके मिलने से त्रिदोषज होकर सन्निपात हो जाता है।

त्रिमद–मोथा, चीता और बायबिड़ङ्ग।

त्रिजातक–दालचीनी, इलायची और तेजपात।

त्रिमधु–घी, शहद और चीनी।

त्रियामा–हल्दी, नीलवृक्ष और कालानिशोत।

चतुरम्ल–अम्लवेत, विषाविल, बड़ी जम्बीरी और नींबू।

चतुरूषण–सोंठ, मिरच, पीपल और पीपलामूल।

चतुर्बीज–मेथी, हालों, कालाज़ीरा और अजवायन।

चातुर्भद्रक–सोंठ, अतीस, नागरमोथा और गिलोय।

चातुर्जातक–दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेसर।

पञ्चकर्म–वमन, विरेचन, नास, निरूह और अनुवासन।

पञ्चकोल–पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ।

पञ्चगणयोग–शालवन, पिठवन, भटकटैया, कटेहरी और गोखुरू को कहते हैं।

पञ्चगव्य–दही, दूध, घी, गोमूत्र और गोबर।

पञ्चतिक्त–नींब, गिलोय, अडूसा, परवल और कटेहरी को कहते हैं।

पञ्चतृण–कुश, कास, रामसर, काली ईख और धान को कहते हैं।

पञ्चनिम्ब–नींब की छाल, नींब के पत्ते, नींब के फूल, निंबौली और नींब की जड़।

पञ्चपल्लव–आम के पत्ते, जामुन के पत्ते, बिजौरा के पत्ते, कैथा के पत्ते और बेल के पत्ते।

पञ्चपित्त–सूकर, बकरा, भैंसा, मच्छ और मोर, ये पाँच जीवों के पित्त हैं।

पञ्चमूत्र–गाय, बकरी, भैंस, भेड़ और गधी का मूत्र।

बृहत्पञ्चमूल–श्योनाक, बेल, कम्भारी, पाटला और अरणी।

लघुपञ्चमूल—शालवन, पिठवन, छोटी कटेहरी, बड़ी कटेहरी और गोखुरू।

पञ्चरत्न[1]—सुवर्ण, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती, ये पाँच रत्न हैं।

पञ्चलवण—कचियानोन, सेंधानोन, समुद्रनोन, सोंचर और कालानोन।

पञ्चलौह—ताँबा, पीतल, राँगा, सीसा और लौह।

पञ्चशूरण—अत्यम्लपर्णी, काण्डवेल, मालाकन्द, सूरन और सफ़ेद सूरन।

पञ्चशैरीषक—शिरसवृक्ष के फूल, जड़, फल, पत्ते और छाल।

पञ्चसिद्धौषधि—तैलकन्द, सालिमामिश्री, बाराहीकन्द, रुदन्ती, सर्पाक्षी और सरहटी।

पञ्चसुगन्धक—लौंग, शीतलचीनी, अगर, जायफल, कपूर, महासुगन्धकपूर, शीतलचीनी, लौंग, सुपारी और जायफल।

पञ्चाङ्ग—एक वृक्ष की छाल, पत्ते, फूल, फल और जड़, इनको पञ्चाङ्ग कहते हैं।

पञ्चामृतयोग—गिलोय, गोखुरू, मुसली, गोरखमुण्डी और शतावरी यह मिला हुआ पञ्चामृतयोग है।

पञ्चाम्ल—बेर, अनार, विषाविल, अम्लवेत और बिजौरा नींबू का रस।

पञ्चउपविष—सेहुण्ड, आक, कनेर, कलिहारी और कुचिला।

१—माणिक्यं तरणेः सुजातममलं मुक्ताफलं शीतगोर्माहेयस्य च विद्रुमो निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतम्। देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शनेर्नीलं निर्मलमन्ययोश्च गदिते गोमेदवैदूर्यके ॥ १ ॥

वेसवार—सेंधानमक, धनिया, सोंठ, मिरच और पीपल के चूर्ण को वेसवार कहते हैं।

षट्रस—कड़वा, तेज़, कसैला, सलोना, खट्टा और मीठा, ये छः रस हैं।

संतर्पण—दाख, अनारदाना, छुहारा इनका चूर्ण शहद व घी में मिलावे तो यह संतर्पण है।

मन्थ—घी में सत्तू को मिलाकर ठण्ढे पानी में साने। पतला व गाढ़ा न होने पावे। इसे वैद्यों ने 'मन्थ' कहा है।

सप्तधातु—रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र, ये सात धातुएँ हैं।

स्नुहाष्टक—स्नुहा, ऊँगा, हलनी, धव, आक, तिलपुष्पी, पाढ़ा और कुडा।

क्षारत्रय—जवाखार, सुहागा और सज्जी।

षडूषण—सोंठ, पीपल, मिरच, पीपलामूल, चीता और चव्य।

अष्टमूत्र—बकरी, भेड़, गाय, भैंस, घोड़ी, हथिनी, गधी और ऊँटनी, इनके मूत्र को अष्टमूत्र कहते हैं।

अष्टक्षीर—बकरी, भेड़, गाय, नारी, घोड़ी, ऊँटनी, हथिनी और भैंस, इनका दूध अष्टक्षीर है।

अष्टवर्ग—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली, यह 'अष्टवर्ग' है।

अष्टलोहक—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, सीसक, कान्त-लोह, मुण्डलोह और तीक्ष्णलोह, ये अष्टलोह कहाते हैं।

अष्टाम्लवर्ग—जम्बीर, बीजपूर, मातुलुङ्ग, चुक्रक, अम्लोनियाँ, इमली, बेर और करौंदा को कहते हैं।

दो अर्थवाले नाम

अङ्गारवल्ली—भारङ्गी या घुँघुची को कहते हैं।

अग्नि—चीता या भिलावाँ।

अग्निमुखी—भिलावाँ या कलिहारी।

अग्निशिख—केसर या कुसुम।

अजशृङ्गी—मेढासिंगी या काकड़ासिंगी।

अञ्जन—कालासुरमा या सफ़ेद सुरमा।

अपराजिता—कोयल या शालपर्णी।

अमोघा—बायबिड़ङ्ग या पाढ़र।

अमृणाल—खस या लामज्जक।

अरुणा—मंजीठ और अतीस।

अश्मनाक—खट्टी लोनियाँ और कोविदार।

आस्फोता—कोयल और शरवन।

उग्रगन्धा—बच और अजवायन।

उदुम्बर—गूलर और ताँबाधातु।

ऐन्द्री—इन्द्रायन और इन्द्रवारुणी।

कटम्भरा—कुटकी और श्योनाक।

कणा—पीपल और जीरक।

कठिल्लक—करेला और लालपुनर्नवा।

कर्कश—कबीला और कसौंदी।

कुटन्नट—टेंटू और केवटीमोथा।

कुनटी—धनिया या मनशिल।

कुण्डली—गिलोय और कोविदार।

कुलक–परवल और कुचिला।
कोशातकी–तोरैयाँ और भिमनीलता को कहते हैं।
कृमिघ्न–बायबिड़ङ्ग और हल्दी।
गोलोमी–सफ़ेद दूब और बच।
गण्डीर–गण्डारीसाग और मंजीठ।
गन्धफली–प्रियंगु और चम्पे की कली।
गन्धारी–धमासा और गन्धपलाशी।
घोंटा–सुपारी और बेर।
चर्मकषा–सातला और मांसरोहिणी।
चित्रा–इन्द्रायन या बड़ीदन्ती।
तालपर्णी–मुसली या मुरागन्धद्रव्य।
तुण्डकेरी–कपास व कुँदरू।
तेजन–सरपत या बाँस।
तेजनी–तेजवल्कल या मूर्वा।
त्रिपुरा–निशोत और छोटी इलायची।
दीप्यक–अजवायन या अजमोद।
दीर्घमूल–जवासा या शालपर्णी।
देवी–मूर्वा या स्पृक्कौषधि।
दन्तशठ–जम्बीरी या कैथा।
दन्तशठा–इमली या चूका।
धान्य–धनिया या शाली व साठी चावल आदि।
धारा–गिलोय या क्षीरकाकोली।
नन्दीवृक्ष–बेलियापीपर या तूनी।
पद्मा–कमलिनी या भारङ्गी।
पय–दूध या जल।

परिव्याध—कनेर या जलवेत को कहते हैं।

पारावतपदी—मालकांगनी या काकजङ्घा।

पिच्छिला—सेमर व शीशमवृक्ष।

पीलुपर्णी—मूर्वा या कुँदरू।

पुष्पफल—कैथा या कुम्हड़ा।

प्रियंगु—खिन्नी या काकुनि।

भृङ्ग—भाँगरा या तज।

बालपत्र—कत्था या जवासा।

बाह्लिक—केसर या हींग।

मधूलिका—मूर्वा या जलमुलहठी।

मरुबक—मरुआ या मैनफल।

माष[1]—उड़द या एक माशा।

मोचा—केला या सेमर।

यवफल—इन्द्रयव या बाँस।

राजादन—खिन्नी या चिरौंजी।

रुचक—काला नमक या बिजौरा नींबू।

रुहा—दूब या मांसरोहिणी।

रोचन—कबीला या गोरोचन।

लोणिका—नोनियाँ का साग या चूके का साग।

वसुक—लाल आक या खारी नमक।

१—मागध व सुश्रुत के मत से, माष=पाँच रत्ती का माशा होता है।

चरक और कालिङ्ग के मत से, माष=पाँच, छः, सात व आठ रत्ती का माशा माना है।

वैद्यों के मत से, माष=दस रत्ती का माशा कहा है।

ज्योतिष के मत से, माष=बारह रत्ती का माशा कहा है।

वारि—जल या नेत्रबाला।
वितुन्नक—धनिया या नीलाथोथा।
विश्वा—सोंठ या अतीस।
ब्राह्मणी—भारङ्गी या स्पृक्कौषधि।
शकुलादनी—कुटकी या जलपीपल।
शटी—कचूर या गन्धपलाशी।
शतपुष्पा—सौंफ़ या सोआ।
शारदी—सारिवा या जलपीपल।
शीतशिव—सेंधानमक या सौंफ़।
श्यामा—सारिवा या प्रियंगु।
क्षार—सर्ज्जाखार या जवाखार।
समंगा—मंजीठा या लजालू।
सहस्रवीर्या—नीलीदूब या महाशतावरी।
सिंही—कटेहली या अडूसा।
सेव्य—खस या लामज्जक।
स्वादुकण्टक—गोखुरू या विकङ्कत।
स्वादुगन्धा—बिदारीकन्द या लाल सहँजना।
स्वादुफला—बेर या दाख।
हट्टविलासिनी—गन्धद्रव्य या हल्दी।
हयगन्धा—अजमोद या असगन्ध।
हयप्रिया—असगन्ध या खजूर।
हरिणी—मँजीठ या पीली जुही।
हरिद्राद्वय—हल्दी या दारुहल्दी।
हरिमन्थज—चना या काली मूँग।
हिंगुनिर्यास—नीम का पेड़ या हींग का रस।

हिज्जल–ताल के किनारे का वृक्ष या समुद्रफल।

हिम–चन्दनवृक्ष या कपूर।

हेमपुष्प–अशोकवृक्ष या गुड़हल।

हेमसार–तूतिया या सोने को वैद्यों ने कहा है।

तीन तीर्थवाले नाम

अनन्ता–धमासा, नीली दूब या कलिहारी।

अमृता–गिलोय, हड़ या आँवला।

अरिष्ट–नींब, लहसुन या मद्य (शराब) का भेद।

अव्यथा–बड़ी हड़, मुण्डी या कमलिनी।

अक्षीव–सहँजना, बकायन या समुद्र लवण।

अम्बष्ठा–पाढ़ा, चूका या मोइया।

इन्द्रद्रु–कोह, देवदारु या कुटज।

इक्षुगन्धा–काँसा, तालमखाना या गोखुरू।

ऋष्यप्रोक्ता–अतिबला, महाशतावरी या केवाँच।

कपीतन–अम्बाड़ा, सिरसवृक्ष या गर्दभांड।

कारवी–कलौंजी, शतावरी या अजमोद।

कालमेषी–मँजीठ, बावची या कालानिशोत।

कालस्कन्ध–श्यामतमाल, तेंदू या काला खैर।

कालानुसार्य–पीला चन्दन, तगर या छड़ीला।

काश्मीर–केसर, पुष्करमूल, कम्भारी।

काश्मीरी–गुन्द्र, पटेरा या सरपता।

कृष्णवृन्ता–पाढ़र, कम्भारी या माषपर्णी।

कृष्णा–पीपल, कलौंजी या नील।

क्रमुक–सुपारी, शहतूत या पठानीलोध।

क्षीरिणी—दुद्धी, क्षीरकाकोली या सफ़ेद सारिवा।
क्षुरक—तालमखाना, गोखुरू या तिलपुष्प।
गुन्द्रा—प्रियंगु, भद्रमोथा या नागरमोथा।
चाम्पेय—चम्पा, नागकेसर या कमलकेसर।
चुक्र—चूका, अमलवेत या तिन्तिडीक।
जीवन्ती—गिलोय, जीवन्ति का साग या बाँदा।
ताम्रपुष्पी—धाय के फूल, पाढ़र और निशोत।
दुःस्पर्श—जवासा, केवाँच या कटेहली।
धामार्गव—लालओंगा, गलकातोरई या तोरई।
नादेयी—अरणी, लालजामुन या जलवेत।
पलाश—ढाक, गन्धपलाशी या पत्रज।
पलंकषा—गूगल, गोखुरू या लाख।
पाक्य—विड़, कालानोन या जवाखार।
पीतदारु—हल्दी, देवदारु या सरल।
पारिभद्र—नींब, फरहद या देवदारु।
पृथ्वीका—कलौंजी, बड़ी इलायची या हिंगुपत्री।
प्रियक—प्रियंगु, कदम्ब या विजयसार।
बदरा—हुरहुर, असगन्ध या बाराहीकन्द।
भूतीक—चिरायता, कत्तृण (रोहिषशोधिया) या भूतिक।
भृङ्ग—भाँगरा, तज या भौंरा।
मदन—मैनफल. धतूरा या मोम।
मधु—शहद, पुष्परस या मद्य।
मधुपर्णी—गिलोय, कम्भारी या नील।
मयूर—चिरचिरा, अजमोद या नीलाथोथा।
मर्कटी—केवाँच, चिरचिरा या कञ्जा।

महौषध—सोंठ, लहसुन या सिंगिया विष।
मण्डूकपर्णी—श्योनाक, मँजीठ या ब्रह्ममाण्डूकी।
रक्तसार—लालचन्दन, पतङ्ग या खैर।
रसा—रास्ना, शल्लकी या पाठा।
रास्ना—नाकुली, नील या सम्हालू।
लता—सारिवा, प्रियंगु या मालकाँगनी।
लक्ष्मी—ऋद्धि, वृद्धि या छोंकर।
लोह—लोह, काँसा या अगर।
वरदा—हुरहुर, असगन्ध या बाराहीकन्द।
वसिर—साल ओंगा, गजपीपल या समुद्रनोन।
विशल्या—कलिहारी, गिलोय या छोटी दन्ती।
वीर—कोह, वीरणतृण या काकोली।
वीरतरु—कुम्हड़ा, वीरणतृण या शरपत।
वञ्जुल—अशोक, बेत या तिनिश।
शतपर्वा—बाँस, दूब या बच।
शिला—मनशिल, शिलाजीत या गेरू।
श्रीपर्णी—कम्भारी, अरणीवृक्ष या कायफर।
श्रेयसी—हड़, रास्ना या गजपीपल।
षड्ग्रन्था—बच, गन्धपलाशी या बड़ा कञ्जा।
सदापुष्प—सफ़ेद आक, लाल आक या कुन्दपुष्पवृक्ष।
सदाफल—नारिकेल, गूलर या बेल।
समंगा—मँजीठ, लज्जावन्ती, खरेहटी।
समत्रय—बराबर मिले हुए हड़, सोंठ या गुड़।
समुद्रान्ता—धमासा, कपास, स्पृक्का (असपरक) औषध।
सरस्वती—मालकाँगनी, ब्राह्मीघास या सोमलता।

सहचर–पीली कटसरैया, नीली कटसरैया या सफ़ेद कटसरैया।

सहस्रवेधी–अम्लवेत, कस्तूरी या हींग।

सहा–मुद्गपर्णी, ककही या गुलाब।

सुरभी–शल्लकी, मुरागन्धद्रव्य या एलवालुक।

सोमवल्क–कायफर, सफ़ेद खैर या घृतकञ्ज।

सोमवल्ली–बावची, गिलोय या ब्राह्मी।

सौगन्धिक–लालकमल, कत्तृण या गन्धक।

सौवीर–सफ़ेद सुरमा, बेर या काँजी का भेद।

हैमवती–हड़, सफ़ेद बच या पीले दूध की कटेहरी।

कई अर्थों के नाम

अक्ष–सोंचर नमक, बहेड़ा, एक कर्ष तौल, पद्माक्ष, रुद्राक्ष, छकड़ा, इन्द्रिय या पाँसे को कहते हैं।

अग्नि–चीतावृक्ष, लाल चीतावृक्ष, भिलावें का वृक्ष, नींबू का वृक्ष, सोना और पित्त।

अम्लवर्ग–अम्ललोना, बड़हर, अम्लवेत, जम्बीरी नींबू, बिजौरा नींबू, नारंगी, अनार, कैथा, अम्ल. विषाबिलमोइया, करौंदा या नींबू।

इक्षुगन्धा–गोखुरू, तालमखाना, कासतृण और सफ़ेद विदारीकन्द।

उग्रगन्धा–अजमोद, बच, नकछिकनी या अजवायन।

उच्चटा–घुँघुची, भुइँआमला, नागरमोथा, लहसुन, निर्विष घास।

कटुक–परवल, एक प्रकार का सुगन्धित तृण, कुडावृक्ष, आकवृक्ष या राई।

कटुका—कुटकी, छोटा चञ्चुवृक्ष, पान, कड़वीतोंबी, मुष्कदाना या लता कस्तूरी।

कण्टफल—छोटी गोखुरू, कटहर, धतूरा, लताकरञ्ज, तेजबल या अरण्डवृक्ष।

करक—अनारवृक्ष, करञ्जुआ, कञ्जा, ढाक, लाल कचनार, नारियलों की माला या करीलवृक्ष।

कर्कटी—तेजफल, घघरबेल, काकड़ासिंगी, बड़ी ककड़ी, घोटिकावृक्ष या ककड़ी।

काक—मकोय, काकोली, लाल घुँघुची, काकजंघा, काकनासा, कठूबर या कौआ।

कामी—ऋषभौषधि, चकवा, कबूतर, गौरैया पक्षी या सारस।

काकोल्यादिगण—काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, गिलोय, मुँगवन, मषवन, पद्माख, वंशलोचन, काकड़ासिंगी, पुण्डरिया, जीवन्ती, कौआठोढ़ी, मुलहठी और दाख, इसको वैद्यों ने काकोल्यादिगण कहा है।

काली—काली कपास, गोपीचन्दन, निशोत, कलिहारी भेद या वृश्चिकाली।

कालीयक—कलम्बक, पीला चन्दन, काला अगर, काला चन्दन, दारुहल्दी।

कुण्डली—जलेबीमिठाई, गिलोय, कचनार, केवाँच या सर्पिणीवृक्ष।

कुमारी—नेवारी, घीकुवार, कोयललता, बाँझखखसा, बाँझ-
ककोड़ा, बड़ी इलायची, मल्लिकाभेद वा गुलाब।

कृष्ण—काली मिरच, लोहा, काला अगर, काला नोन,
काला ज़ीरा या सुरमा।

कृष्णा—नीलवृक्ष, पीपल, बकुची, काला ज़ीरा, पद्मावती,
दाख, नीली, सोंठ, कम्भारी, कुटकी, श्यामलता,
कालीसर राई।

केशी—भूतकेशवृक्ष, अजलोमावृक्ष, नीलवृक्ष या मो-
इयावृक्ष।

केसर—नागकेसर, मौलसिरीवृक्ष, ज़ीरा, पुन्नागवृक्ष या
फूलकी केसर।

कैटर्य—कायफर, नींब, बकायन या मैनफल।

खरपत्र—छोटे पत्ते की तुलसी, शाकवृक्ष, एक प्रकार का
शर, मरुआवृक्ष, सगुनावृक्ष या हरे कुश।

गन्धाष्टक—चन्दन, अगर, कपूर, भटेउर, केसर, गोलो-
चन, बालछड़ और शिलारस।

गर्दभी—कोयललता, विष्णुक्रान्ता, सफ़ेद कटेहरी, कटभी,
मालकाँगनी या गर्दभिकारोग।

गिरिजा—चकोतरा, पाषाणभेद, त्रायमाणा, आकर्षकारी,
मल्लिका, पहाड़ी केला या सफ़ेद बोना।

गौरी—दोनों हल्दी, गोरोचन, फूलप्रियंगु, मँजीठ, सफ़ेद
दूब, मल्लिका, तुलसी, पीला केला, आकाशमांसी,
जटामांसी।

चण्डा—शङ्खाहूली, पञ्चगुरिया, केवाँच, मूषापर्णी, सफ़ेद
दूब, चोरनामक गन्धद्रव्य या भटेउर।

चन्द्रिका—बड़ी इलायची, कनफोड़बिल, चमेली, सफ़ेद कटेहरी, मेथी व सफ़ेद इलायची।

जटिला—जटामांसी, बालछड़, पीपल, उच्चटाघास, दवना-वृक्ष या बच।

जया—भाँग, छोंकराभेद, हरी दूब, हड़, अँगेथु, गणियारी-वृक्ष या जैतवृक्ष।

जाति—आमला, जायफल, मालती, कबीला या चमेली-वृक्ष।

जीवनीयगण—जीवक, ऋषभक, मदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली, मुगवन, मषवन, जीवन्ती या मुलहठी।

तपन--भिलावें का पेड़, आक का वृक्ष, ताँबा, छोटी अरणी या आतशीशीशा।

ताली--ताड़ी, भुइँआमला, गोपीचन्दन, मुसली, ताम्र-बल्ली, खजूर या तालीसपत्र।

तीव्रा--कुटकी, गांडरदूब, राई, बड़ी मालकाँगनी, तरदी-वृक्ष या तुलसी।

तीक्ष्ण--विष, लोहा, समुद्रनोन, मोखावृक्ष या चव्य।

तीक्ष्णगन्धा--सफ़ेद बच, कन्थारीवृक्ष, राई, बच, जीवन्ती या छोटी इलायची।

तीक्ष्णा--बच, सर्पकंकालीवृक्ष, केवाँच, बड़ी मालकाँगनी या अत्यम्लपर्णीलता।

त्रिक--पृष्ठ, वंशाधार, त्रिफला, त्रिकटु, मोथा, चीता या बायबिड़ङ्ग।

दलाढक--आप ही उत्पन्न हुआ तिलं का पेड़, जलकुम्भी,

गेरू, झाग, नागकेसर, कुन्दपुष्प, हस्तिकर्ण, पलाशवृक्ष या सिरसवृक्ष।

दशमूत्र—हाथी, भैंस, ऊँट, गाय, बकरा, मेढ़ा, घोड़ा, गधा, मनुष्य और स्त्री, ये दशमूत्र कहलाते हैं।

दशमूल—बेल, श्योनाक, कम्भारी, पाढ़ल, अरणी, सरिवन, पिठवन, छोटीकटेहरी, बड़ीकटेहरी और गोखुरू।

दिव्या—आमला, बाँझखखसा, महामेदा, ब्राह्मी, बड़ा ज़ीरा, सफ़ेद दूब, हड़, कपूरकचरी या शतावरी।

दीर्घपत्रा—पिठवनभेद, छोटी जामुन, वनकचूर, केतकी, डोडी क्षुप या शालवन।

देवी—चुरनहार, पुरी, अलसी, हुरहुर, पञ्चगुरिया, बाँझ-खखसा, बनककोड़ा, सरिवन, शालवन, बड़ा गूमा, पाठा, नागरमोथा, सैंधिनी, गोपीचन्दन, हड़ या गेरू।

धातु—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, वात, पित्त, कफ या सोना, चाँदी आदि।

नवरत्न—मोती, माणिक, वैदूर्य, गोमेद, हीरा, विद्रुम, पद्म-राग, मरकत और नीलकान्त, ये नवरत्न कहाते हैं।

नाकुली—सेमर का मुसरा, रास्न, चव्य, यवतिक्त, सफ़ेद कटेहरी, नकुलकन्द या नाई।

नाग—साँप, हाथी, मेढ़ा, शीशा, नागकेसर, नागरबेल पान या नागदन्ती।

नादेयी—जलबेंत, छोटी जामुन, जयन्तीवृक्ष, नारंगी, गुड़-हर, अरणी या एक भाँति की जामुन।

१—धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत्।
तस्माद्धनमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः॥

नील–नील का पेड़, कचियानोन, तालीसपत्र, विष, सफ़ेद सुरमा या तूतिया।

नृपप्रिय–बड़े बाँस, लाल प्याज, रामशर, शालिधान या आम।

नेपाली–नेवारी, मनशिल, निर्गुण्डीभेद या नीलवृक्ष।

न्यग्रोधादिगण–बड़, गूलर, पीपल, पाकर, महुआ, पारस पीपल, अर्जुनवृक्ष, कोषाम्र, द्विजामुन, चिरौंजी, मधूक, मांसरोहिणी, बेंत, कदमबेर, तेंदू शालई, लोध, साबरलोध, भिलावाँ, ढाक और बेलियापीपल।

पयस्या–दूधी, क्षीरकाकोली, काञ्चनक्षीरी, क्षीरवृक्ष, अर्कपुष्पी या दधिकूर्चिका।

पयस्विनी–काकोली, क्षीरकाकोली, दूधफेनी, दूधविदारी या जीवन्ती।

पलंकषा–गोखुरू, रासन, गूगल, ढाक, गोरखमुण्डी, लाख, छोटी गोखुरू या बड़ी गोरखमुण्डी।

पवित्र–कुश, ताँबा, शहद और घी को कहते हैं।

पार्वती–गोपीचन्दन, छोटा पाषाणभेद, धाय के फूल, सिंहली, पीपल या अलसी।

पावक–चीता, भिलावाँ, बायबिड़ङ्ग, लाल चीता, अरणी या कुसुमवृक्ष।

पिच्छिला–पोई का साग, शीशमवृक्ष, सेमर, तालमखाना, वृश्चिकाली, शूलीघास, अगर, अलसी या अरुई।

पिण्याक–तिल की खली, सरसों की खली, हींग, शिलाजीत, शिलारस या केसर।

पीतक—हरताल, केसर, अगर, पद्माख, सोनामाखी, तून, विजयसार, श्योनाक, हलदुआवृक्ष, किंकिरात, पीपल या पीला चन्दन।

पीता—हल्दी, दारुहल्दी, बड़ी मालकाँगनी, भूरे रंग का शीशमवृक्ष, फूलप्रियंगु, गोलोचन, अतीस या पीला केला।

प्रियक—कदम्बवृक्ष, विजयसार, फूलप्रियंगु, केसर या धारा।

फल—जायफल, हड़, बहेड़ा, आमला, शीतलचीनी, मैनफल, फल और अण्डकोष।

बरा—हड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, मेदा, ब्राह्मी, बायबिड़ङ्ग, पाठा या हल्दी।

बहुफला—बृहतीभेद, मषवन, मकोय, खीरा, एक प्रकार की ककड़ी, छोटा करेला या भुईंआमला।

बाला—नारियल, हल्दी, मोतियापुष्पवृक्ष, घीकुवार, सुगंधबाला, ककड़ी, मोइया या नीली कटसरैया।

ब्राह्मी—ब्राह्मी, भारंगी, सोमलता, बड़ी मालकांगनी, मछेछी, बाराहीकन्द और हुरहुरसाग।

भद्रदार्वादिक—देवदारु, कूट, हल्दी, बरना, मेढ़ासिंगी, खरैंहटी, गुलशकरी, नीली कटसरैया, केवाँच, सालई, पाढ़ा, कुम्हड़ा, पियाबाँसा, अरणी, गिलोय, एरण्ड, पाषाणभेद, सफ़ेद आक, आक, शतावरी, विषखपरा, गदहपुरैना, बथुआ, गजपीपर, कचनार, भारंगी, कपास, वृश्चिकाली, शालिञ्चाशाक, बेर, जव, कुल्थी और छोटाबेर यह भद्रदार्वादिगण कहाता है।

भद्रा—रासन, पीपल, पसरन, कायफल, कोयल, गौरीसर, जीवन्ती, नील का पेड़, हल्दी, सफ़ेद दूब, खंभारी, कुम्भेर, श्यामलता, कठूंबर, खरैंहटी, छौंकरवृक्ष, बच और दन्तीवृक्ष।

मङ्गल्य—त्रायमाणा, पीपल का वृक्ष, बेल का वृक्ष, मसूरान्न, जीवक, नारियल का पेड़, कैथा का पेड़ और रीठा तथा कञ्ज।

मङ्गल्या—मल्लिका के फूलों की सी सुगन्धवाला, अगर, छौंकरवृक्ष, अधःपुष्पी, सौंफ़, सफ़ेद बच, गोलोचन, फूलप्रियंगु, शङ्खाहूली, मषवन, जीवन्ती (डोडी का साग) ऋद्ध्योषधि, बच, हल्दी, चीढ़ और दूब।

मधुर—मीठा रस, जीवकौषधि, लाल सहँजना, राजाम्र, लाल ईख, गुड़ और शालि धान।

मधुरा—सौंफ़, मधुकाकड़ी, चकोतरा, मेदौषधि, मुलहठी, काकोली, शतावरी, बड़ी जीवन्ती, पालक का साग, सोवा और भूरे रंग की किशमिश को कहते हैं।

महौषधी—सफ़ेद कटेहरी, ब्राह्मी, कुटकी, अतीस और हुरहुर।

यक्षकर्दम—केसर, अगर, कस्तूरी, कपूर और सफ़ेद चन्दन, इन द्रव्यों से बनाया हुआ एक प्रकार का सुगंधित चूर्ण।[1]

रक्त—लोहू, केसर, ताँबा, पानी, आमला, पद्माख, सिन्दूर और शिंगरफ़।

१—"कर्पूरागुरुकस्तूरीकङ्कोलघुसृणानि च।
एकीकृतमिदं सर्वं यक्षकर्दम इष्यते॥" (इति व्याडिः)
"कुंकुमागुरुकस्तूरीकर्पूरं चन्दनं तथा।
महासुगन्धिरित्युक्तो नामतो यक्षकर्दमः॥" (इति धन्वन्तरिः)

रक्तपुष्प--कनेरवृक्ष, रुहेड़ावृक्ष, लाल कचनार, अनारवृक्ष, अगस्तिवृक्ष, दुपहरिया या पुन्नागवृक्ष।

रक्तवर्ग--अनार, ढाक, लाख, हल्दी, दारुहल्दी, दुपहरिया, कुसुम और मँजीठ।

रञ्जनी--कबीला, नीलवृक्ष, मँजीठ, निर्गुण्डीभेद, हल्दी, पपरी और पद्मावती।

रस--मांसरस, रस, ईख का रस, पारा, मधुरादि छः रस, बालक का एक रोग, विष या जल को कहते हैं।

रसाल--ईख, आम, कटहर, कुंदरतृण, गेहूँयासागरीय गन्ने।

रामा--हींग, शिंगरफ़, घीकुवार, सफ़ेद कटेहरी, आरामशीतला, अशोकवृक्ष, गोलोचन, नेत्रबाला या गेरू।

रोचनी--आमला, गोलोचन, मनशिल, सफ़ेद निशोत, कबीला, चूकासाग या पोदीना।

रोहिणी--कुटकी, कायफर, वराहक्रान्ता, काश्मरी, हड़, मँजीठ, मांसरोहिणी या गलरोग को कहते हैं।

वातारि--एरण्डवृक्ष, शतावरी, पुत्रदा अजवायन, भारंगी, सेहुँड़वृक्ष, बायबिड़ङ्ग, जिमींक़न्द, भिलावाँ या जतुकालता।

वासन्ती--माधवीलता, जुहीपुष्प, पाढ़, नेवारी, गणिकारी और विशेष पुष्पलता को कहते हैं।

विजया--छोटी आरसी, जयन्तीवृक्ष, जैत, बच, हड़, निर्गुण्डीभेद, मँजीठ, छोंकर, भाँग और बङ्गभाषा में सिद्धि को भी कहते हैं।

वीरा--कपूर, कचरी, एकाङ्गी, क्षीरकाकोली, भुइँआँवला, एलुवा, केला, विदारीकन्द, दूधिया, कठूँबर, दूध-

...ा, काकोली, शागवर, घीकुवार, ब्राह्मी, अतीस, मद्य, शीशम का वृक्ष, कम्भारी या पिठवन।

...--चार तोले सीप, शङ्ख, बवासीर, एक भाँति का नेत्र-रोग और नखीनाम गन्धद्रव्य को कहते हैं।

श्यामा--सारिवा, फूलप्रियंगु, बावची, श्यामपनिलर, नील-वृक्ष, गूगल, सोमलता, भद्रमोथा, मोथीतृण, गिलोय, बाँदा, कस्तूरी, बड़पत्री, पीपल, हल्दी, नीली दूब, तुलसी, कमलगट्टा, बिधारा, कालीसारिवा या लाही।

श्वेता--कौड़ी, कठपाढ़र, शङ्खिनी, अतीस, कोयल, सफ़ेद कटेहरी, सफ़ेद दूब, पाषाणभेद, वंशलोचन, सोंठ, सफ़ेदकोयल, शिलावाक, फिटकरी, शक्कर या केनावृक्ष।

सर्वौषधि--कूट, जटामांसी, हल्दी, बच, भूरिछरीला, चन्दन, कपूरकचरी, लालचन्दन और मोथा को कहते हैं।

सिता--चीनी, मल्लिकापुष्पवृक्ष, सफ़ेद कटेहरी, बावची, विदारीकन्द, सफ़ेद दूब, मदिरा, त्रायमाणा, अर्क-पुष्पी या अपराजिता।

सुगन्धा--रासना, कचूर, बाँझ खखसा, रुद्रजटा, सौंफ़, नकुलकन्द, नेवारी, पीली जुही, अस्परक, गङ्गा-पत्री, शालईवृक्ष, माधवी, अनन्ता, चकोतरा नींबू या तुलसी।

सुफल--कनेर, अमलतास, अनार, बेर, मूँग, कैथा और जम्बीरी नींबू को कहते हैं।

सुभगा--कैवर्तिका, सरिवन, हल्दी, हरी दूब, तुलसी, फूल-प्रियंगु, कस्तूरी, पीला केला या मोदयन्ती।

सुरभि--चम्पा, जायफर, छोंकर, सुगन्धतृण, मौलसिरी,